कर्नाटक सरकार

समाज विज्ञान

हिंदी माध्यम

SOCIAL SCIENCE
Hindi Medium

(परिष्कृत)

6

छटी कक्षा

भाग - II

©KTBS
Not to be republished

कर्नाटक पाठ्यपुस्तक संघ (रजि.)
100 फूट रिंग रोड, बनशंकरी 3 रा टप्पा
बेंगलूरु - 560 085.

अनुक्रमणिका

पाठ संख्या.	इतिहास	पृष्ठ संख्या
01	हमारा कर्नाटक (आगे का भाग)	1
02	दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश	37
03	कोडगु, कित्तूरू, तुलुनाडु तथा हैदराबाद-कर्नाटक	71
04	धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन	88
05	भारत के इतिहास में रजपूत	94
	नागरिकशास्त्र	
06	प्रभुत्व	101
07	केंद्र सरकार, राज्य सरकार, न्यायांग	108
08	मानावाधिकार	121
	भूगोल विज्ञान	
09	यूरोप - एशिया का पर्याय द्वीप	125
10	अफ्रिका - केंद्रिय भूखंड	143

©KTBS Not to be republished

पाठ 1	हमारा कर्नाटक (आगे का भाग)

कलबुरगी विभाग (कलबुर्गी)

कलबुरगी विभाग में छः जिले हैं। ये हैं - कलबुरगी, बीदर, बल्लारी, रायचूरु, कोप्पल तथा यादगिरि। हमारे राज्य के कलबुरगी विभाग में साक्षरता की मात्रा, प्रति आय, खेती-बाडी, जीवन आयु आदि अत्यंत निम्न स्तर पर है। कर्नाटक सरकार ने सन् 2000 में राज्य के पिछडेपन का पता लगाने के लिए डॉ.डी.एम. नंजुडप्पा की अध्यक्षता में प्रादेशिक असमानता अध्ययन उन्नताधिकार समिति का गठन किया। इसके अनुसार राज्य में अत्यंत पिछडा विभाग कलबुरगी विभाग है। इस विभाग के जिलों को विशेष सहायता देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 371 (जे) के अंतर्गत विशेष स्थान दिया है।

कलबुरगी विभाग

कलबुरगी विभाग के जिले

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इस विभाग के जिलों का अत्यंत समृद्ध प्राचीन इतिहास है। इतिहास पूर्व

©KTBS Not to be republished

जीवाश्म यहाँ देखे जा सकते हैं। इतिहास के आरंभ में ये प्रदेश मौर्यों के शासन से जुडा था। तत्पश्चात यह शातवाहनों के शासन में आया। अशोक के अनेक शिलालेख यहाँ प्राप्त होते हैं। यहाँ सामान्य शक् 8 वी शताब्दी में राष्ट्रकूट साम्राज्य था। इनकी राजधानी मान्यखेट (मलखेड) कलबुरगी जिले में है। कत्याण चालुक्य बाद में शासनरत रहे। बसवकल्याण इनकी राजधानी थी। बल्लारी जिले का हंपी विजयनगर राजाओं की राजधानी थी। प्रसिद्ध वचनकार बसवण्ण के नेतृत्व में हुए वचन आन्दोलन का केंद्र कल्याण कलबुरगी विभाग से जुडा है। आगे मध्ययुग में यह बहमनी राजाओं के अधिकार में आ गया। उनकी राजधानी कलबुरगी थी। बहमनी और विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद कलबुरगी प्रदेश हैदराबाद निजाम के शासन में था। आगे सन् 1948 में निजाम के शासन में था। आगे सन् 1948 में निजाम संस्थान भारत गणराज्य में विलीन हो गया। राज्य की पुनर्विभाजन योजना के अनुसार सन् 1956 में निजाम संस्थान के कब्जे में स्थित बीदर, कलबुरगी तथा रायचूर जिले कर्नाटक में विलीन हो गए। कलबुरगी विभागीय केंद्र हैं । मद्रास प्रांत का बल्लारी जिला कर्नाटक में विलीन हो गया।

शिलालेख

बहमनी और विजयनगर शासन के बाद अनेक सेनापति इस प्रदेश में स्वतंत्र हो गए। उनमें हरपनहल्लि, जरिमले, संडूरु, तथा सुरपुर सेनापति प्रख्यात हैं। सुरपुर नायक कृष्णप्पा नायक की मृत्यु के बाद उनके पुत्र वेंकटप्पानायक ने अधिकार ग्रहण किया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बारे में जानकारी रखने वाले वेंकटप्पा नायक ने अंग्रेजों के विरुद्ध लडाई लडी। किंतु अंग्रेजों ने इन्हें बंदी बनाकर कारागृह में डाल दिया। अंग्रेजों ने हैदराबाद निजाम को भेंट स्वरुप सुरपुर प्रदान किया। इसी प्रकार बीदर, कलबुरगी तथा रायचूरु जिले निजाम संस्थान के हिस्से बने। यह जिला सन् 1956 में कर्नाटक में एकीकृत हो गया।

हैदराबाद-कर्नाटक प्रदेश विमोचना संघर्ष

भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद निजाम भारत गणराज्य में अपने संस्थान को एकीकृत करने को तैयार न थे। इससे क्रोधित लोगों ने निजामशाही के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ

©KTBS not to be republished

किया। इस भाग के स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व स्वामी रमानंदतीर्थ ने किया। निजाम के वश में स्थित हैदराबाद को कर्नाटक में एकीकृत करने में सबसे आगे नेतृत्व करने वालों में सरदार शरणगौडा इनामदार, शिवमूर्ति अलवंडी, शिरुरु वीरभद्रप्पा, प्रभुराज पाटील संगनाल, पुंडलीकप्पा आदि प्रमुख थे। इन्होंने निजाम शाही के विरुद्ध सत्याग्रह का संघटन किया। निजाम सरकार लोगों को हिंसा पहुँचाने लगी। रजाकार नामक निजाम की निजी सेना के विरुद्ध लोगों ने तीव्र आक्रोश प्रदर्शित किया। केंद्र सरकार ने सीधी प्रतिक्रिया द्वारा निजाम संस्थान को भारत गणराज्य में सन् 1948, 17 सितंबर को एकीकृत कर लिया। तब सरदार वल्लभ भाई पटेल गृह सचिव थे, और प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरु थे।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. संविधान के किस अनुच्छेद में कलबुरगी विभाग के जिलों को विशेष स्थान दिया गया है?
2. निजाम संस्थान किस वर्ष भारत गणराज्य में एकीकृत हुआ?
3. बल्लारी जिले का हम्पी किस साम्राज्य की राजधानी थी?
4. विजयनगर तथा बहमनी राजवंश के पतन के बाद के शासकों के दो सेनापतियों (सामंतों) का नाम लिखिए।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. बल्लारी जिले का ..... नामक स्थान विजयनगर साम्राज्य की राजधानी थी।
2. कलबुरगी विभाग के जिलों को ..... वर्ष स्वतंत्रता मिली।

प्राकृतिक संसाधन

इस विभाग की प्रमुख नदियों में भीमा, तुंगभद्रा, कृष्णा, मुल्लामारी, बेण्णेतोर आती हैं। कारंजा बाँध बीदर जिले के लिए वरदान है। लाल, काली और बकुई मिट्टी इस विभाग में है। कोप्पल और रायचूरु जिलों में धान प्रमुख उपज है। गन्ना यहाँ का मुख्य वाणिज्यिक फसल है। कपास, कदन्न (नवणे), कंहीला तैलीय बीज(कुसुंभा), ज्वार, कुल्थी, अरहर आदि इस विभाग का प्रमुख फसल हैं। इस विभाग के जिलों में वन प्रदेश काफी हैं।

तुंगभद्रा बाँध

©KTBS Not to be republished

बल्लारी जिले का संडूरु तालुक घने जंगल का प्रदेश है। बीदर जिले में खुले जंगल हैं। कोप्पल जिले में जंगली प्रदेश का विस्तार कम है।

इस विभाग के जिलों में प्राप्त प्रमुख खनिज चाँदी, सिलिका, स्वर्ण (रायचूरु जिला), लोहखनिज, चूनापत्थर, मैंगनीज खनिज (बल्लारी), ग्रेनाइट पत्थर हैं। प्राकृतिक संसाधन की दृष्टि से यह अधिक समृद्ध विभाग नहीं है।

लोहे की खान

तुंगभद्रा बाँध रायचूरु, बल्लारी जिलों के सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराता है। कृष्णा नदी पर निर्मित बसवसागर बाँध रायचूरु तथा कलबुरगी जिलों को कृषि हेतु सिंचाई सुविधा प्रदान करता है। कारंजा योजना बीदर जिले की जल आपूर्ति (सिंचाई) करता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. इस विभाग के दो प्रमुख नदियाँ कौन सी हैं?
2. बीदर जिले के एक बाँध का नाम लिखिए।
3. बल्लारी तथा रायचूरु जिलों को सिंचाई सुविधा प्रदान करने वाले बाँधों का नाम लिखिए।

वन एवं वन्य जीवधाम

यह विभाग वन प्रदेश की दृष्टि से कम वनों वाला है। बडे वन्यजीवधाम भी यहाँ नहीं है। लंगूर, हिरन, लोमडी, बंदर, भालू, भेडिये, जंगली कुत्ते आदि वन्यजीव

© Not to be republished

यहाँ देखे जा सकते हैं। बल्लारी जिले में दरोजी भालू धाम है। रायचूरु जिले में हिरन देखे जा सकते हैं।

दरोजी भाल् धाम

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. इस विभाग के दो प्रमुख नदियों के नाम लिखिए।
2. इस विभाग में पाए जाने वाले कुछ वन्य जीवों के नाम लिखिए।
3. निजाम संस्थान विमोचन में संघर्ष करने वाले दो प्रमुख सेनानियों के नाम बताइए।
4. इस विभाग में उत्पादित फसलों के नाम लिखिए।

कृषि विकास, हमारे उद्योग

इस विभाग के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है । यहाँ वर्षा की मात्रा कम है। यहाँ वर्षा पर निर्भर फसल उगायी जाती है। वर्षा की कमी के कारण जब-तब लोगों को अकाल का सामना करना पड़ता है। इस विभाग के जिलों को अकाल पीडित जिला कहा जाता है। इस विभाग के प्रमुख उद्योग लौह-इस्पात, सीमेण्ट, शक्कर, ऊर्जा उत्पादन केंद्र आदि हैं। ये पुरुष तथा महिलाओं को उद्योग का अवसर प्रदान करते हैं।

बल्लारी और कोप्पल जिले में बृहत लौह इस्पात के कारखाने हैं। यादगिरि और कलबुरगी जिलों में बृहत् सीमेंन्ट के कारखाने हैं। बीदर जिले को बीदरी काटीगरी प्रसिद्ध है। इस विभाग में पर्यटन उद्यम भी पनप रहा है। इसके प्रमुख पर्यटन केंद्र बल्लारी जिले का हम्पी, तुंगभद्रा बाँध, कलबुरगी जिले का सन्नती, ख्वाजा बन्दे

©KTBS Not to be republished

नवाज़ दरगाह, बीदर जिले का किला, बसवकल्याण, रायचूरु जिले का हट्टी सोने का खान आदि। सारे भारत में ज्यादा सोना मिलने की खान रयचूरु जिले में है।

हट्टी सोने की खान

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. कलबुरगी विभाग के प्रमुख उद्योगों के नाम लिखिए।
2. इस विभाग के किन जिलों में बृहत् लोहे की खनिज के खानें है?
3. कलबुरगी के दरगाहों का नाम लिखिए ।
4. कलबुरगी जिले का प्रमुख उद्योग क्या है?

रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1. इस विभाग के ..... भाग में स्वर्ण का खान है।
2. बल्लारी जिले में ..... वन्यजीव धाम है ।

कला, साहित्य, संगीत, जानपद, नाटक, नृत्य

कलबुरगी विभाग के जिले आर्थिक रुप से भले ही पिछडे हैं किंतु कला, साहित्य, संगीत, जानपद, नृत्य आदि विषयों में यह समृद्ध है। साहित्य के संबंध में

©KTBS not to be republished

कलबुरगी विभाग का प्राचीन इतिहास ही है। कन्नड का शास्त्र कृति 'कविराज मार्ग' की रचना राष्ट्रकूट शासन काल में ही हो चुकी थी । हमें यह नहीं भूलना चाहिए। आदि कवि पंप ने राजा अरिकेसरि के राजाश्रय में अपने महत्वपूर्ण काव्य 'विक्रमार्जुन विजय' की रचना की। कन्नड में तीन रत्नत्रयों की पहचान की गई है। ये हैं पंप, पोन्न तथा रन्न। ये तीनों कलबुरगी विभाग से ही हैं। कन्नड भाषा के प्रथम व्याकरण ग्रंथ 'शब्दमाणिदर्पण' के रचनाकार केशिराज कलबुरगी जिले के हैं।

वचन आन्दोलन

बसवण्णा

कर्नाटक में 12 वी शताब्दी में हुए महत्वपूर्ण समाज सुधारक आन्दोलन के रुप में वचन आन्दोलन कलबुरगी विभग के कल्याण नगर में प्रारंभ हुआ। बसवण्णा, अल्लमप्रभु, अक्कमहादेवी, जेडर (बेडर) दासीमय्या, सिद्धराम आदि शिवशरण सिद्धि साधना करने वालों का कार्य क्षेत्र कलबुरगी विभाग ही है। इस आन्दोलन में सभी प्रकार की असमानताओं की अवहेलना की गई है। अस्पृश्यता के विरुद्ध वचन आन्दोलन द्वारा युद्ध ही छिडा । इस आन्दोलन के अंग बनकर में दमनित सामाजिक क्षेत्र के पुरुषों और महिलाओं ने वचन लिखे।

दास साहित्य

पुरंदर दास

कलबुरगी विभाग का रायचूर जिला दास साहित्य का जन्मस्थान कहा जा सकता है। श्री व्यासराय के नेतृत्व में दासकूट की रचना हुयी। छुआ-छूत संबंधी भेद भाव की अवहेलना की। पुरंदरदास, कनकदास, राघवेंद्रतीर्थ आदि ने कीर्तन (प्रशंसात्मकगीत) की रचना की इसमें जाति-भेद की टीका की। धन के गर्व (अहंकार) की दासों ने अपने कीर्तन में निंदा की है।

तत्वपद रचनाकार

वचन आन्दोलन, दास साहित्य, प्राचीन काव्य आदि विचारों से प्रभावित लोगों ने तत्वपदों की रचना की। जनपद कलाकार, साधु-संत, फकीरों द्वारा रचे गए गीतों

©KTBS Not to be republished

को तत्वपद कहा गया। 18 वी और 19 वी शताब्दी में अनेक तत्व पद रचना कारो ने लिंग असमानता के विरुद्ध, अस्पृश्यता के विरुद्ध, झूठ बोलने के विरुद्ध, धनार्जन के विरुद्ध अपने तत्वपदों द्वारा व्यंग्य किया गया है।

चेन्नूरु जलाल साहब, हनुमंतव्वा आदि ने तत्व पदों की रचना की। अनेक निरक्षर (आशिक्षित) लोगों ने भी तत्व पद बनाकर गाए।

आधुनिक काल में कलबुरगी विभाग में साहित्य के क्षेत्र को समृद्ध करने वाले लोगों में सिद्धय्य पुराणिक, जायतीर्थ, राजपुरोहित, शांतरस, पंडित तारानाथ, बीचि, मुदेनूरु संगण्ण, सिंपिलिंगण्णा, श्रीमती शैलज चडचण, जयदेवी ताई लिगाडे, चेन्नण्ण वालीकार, जंबण्ण अमरचिंत प्रमुख हैं। संगीत के क्षेत्र में भी कलबुरगी विभाग का काफी योगदान रहा है। सिद्धराम, जंबलदिन्नि, पंडित तारानाथ, गजल गुंडम्मा, सुभद्रम्मा मंसूर आदि ने संगीत के क्षेत्र में काफी योगदान दिया है। चित्रकला में प्रसिद्ध एस.एम. पंडित का नाम अग्रगण्य है। जनपद नाटकों में कलबुरगी विभाग से दोड्डाट' सण्णाट, तोगल् गोंबे का प्रदर्शन प्रचलित है। तोगलु बोंबे आट (कठपुतली खेल) में बेलगल वीरण्णा प्रसिद्ध हैं।

नंदी नाच, अलाविनाच, चौडम्मा का नाच, लंबाणी नाच, कोलाटा (डांडिया), दुरगु-मुरगी आदि जनपद कला के प्रकार हैं। करडी मजलु, मोहर्रम का नाच, विविध मुखौटे लगाकर नाचने वाले आदि जनपद प्रकार हैं। बीदर जिले की बीदरी कलाकारी किन्नाल की कठपुतली (गुडिया) कोप्पल जिले की चीथडों की चादर आदि प्रचलित पारंपरिक कलाएँ हैं।

निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. कलबुरगी विभाग के प्राचीन कला की दो काव्य रचना के नाम लिखिए।
2. वचन आन्दोलन के बारे में एक टिप्पणि लिखिए।
3. दास साहित्य के दो श्रेष्ठ दास साहित्यकारों के नाम लिखिए।
4. कलबुरगी विभाग के जनपद नाचों के नाम लिखिए।

शिक्षा और हमारा स्वास्थ्य

हमारे राज्य में शैक्षिक रुप से पिछडा जिला रायचूरु, यादगिरि हैं। शैक्षिक

©KTBS Not to be republished

प्रगति के सूचक साक्षरता यहाँ कम है। आजकल साक्षरता का स्तर उत्तम हो रहा है। इस विभाग के कलबुरगी नगर में गुलबर्गा विश्वविद्यालय तथा यहाँ कर्नाटक का केंद्रीय विश्वविद्यालय है। रायचूरु जिले में कृषि विश्वविद्यालय तथा बल्लारी में विजयनगर श्रीकृष्णदेवराय विश्वविद्यालय हैं। तथा इस जिले में हम्पी प्रदेश के कन्नड विश्वविद्यालय है। बीदर में पशुपालन (संरक्षण) तथा मत्स्यपालन विश्वविद्यालय है। कलबुरगी में प्रसिद्ध बुद्ध विहार है।

बल्लारी, कलबुरगी, रायचूरु, बीदर में वैद्यकीय महाविद्यालय हैं। प्रत्येक जिले में जिला अस्पताल हैं। ग्रामीण प्रदेशों में लोगों की स्वास्थ्य रक्षा के लिए स्वास्थ्य उपकेंद्र हैं। शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में तेजी से प्रगति हो रही है।

बौद्ध विहार

गुलबर्गा विश्वविद्यालय

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. इस विभाग के रायचूर जिले के विश्वविद्यालय कौन से है?
2. बल्लारी जिले के दो विश्वविद्यालय कौन-कौन से हैं?
3. कन्नड विश्वविद्यालय किस स्थान पर है?

रिक्त स्थानों की पूर्ति किजिए ।

1. कर्नाटक का केंद्रीय विश्वविद्यालय ..... जिले में है।
2. बल्लारी जिले के हम्पी विश्वविद्यालय का नाम ..... है।

सांस्कृतिक सम्पदा

जैसा कहा जा चुका है कि कलबुरगी विभान आर्थिक रुप से निम्न स्तर ही रहा

© KTBS Not to be republished

है किन्तु सांस्कृतिक सम्पदा काफी समृद्ध है। संगीत, साहित्य, चित्रकला, जानपद, नाटक, नृत्य आदि क्षेत्रों में कलबुरगी विभाग के जिलों की राज्य को बडा योगदान रहा है। कर्नाटक के पाचीन चार राजवंशों को यहाँ आश्रय मिला। ये हैं - राष्ट्रकूट, कल्याण चालुक्य, बहमनी तथा विजयनगर साम्राज्य। इन राजवंशों के शासन काल में साहित्य, कला, संगीत को काफी प्रोत्साहन मिला। रंगमंच कलाकार वृत्ति भी इस विभाग में विख्यात है।

बीदर की बीदरी कलाकारी, किन्नाल के कठपुतली, चीथडों से चादर बनाना आदि गृह उद्योग यहाँ देखे जा सकते हैं। प्राचीन वास्तुशिल्प कला यहाँ काफी प्रख्यात है। बीदर का किला, हंपी के स्मारक, बसव कल्याण का बसव स्मारक, कलबुरगी का ख्वाजा बंदे नवाज़ दरगाह, सन्नती के स्मारक आदि यहाँ के वास्तुशिल्प का अद्भुत उदाहरण है।

किन्नाल की कठपुतालियाँ

स्वतंत्रता सेनानी

कर्नाटक के अन्य भागो में स्वतंत्रता के लिए तथा कर्नाटक के एकीकरण के लिए लोग लडते रहे, इसी प्रकार कलबुरगी विभाग के लोगों को भी स्वतंत्रता संग्राम, निजाम संस्थान के विमोचन के लिए आन्दोलन तथा कर्नाटक के एकीकरण के आन्दोलन में भाग लेना पडा। स्वतंत्रता आन्दोलन से संबंधित कलबुरती विभाग में दो आन्दोलन का उल्लेख आनिवार्य है। प्रथम-लोगों में राष्ट्रीय आन्दोलन के बारे में जागृति पैदा करने के उद्देश्य से प्रारंभ हुआ वाचनालय आन्दोलन तथा दूसरा बच्चों को शिक्षा प्रादान करने और स्वतंत्रता के लिए लडने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए राष्ट्रीय विद्यालयों की

©KSBSE Not to be republished

स्थापना की गई। चार राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना हुयी है ।

1. नूतन विद्यालय, कलबुरगी (1907)
2. उस्मानिया राष्ट्रीय विद्यालय, चिंचोली
3. विद्यानंद गुरुकुल, कुकनूरु (1922)
4. हमदर्द राष्ट्रीय विद्यालय, रायचूरु (1922)

इस विभाग में स्वतंत्रता आंदोलन के लिए आर्य समाज से प्रेरणा मिली और वंदेमातरम् आंदोलन से प्रेरणा मिली। महागाँव का कल्याण शेट्टी स्वतंत्रता संग्राम के लिए युवाओं का संघ बनाया । महागाँव के चंद्रशेखर पाटील. उसके अध्यक्ष बनकर इसे आगे बढाते रहे। श्री रमानंद तीर्थ इस विभाग के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। इनके अतिरिक्त कई लोगों ने इस आन्दोलन में भाग लिया।

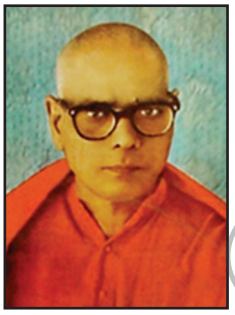

श्री रमानंद तीर्थ

निजामशाहि रद्द करने के आन्दोलन में सरदार शरण गौडा इनामदार की प्रमुख भूमिका रही। निजाम के निजी सेना नायक ने कलबुरगी विभाग में काफी हिंसा मचायी। इनके विरुद्ध लोगों ने तीव्र विरोध प्रकट किया। भारत को सन् 1947, 15 आगस्त को स्वतंत्रता प्राप्त हुयी किंतु कलबुरगी विभाग को निजाम से 1948, 17 सितंबर को स्वतंत्रता मिली और यह भारत गणराज्य में विलीन हो गया।

निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. कलबुरगी विभाग के स्वतंत्रता सेनानि तथा दो आन्दोलनों के नाम लिखिए।
2. निजाम की निजी सेना का नाम क्या था?
3. कलबुरगी विभाग में स्वतंत्रता आन्दोलन के अंग रुप में 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में शुरु हुए दो राष्ट्रीय विद्यालयों के नाम लिखिए।
4. हैदराबाद के निजाम का संस्थान भारत गणराज्य में किस दिन विलीन (एकीकृत) हुआ ?
5. कलबुरगी विभाग के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के नाम लिखिए।

इस विभाग के जिलों की विशेषताएँ

इस विभाग में छः जिले हैं। आरंभ में केवल चार जिले थे। किन्तु सन् 1997 में रायचूर

©KTBS Not to be republished

जिले का विभाजन कर कोप्पल जिला बनाया गया और कलबुरगी जिले को विभाक्त कर यादगिरि जिला 10 अप्रैल सन् 2010 को बनाया गया। बहमनी शासकों के काल में यहाँ अनेक इस्लामी कला का विकास हुआ ।

इस जिले में अनेक प्राचीन स्मारक हैं। इनमें प्रसिद्ध है सन्नति यहाँ अनेक बौद्ध विहारों के स्मारक है। कागिणा नदी के तट पर मान्यखेट स्थित है।.

कलबुरगी जिला

यह सीमान्त जिला है। ऐसा माना जाता है की यह 10-11 वी शताब्दी में आस्तित्व में आया। यह जिला 13 वी. शताब्दी में बहमनी राजाओं की राजधानी थी। इसे विभक्त कर 10 अप्रैल सन् 2010 में यादगिरि जिले की रचना हुयी। इस जिले की मुख्य फसले अरहर, ज्वार, कपास, बागानी फसलें. आदि हैं। ऐसा कहा जाता है कि विश्व की सबसे लम्बी 29 फूट की तोप जो बहमनी काल की है वह यहाँ है। इस नगर का शरण बसवेश्वर मंदिर का मेला हजारों भक्तों को आकर्षित करता है। इसी प्रकार ख्वाजा बंदे नवाज दरगाह से संबंधित उरुसु भी हजारों भक्तों को आकर्षित करता है। इस जिले के गुंबजों में नैसर्गिक रंगों से चित्रित वर्णचित्र अद्‌भुत हैं। बहमनी सुल्तानों का सन् 1347 में निर्मित किला आकर्षणीय है। हाल ही में कलबुरगी नगर में सिद्धार्थ बुद्ध विहार को निर्मित किया गया है। इस बौद्ध विहार को तिब्बती गुरु दलाई लामा ने उद्‌घाटित किया था। इस जिले के भीमा नदी के तट पर दत्तात्रेय का पीठ गाणगापुर है। यह एक पवित्र यात्रास्थल है।

इस जिले में दो विश्व विद्यालय हैं। प्रथम गुलबर्गा विश्वविद्यालय तथा दूसरा कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय है।

इस जिले के सेड़म् तालुक में प्रसूता स्तम्भ नामक 52 फूट लम्बा स्तम्भ है। यह जमीन पर नहीं खडा है। इसके आधार से एक पतले कपडे को आरपार किया जा सकता है। इस जिले का एक अन्य ऐतिहासिक स्थल मरतूरु है । यह प्रसिद्ध हिन्दु संहिते रचनाकार विज्ञानेश्वर का जन्म स्थान है। इस जिले में अनेक सीमेण्ट कारखाने हैं।

©KTBS Not to be republished

ख्वाजा बंदेनवाज दरगाह

यादगिरि जिला

यह तीन तालुक वाला एक छोटा जिला है । यादगिरि, सुरपुर तथा शहपुर ये तीन तालुक हैं। यह 2010 में अस्तित्व में आया। इस प्रदेश पर शातवाहन, चालुक्य, राष्ट्रकूट, आदिलशाह, निजामशाह राजवंशों का शासन रहा। अत्यंत विरला तथा उपयोगी युरेनियम खनिज यहाँ प्राप्त होता है। शुद्ध या परिष्कृत युरेनियम खनिज का उपयोग सुरक्षा के उद्देश्य से तथा विद्युत उत्पादन के लिए होता है। यह अत्यंत उपयोगी संसाधन है। इस जिले का बडा कारखाना 'कोर ग्रीन शुगर तथा फ्यूएल्स प्राइवेट लिमिटेड' (ईंधन के निजी परिमित) संयुक्त उद्योग है। यहाँ चीनी, विद्युत, जैविक उर्वरक खाद तथा व्यवसायिक रसायनों का उत्पादन भी होता है। इस जिले के शहापुर तालुक में पहाडों की पंक्तियाँ लेटे हुए बुद्ध के समान दिखाई देते हैं।

बीदर जिला

बीदरी कला

इस जिले का समृद्ध इतिहास है। मौर्य, शातवाहन,राष्ट्रकूट, चालुक्य, कल्चूरी, काकतीय, खिलजी, बहमनी, बरीदशाही राजवंशों ने यहाँ शासन किया। यह कर्नाटक के उत्तरी छोर पर स्थित है। यह एक सीमान्त प्रदेश है। यहाँ की खेती वर्षा पर निर्भर है।

इस जिले में बहनेवाली प्रमुख नदियाँ मांजरा, कारंजा, मुल्लामरि, चुल्किनाला हैं। सामाजिक पतिवर्तन

©KTBS Not to be republished

की आवाज उठाने वाले श्री बसवेश्वर का कार्य क्षेत्र कल्याण इसी जिले में है। बीदर नगर में सिक्खों के गुरु गुरुनानक ने दौरा किया था, ऐसा माना जाता है। यहाँ बृहत गुरुद्वारा है। इसे गुरुनानक जरा कहा जाता है। अत्यंत विशेष नरसिंह जरणी नामक पवित्र स्थान यहाँ है।

इस जिले में 435 वर्ग क्षेत्र कि.मी. में विस्तार वन प्रदेश है। यह वन प्रदेश आरक्षित वन, संरक्षित वन तथा मुक्त वन नामक तीन भागों में बनाया गया है। यहाँ औषधि संबंधी वनस्पति उगाने का वनस्पति उद्यान विकसित किया गया है।

गुरुद्वारा

बीदर नगर के मध्य भाग में विशाल दुर्ग है। दुर्ग के भीतर अनेक अलग अलग कक्ष हैं। इनमें रंगीन महल प्रमुख है। यह सन् 1424 के बाद बहमनी राजाओं की राजधानी थी।

इस दुर्ग का आकर्षणीय स्थान बृहत् मेहराब, मस्जिद तथा फूलों के बाग है। जल परिवहन की व्यवस्था अत्यंत विशिष्ट है।

बीदर का दुर्ग

रायचूरु जिला

यह जिला दोआब प्रदेश कहलाता है। क्यों कि दक्षिण में तुंगभद्रा नदी और उत्तर में कृष्णा नदी के मध्य स्थित प्रदेश है। इसे धान का गोदाम कहा जाता है। इस जिले में कुल सौ से भी अधिक चावल की चक्की (मिल) हैं। खाद्य पदार्थों को यूरोपीय देशों को निर्यात किया जाता है। लगभग 5000 टन क्षमता वाले शीतागार

©KTBS Not to be republished

यहाँ स्थापित है। यह एक सीमांत जिला है। मुर्गी पालन के लिए यह प्रख्यात है। इस नगर में स्थित ऊष्मा (उर्जा) विद्युत स्थावर से बडी मात्रा में विद्युत तैयार करते हैं। राज्य में उपयोग किए जा रहे विद्युत का 48 प्रतिशत भाग यहाँ से प्राप्त होता है।

ऊष्मा (ऊर्जा) विद्युत उत्पादन केंद्र

अशोक का शिलालेख

देश के सभी नगरों से सम्पर्क स्थापित करने का रेलमार्ग रायचूरु नगर से होकर गुजरता है। हैदराबाद, मुम्बई, चेन्नै, बेंगलूरु से सम्पर्क का रेल मार्ग यहाँ है। इस नगर के मस्की नामक स्थान से अशोक के दो शिलालेख प्राप्त हुए हैं। अर्थात् सामान्य शक पूर्व में यह प्रदेश आभिवृद्धि कर चुका था, यह स्पष्ट होता है। यह प्रदेश सा.श.पूर्व में मौर्य साम्राज्य का हिस्सा था। इस जिले के लोगों का प्रमुख उद्योग कृषि है। इस जिले का सिंधनूरु तथा रायचूरु विकासित तालुक हैं तो लिंगसगूरु मध्यम स्तर से विकासित होनेवाला तालुक है। देवदुर्गा तथा मानवी अत्यंत पिछडे तालुक हैं।

कोप्पल जिला

यह नगर जैनों की काशी कहा जाता है। यह उनका पवित्र तीर्थ स्थान है। पाल्कीगुंडु तथा गविमठ में अशोक के शिलालेख प्राप्त हुए हैं। भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रुप में ख्यात सन् 1857 का विद्रोह अंग्रेजों के विरुद्ध था। इसमें

© KTBS not to be republished

कोप्पल प्रांत के मुंडरगी भीमराव नामक योद्धा ने विद्रोह किया था। इस युद्ध में ये बलि चढ गए । इस जिले में ज्वार, धान, कपास, बाजरा, मक्का, गेहूँ आदि फसलें उगायी जाती हैं। इस जिले की मिट्टी और जलवायु बागानी फसलों के लिए उपयुक्त हैं। आम, सपोटा, अनार, केला, अंगूर आदि काफी मात्रा में उगाए जाते हैं।

इस जिले में वन प्रदेश कम हैं। यहाँ वन्यजीव हैं ही नहीं; ऐसा कहना गलत न होगा।

महादेव देवालय, इटगी

कल्याण चालुक्य राजा द्वारा निर्मित बृहत् महादेव इटगी में है। इसे मंदिरों का चक्रवर्ती कहा जाता है।

रायचूरु नगर से दूर कुछ मिल दूर स्थित किन्नाल राष्ट्रीय प्रसिद्ध लकडी के खिलौने बनाने वाले पारंपरिक कलाकारों का स्थान है। इस कला को बचाकर रखने वाले चित्रकारों का परिवार यहाँ है। इस जिले के मुनिराबाद में तुंगभद्रा नदी पर बृहत बाँध बनाया गया है। विजयनगर राजाओं की आरंभिक राजधानी आनेगुंदी कोप्पल जिले में है। हाल ही में यहाँ अनेक लौह-इस्पात का कारखाना अस्तित्व में आया है। कोप्पल प्रदेश को तिरूल् कन्नड प्रदेश कहा जाता है।

© KSBP Not to be republished

बल्लारी जिला

विजयनगर साम्राज्य की राजधानी के रुप में स्थापित हंपी बल्लारी जिले में है। यह साम्राज्य सन् 1336 से 1565 तक उन्नति पर रहा। रामायण और महाभारत जैसे पुराणों के साथ जुडे अनेक स्थल इस जिले में है। कनकगिरि में कनकाचल मंदिर प्रसिद्ध है। इस नगर के दुर्गम्मा मंदिर के देवता को बलरी नाम से पुकारा जाता था। इससे जिले का नाम बल्लारी पडा।

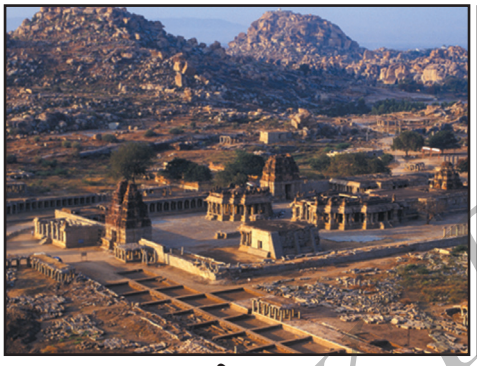

हम्पी

तोरणगल्लु का कारखाना

अंग्रेजों के शासन काल में यह मद्रास संस्थान का हिस्सा था। स्वतंत्रता के पश्चात् सन् 1953 में इसे मैसूरु संस्थान में मिला लिया गया। आगे सन् 1956 में यह कलबुरगी विभाग में जोडा गया।

हंपी में अनेक बृहत् स्मारक हैं। यहाँ का उग्रनरासिंह, हजारराम मंदिर, कमलमहल, विरुपाक्ष मंदिर आदि काफी पर्यटकों को आकार्षित करते हैं। इसके अतिरिक्त संडूरु का कुमारस्वामी मंदिर, कुरुवत्ती का मल्लिकार्जुन मंदिर बागली का कल्लेश्वर मंदिर प्रसिद्ध हैं। बल्लारी नगर के निकट ऊष्मा उत्पन्न करने वाले विद्युत स्थावर की स्थापना की गई है । इस जिले का तोरणगल्लु बृहत् उद्योग धधों के केंद्र के रुप में विकासित हो रहा है। दोणिमलै में स्थित बृहत् एन.एम.डी.सी.यू. (नेरानल मिनरल डेवलपमेंट कार्पोरेशन) सार्वजानिक क्षेत्र का प्रसिद्ध लौह खनिज बाहर निकालने का उद्योग यहाँ है।

बल्लारी ऐतिहासिक महत्व वाला जिला है। तुंगभद्रा सिंचाई योजना कृषि के क्षेत्र में क्रांति कर रहा है। तोरणगल्लु लौह-इस्पात कारखाना आधुनिकता का प्रतीक है।

©KTBS Not to be republished

कन्नड विश्व विद्यालय, हंपी

इस जिले में दो विश्वविद्यालय हैं। प्रथम हम्पी का कन्नड विश्वविद्यालय तथा दूसरा बल्लारी का विजयनगर श्री कृष्णदेवराय विश्वविद्यालय ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. कलबुरगी विभाग में कितने जिले हैं ?
2. प्राचीन काल में इस प्रदेश पर शासन रत तीन राजवंशों के नाम लिखिए।
3. भारत में स्वर्ण प्राप्त होने वाला स्थान रायचूरु में है। इस स्थान का नाम लिखिए।
4. इस विभाग में स्थापित दो ऊष्मा उत्पन्न विद्युत स्थावर किस जिले में हैं?
5. हंपी किस साम्राज्य की राजधानी थी?
6. ख्वाजा बंदेनवाज दर्गा किस जिले में है ?

क्रिया कलाप

इस विभाग के जिलों में स्थित लौह खनिज की खानों तथा लोह इस्पात कारखानों की सूची तैयार कीजिए। इनके चित्रों को संग्रह कर रपट तैयार कीजिए ।

बेलगावी विभाग

इस विभाग के चार जिले सन् 1956 तक मुम्बई प्रांत में थे। राज्य पुनार्विभाजन में कर्नाटक में विलीन हो गए। ये विभाग धारवाड जिले को सन् 1997 में विभक्त कर हावेरी तथा गदग जिले बनाए गए। तथा विजापुर (विजयपुर) जिले को विभाजित कर बागलकोटे जिला बनाया गया। इस विभाग में आज सात जिले हैं। ये हैं -

©KTBS Not to be republished

बेलगावी, धारवाड, हावेरी, गदग, विजयपुर, बागलकोटे तथा उत्तर कन्नड जिले।

बेलगावी विभाग

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

इस प्रदेश पर शातवाहन तथा मौर्यों का शासन था। इस विभाग की राजधानी कदंबों ने बनवासी को बनाया था। चालुक्यों की राजधानी बादामी यहाँ है। बादामी, पट्टदकल्लु तथा ऐहोले में विश्वख्यात मंदिर हैं। बादामी की गुफाओं में शिल्पकला का वैभव देखते ही बनता है। इस विभाग के बसवन बागेवाडी, कूडलसंगम आदि वचन आन्दोलन के केंद्र थे। सामाजिक परिवर्तन का प्रारंभ करने वाले श्री बसवेश्वर का ऐक्य स्थान कूडलसंगम में है। बेलगावी विभाग पर राष्ट्रकूटों के बाद बहमनी राजाओं ने शासन किया।

बदामी गुफा में शिल्पकला

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बेलगावी विभाग के जिलों का अद्‌भुत योगदान है। कित्तूर रानी चेन्नम्मा ने सन् 1824 में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया । यह संघर्ष

©KTBS Not to be republished

ऐतिहासिक महत्व रखता है। तत्पश्चात् संगोल्ली रायण्णा का स्वतंत्रता के लिए संघर्ष स्मरणीय है। बेलगावी में सन् 1924 में महात्मा गाँधीजी की अध्यक्षता में कांग्रेस अधिवेशन चला। उत्तर कन्नड जिले में कर विरोध सत्याग्रह चला।

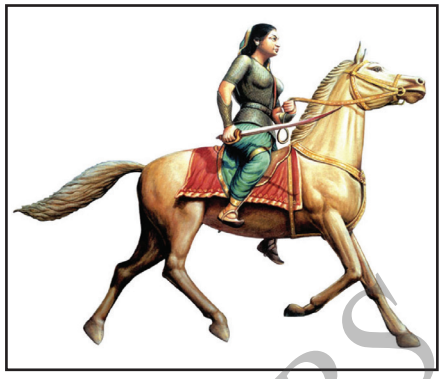

कित्तूर राणी चन्नम्मा

संगोल्ली रायण्णा

इस विभाग के जिले मुंबई प्रांत के अंतर्गत थे। सन् 1956 में कर्नाटक का एकीकरण हुआ। तब ये कर्नाटक में एकीकृत हो गए। आरंभ में इस विभाग में बेलगावी, उत्तर कन्नड, विजापुर (विजयपुर) तथा धारवाड चार जिले थे। बाद में धारवाड जिले से विजयपुर को विभक्त कर दिया गया। आज इस विभाग में कुल सात जिले हैं। विजयपुर, उत्तर कन्नड, तथा बेलगावी सीमांत जिले हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करने वाली रानी का नाम लिखिए।
2. हावेरी, गदग और बागलकोटे नवीन जिलों की रचना किस वर्ष हुई?
3. महत्मा गाँधीजी की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन इस विभाग के किस जिले में तथा किस वर्ष हुआ?
4. बादामी किस राजवंश की राजधानी थी?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1. बेलगावी विभाग के जिले - वर्ष कर्नाटक में एकीकृत हो गए।

©KTBS Not to be republished

प्राकृतिक सम्पदा

इस विभाग में प्राकृतिक संसाधन समृद्ध हैं । जलयुक्त नदियाँ हैं। घने जंगल हैं। अनेक खानिजों की खानें है। उपजाऊ मिट्टी है। विद्युत स्थावर हैं। इस विभाग में बहनेवाली प्रमुख नदियाँ कृष्णा, मलप्रभा, घटप्रभा, भीमा, काली, तुंगभद्रा आदि हैं। इन नदियों के बहनेवाले प्रदेशों में सुंदर जलप्रपात हैं। गोकाक जलप्रपात बडा ही आकर्षक है। दांडेली के निकट मागोडु जलप्रपात, कारवार के निकट देवमाला जलप्रपात, मुरुडेश्वर के निकट अप्सर कोंडा जलप्रपात आदि प्राकृतिक सौन्दर्य की दृष्टी से मनोहारी हैं। यहाँ पर्यटन उद्योग के लिए उत्तम वातावरण है। अंशी राष्ट्रीय उद्यानवन काली नदी के तट पर है। दांडेली का वन्य जीव धाम सराहनीय है। अट्टिवेरी पक्षी धाम एक अन्य प्राकृतिक रुप से सुंदर स्थान है। इस विभाग के बागलकोटे जिले में लौहखनिज प्राप्त होते हैं। यहाँ प्राप्त होने वाली एक और कच्ची वस्तु चूनापत्थर है। इस विभाग के जिलों में खडिया या बिल्लात अपार मात्रा में प्राप्त होता है। इलकल विभाग में ग्रेनाइट की अपार खानें (निक्षेप) हैं। यहाँ से ग्रेनाइट का निर्यात होता है।

इलकल ग्रेनाइट उद्योग

निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. बेलगावी विभाग की दो प्रमुख नदियों के नाम लिखिए ।
2. इस विभाग में स्थित प्रमुख वन्यजीव धामों के नाम बताइए ।
3. इलकल में कौन सा संसाधन प्राप्त होता है?

© KTBS Not to be republished

वन तथा वन्य जीव धाम

घनेदार जंगल

इस विभाग के बेलगावी जिला , उत्तर कन्नड, धारवाड जिलों में घने जंगल हैं। यहाँ सदाबहारी वन हैं। उष्णकाटिबंधीय घने जंगलों के कई भागों तथा वर्ष पूर्ण हरे रहने वाले वनों का सदाबहारी वन कहते हैं। यहाँ अनावृष्टी (वर्षा का ना होना) कभी नहीं होती। यहाँ आराक्षित वन प्रदेश, संरक्षित वन प्रदेश तथा मुक्त वन प्रदेश हैं। उत्तर कन्नड जिले के कुल विस्तार का 80 प्रतिशत भाग वन प्रदेश है । हाथी, जंगली भैंसा, हिरन, बाघ, चीता, भाल्, मोर, जंगली बिल्ली आदी यहाँ पाए जाते हैं।

इन जंगलों में रोज वुड (काली लकडी), चंदन के पेड, नंदी, सागौन आदी बहुमूल्य वृक्ष पाए जाते हैं। वनों से प्राप्त वस्तुएँ जंगलो में वास करने वाले आदिवासियों की आय का साधन हैं।

निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. सदाबहारी वन किसे कहते हैं ?
2. बेलगावीं विभाग के प्रमुख जलप्रपातों के नाम लिखिए।
3. बेलगावी विभाग के किन जिलों में लोहखानिज पाए जाते हैं?

कृषि तथा उद्योग

इस विभाग में व्यापक रुप से लाल और काली मिट्टी मिलती है। धान, कपास, मक्का, दाल, गेहूँ, मूँगफली, बाजरा, मिर्च प्रमुख फसलें हैं। महालिंगपुर का गुड, ब्याडगी की लाल मिर्च, काजू आदि यहाँ के प्रमुख उत्पाद हैं। मलप्रभा सिंचाई योजना (नविलतीर्थ) कृष्णा ऊपरी तट योजना (आलमट्टी) प्रमुख सिंचाई योजनाएँ हैं। काली, वरदा, शरावती, डोणी, भीमा, आदी यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं।

©KTBS Not to be republished

आलमट्टी बाँध

मत्स्य पालन उत्तर कन्नड जिले का प्रमुख व्यवसाय है। यहाँ अनेक मत्स्य संस्करण (शुद्धीकरण) घटक हैं। इनका एक अन्य उत्पाद काजू है। काजू संस्करण इकाई भी यहाँ है। उत्तर कन्नड जिले में कद्रा, सूफ, कोडसल्ली, नागझरी तथा कैगा प्रमुख विद्युत उत्पादन केंद्र हैं। सुपारी, गन्ना, कपास, मसाले यहाँ की प्रमुख वाणिज्यिक फसले हैं। विजयपुर तथा बागलकोटे जिले बागानी फसलों के लिए प्रसिद्ध हैं । यहाँ की जलवायु तथा मिट्टी की विशेषताएँ फलों के लिए अनुकूल हैं। इस जिले में अंगूर की खेती काफी मात्रा में की जाती है। अंगूर संस्करण इकाई यहाँ पनप रही है। अनार, नींबू, आम, मोसंबी आदि फल यहाँ उगाए जाते हैं। हावेरी जिले में सुधारित बीज उत्पादन का केंद्र है। गुलेदगड्डा खण उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है।

उद्योग धन्धों की दृष्टी से हुब्बल्लि, बेलगावी, बागलकोटे, गदग, हावेरी प्रमुख केंद्रो के रूप से विकासित हो रहे हैं। इलकल में अनेक ग्रेनाइट प्रस्तार की संस्करण इकाइयाँ कार्यरत हैं।

निम्नालिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. इस विभाग के जिलों की प्रमुख कृषि उत्पाद फसलें कौन-कौन सी हैं?
2. इस विभाग के किन जिलों में मत्स्यपालन लोगों का प्रमुख व्यवसाय है?
3. इस विभाग के किस जिले में बीज उत्पादन का केंद्र है?
4. इस विभाग का ब्याडगी किस कृषि उत्पाद के लिए प्रसिद्ध है?

©KTBS Not to be republished

कला, साहित्य, संगीत, जानपद नाटक

इस विभाग के जिले विविध प्रकार की लालित कलाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। धारवाड-राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर हिंदुस्तानी संगीत की जन्म भूमि माना जाता है। भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी, पंडित माल्लिकार्जुन मन्सूर, बालेखान (सितार), विदुषी गंगूबाई हानगल, पंडित वेंकटेश कुमार, पंडित बसवराज राजगुरु आदि संगीतज्ञ धारवाड से हैं।

शिशुनाल शरिफ

द.रा. बेंद्रे

मध्ययुग के अनेक प्रमुख काव्य रचनाकार रन्न, नागचंद्र, नयसेन कुमारव्यास, चामरस, बसवण्ण, कनकदास, शिशुनाल शरीफ, आदि बेलगावी विभाग के विविध प्रदेशों से हैं। वचन पितामह फ.गु.हलकट्टी, रेवरेंड किट्टेल्, भूसनूरमठ, वी.कृ. गोकाक, ज्ञानपीठ पुरस्कार से अलंकृत द.रा.बेंद्रे, दिनकर देसाई, तथा दो अन्य ज्ञानपीठ पुरस्कृत गिरिश कार्नाड, चंद्रशेखर कंबार आदि इसी विभाग के हैं। बसवराज कट्टीमनी, एम.एम.कलबुर्गी, आद्य रंगाचार्य (श्रीरंग) आदी आधुनिक युग में कन्नड साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। जानपद ज्ञाता हुक्केरी बालप्पा, नाडोज सुक्रि बोम्म गौडा आदि जानपद के क्षेत्र में ख्यात कलाकार हैं । श्री कृष्ण पारिजात, बडगुतिट्ट, यक्षगान, सण्णाटा (धोटे खेल), दोड्डाटा (बडे खेल), आदि नाटकों के प्रकार यहाँ विकासित हुए। अप्पालाल जमखंडी, कौजलगी निंगम्मा, लोकापुर देशपांडे आदि नाटककला के अग्रणी हैं।

©KTBS Not to be republished

कर्नाटक विश्वविद्यालय

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. इस विभाग के तीन ज्ञानपीठ पुरस्कृत साहित्यकारों के नाम लिखिए ।
2. इस विभाग के तीन प्रसिद्ध संगीतकारों के नाम लिखिए।
3. इस प्रदेश के दो प्रसिद्ध नाटक के प्रकारों के नाम लिखिए।

हमारी शिक्षा और स्वास्थ्य

धारवाड, बेलगावि, तथा विजयनगर प्रमुख शिक्ष केंद्र हैं। धारवाड में कर्नाटक विश्वविद्यालय है। हुब्बल्लि में कर्नाटक कानून विश्वविद्यालय है। बेलगावी में रानी चेन्नम्मा विश्वविद्यालय, विश्वेश्वरय्या तांत्रिक विश्वविद्यालय तथा विजयपुर में कर्नाटक राज्य महिला विश्वविद्यालय है।

इस विभाग के जिले साक्षरता की दृष्टी से उन्नतस्थान पर है। बेलगावी, हुब्बल्लि, विजयपुर, बागलकोटे में वैद्यकीय महाविद्यालय तथा आभियांत्रिक (इंजीनियरिंग) महाविद्यालय हैं। 19 वीं शताब्दी के अंत में डिप्टी चन्नबसप्पा के नेतृत्व में कन्नड विद्यालय आरंभ हुए। अनेक निजी शिक्षा संस्याएँ शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। ईसाई संस्थाएँ शिक्षा के प्रसार क्षेत्र में अपार योगदान दे रहे हैं।

©KTBS Not to be republished

स्वास्थ के क्षेत्र में बेलगावी विभाग के जिले काफी प्रगती पर हैं। जनसंख्या वृद्धि की मात्रा भी कम है । माताओं का शिशुओं का मृत्यु दर अधिक है।

महिलाएँ तथा बच्चे एनीमिया (रक्त हीनता) से पीडित हैं। तालुक तथा जिला केंद्रों में सरकारी अस्पाताल खोले गए हैं। ग्रामीण प्रदेशों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैं। गाँवों में स्वास्थ्य उपकेंद्र हैं। वैद्यकीय महाविद्यालय अपने ही निजी अस्पताल चला रहे हैं।

निम्नालिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. बेलगावी विभाग के किस जिले में कर्नाटक कानून विश्वविद्यालय है?
2. ग्रामीण प्रदेशों में सरकार द्वारा स्थापित स्वास्थ्य केंद्र का नाम क्या है?
3. इस विभाग के किस जिले में बागान विश्व विद्यालय है?
4. कर्नाटक राज्य में प्रथम महिला विश्वविद्यालय कहाँ प्रारंभ हुआ?

सांस्कृतिक सम्पदा

यह सांस्कृतिक रुप से सम्पन्न विभाग है। कला, संगीत, नाटक, साहित्य में इस विभाग की अपार देन है। यहाँ के संगीत कार राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तरपर ख्याति प्राप्त है। पंडित भीमसेन जोशी को भारत रत्न की उपाधि प्राप्त है। इस विभाग के तीन साहित्य कारों को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है। हुब्बल्ली को कर्नाटक का वाणिज्यिक केंद्र माना जाता है। ब्याडगी, महालिंगपुर, विजयपुर में क्रमशः मिर्च, गुड तथा अंगूर व्यापार के केंद्र हैं। बेलगावी विभाग वृत्ति रंगभूमि का समृद्ध स्थान है।.

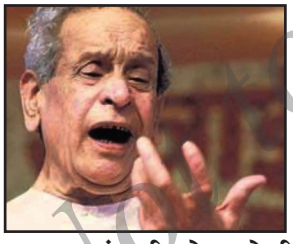

भारतरत्न पं. भीमसेन जोशी

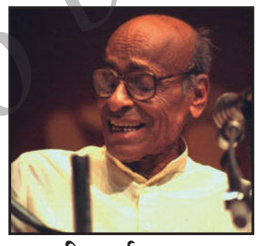

मल्लीकार्जुन मन्सूर

गंगूबाई हानगल

पंचाक्षर गवाई

इस विभाग के ऐतिहासिक स्मारक विश्वविख्यात हैं। बादामी, पट्टदकल्लु तथा ऐहोले के ऐतिहासिक स्मारक कार्नाटक की सांस्कृतिक धरोहर हैं। पर्यटन उद्योग भी तेजी से विकासित हो रहा है। उत्तर कन्नडा जिले का कारवार सुरक्षा क्षेत्र का प्रमुख नौकासेना के रुप में विकासित हो रहा है। इस जिले के घने जंगल प्रदेश वन्य जीवियों

© KTBS Not to be republished

का आश्रय धाम हैं। यह विभाग अनेक नदियों का उद्गम स्थान है। इस विभाग के अनेक जलप्रपात पर्यटकों को अपार संख्या में आकार्षित करते हैं। नदी तटों के बीच भी पर्यटकों के लिए आकर्षणीय स्थल हैं।

स्वतंत्रता सेनानी

पाटील पुट्टप्पा

फ.गु हलकट्टी

जैसा कि कहा जा चुका है बेलगावी विभाग के कित्तूर में 19 वीं शताब्दी में ही अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम छिड चुका था। स्वतंत्रता के लिए मैलार महादेवप्पा ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे राज्य में स्वतंत्रता के लिए विद्रोह सर्वप्रथम बेलगावी विभाग के जिलों से ही आरंभ हुआ था। इस विभाग के हजारों लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेकर कारागृह का दण्ड भी भुगता है । हजारों स्वतंत्रता सेनानियों में प्रमुख हैं - सिद्धप्पा कंबली, आलूर वेंकटराव, ना.सु.हर्डिकर, हर्डेकर मंजप्पा, गंगाधर राव देशपाण्डे, आर.आर.दिवाकर, नाडोजा, पाटील पुट्टप्पा। इन्होंने स्वतंत्रता के लिए लडने के साथ-साथ कर्नाटक एकीकरण के लिए भी संघर्ष किया। इसके साथ अनेक समाज सुधारों से भी वे जुडे रहे वचन पितामह की पदवी से विभूषित डॉ.फ.गु. हलकट्टी ने समाचार पत्र (पत्रकारिता) में भी कार्य किया। मोहरे हनुमंतप्पा, पाटील पुट्टप्पा आदि ने पत्र पत्रिकाओं द्वारा जनता में प्रेरणा जागृत की।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. इस विभाग की किस रानी ने सन् 1824 ये अंग्रेजों के विरुद्ध लडाई लडी?

©KTBS Not to be republished

2. तीन प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के नाम लिखिए।
3. इस विभाग के पत्रकारिता में अपार योगदान देने वाले दो प्रमुख लोगों के नाम लिखिए।

जिलों की विशेषताएँ

इस भाग के प्रत्येक जिलों की विशेषताएँ, वहाँ की कृषि उद्योग, प्राकृतिक संसाधनों द्वारा जानी जा सकती है।

धारवाड जिला

धारवाड कर्नाटक के सांस्कृतिक केंद्र के रुप में जाना जाता है। साहित्य, संगीत, शिक्षा की जन्मभूमी धारवाड है। धारवाड का पेडा मिठाइयों में प्रसिद्ध है। जब यह जिला मुंबई प्रांत का हिस्सा या तब यहाँ की सरकारी भाषा मराठी थी । किंतु अनेक शिक्षाविदों की भूमिका द्वारा 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में यहाँ बहुत से कन्नड विद्यालय प्रारंभ हुए।

टाटा समूह के अनेक उद्योग यहाँ हैं। बोरुका टेक्सटाइल्स कारखाना यहाँ है। मुरुडेश्वर सिरामिक्स कारखाने से कई लोगों को रोजगार मिला है। धारवाड हुब्बल्ली नगरों के बीच उणकल तालाब पडता है। इसे आकर्षक रुप में विकसित किया गया है। धारवाड से केवल कुछ मील दूरीपर कुंदगोल है। जो हिन्दुस्थानी संगीत के विकास में मुख्य भूमिका निभा रहा है। हिंदुस्तानी संगीत में अभूतपूर्व उपलाब्धि प्रात्प करने वाले सवाई गंधर्व का जन्म स्थान कुंदगोल है।

हावेरी जिला

यह जिला सन् 1997 में रचित हुआ। धारवाड जिले को विभक्त कर इस जिले को बनाया गया । यह जिला मूलत: कृषि प्रधान जिला है। यहाँ मजदूरी करनेवालों में कुल 70 प्रतिशत कृषिपर अवलंबित लोग हैं। इस जिले की विशेषता यह है कि यहाँ सुधारित संकर बीज को बडी मात्रा में उगाया जाता है। अनुबंधित (टेके) आधार पर पूर्व निर्धारित दाम पर बीजों को किसान बीजोत्पादक इकाइयों को बेचते हैं। यहाँ के कृषक (किसान) रासायनिक खाद, औषधि सुधरित बीजों का उपयोग कर बीज का उत्पादन करते हैं। आज किसान अधिक संख्या में पारंपरिक बीजों को बोकर जैविक तरीके से कृषि कर रहे हैं।

इस जिले में अनेक ऐतिहासिक मंदिर हैं। बंकापुर का नगरेश्वर मंदिर, मैलार का मैलार लिंगेश्वर मंदिर, चालुक्य काल का सिद्धेश्वर मंदिर काफी लोगों को आकार्षित करता है। गोटगोडी में स्थित उत्सव रॉक गार्डन अंतर्राष्ट्रीय ख्याती प्राप्त कर चुका

©KTBS Not to be republished

है। यहाँ सामान्य सहज रीति की सजीव मूर्तियाँ निर्मित हैं। आधुनिक शिल्पकला के सूत्रों का उपयोग कर इसका निर्माण किया गया है। इसके प्रवर्तक कलाविद् सोलबक्कनवर है।

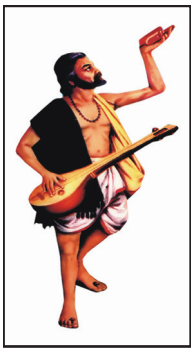

कनकदास

कलाविदों, साहित्यकरों की जन्मभूमि हावेरी है। ऐसा कहा जाता है कि कविवर सर्वज्ञ का जन्म यहीं हुआ था। शिशुनाल शरिफ हावेरी जिले से हैं। कनकदास का जन्मस्थान बाड ग्राम, इसी जिले में हैं। यहाँ राणेबेन्नूर वन्यजीवधाम है। कनकदास की संस्था के क्षेत्र कागीनेले में अनेक मंदिर हैं।

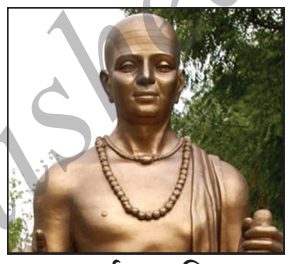

सर्वज्ञ कवि

जिले के कुमारपट्टणम् में ग्रासिम कारखाना है। हरिहर पॉलिफाइबर्स उद्योग यहाँ है। सियोटेक रासायनिक उद्योग यहाँ कार्यरत है। इसमें अनेक मुर्गीपालन क्षेत्र हैं। शीतागार की यहाँ काफी माँग है।

गदग जिला

सन् 1997 में धारवाड जिले को विभक्त कर गदग जिला बना। प्राचीन काल से ही यहाँ कृषि उत्पाद का मुख्य बाजार रहा है। इस जिले का इतिहास 11-12 वीं शतब्दी का माना जा सकता है। चालुक्य राजाओं द्वारा निर्मित वीरनारायण तथा त्रिकुटेश्वर मंदिर कला एवं वास्तुशिल्प अद्भुत है। लगभग दो शताब्दी पूर्व निर्मित जुम्मा मस्जिद यहाँ पर है।

इस जिले में जीव वैविध्य क्षेत्र कप्पतगुड्डा औषधि का वनस्पति उद्यान विकसित करने तथा औषधिवनस्पति को संस्करित करने की इकाई स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है। कर्नाटक विद्युत विभाग ने पवन शक्ति इकाई स्थापित करने का जिम्मा लिया है। वन विभाग ने मागडी पक्षी-धाम को यहाँ विकासित किया है। गदग और बेटगेरी नगर को मिलाकर गदग-बेटगेरी नगरसभा बनाया गया है।

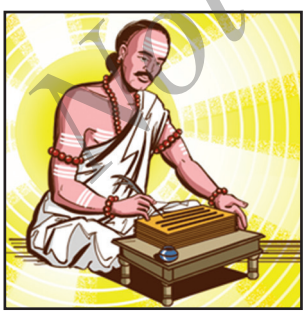

कुमारव्यास

भारत की प्रथम सहकार संस्था सौ वर्ष पूर्व कणागिनहाल में आरंभ हुयी मानी जाती है। सहकार आन्दोलन को आधुनिक रुप ख्यात दिग्गज राजनेता के.एच.पाटील ने दिया। कुमारव्यास ने गदग के वीर नारायण के स्मरण में काव्य की रचना की । इसका ऐतिहासिक रुप से संबंध इसी स्थान से है । कुमारव्यास के 'कर्नाटक भारत कथा मंजरी' ही

© KTBS not to be republished

'कुमारव्यास भारत' के नाम से प्रख्यात है। गदग के तोंटदार्य स्वामीजी समाजसेवा कर रहे हैं।

वीरनारायण मंदिर

इस जिले में ज्वार, मूँगफली, गेहूँ, मूँग, चना आदि खाद्य फसल तथा आम, आडू, अंगूर, अनार, आदि फल उगाए जाते हैं। यह जिला खाद्य पादार्थों का प्रमुख बाजार है। गदग नगर में मुद्रण इकाइयाँ कार्यरत हैं। हुलकोटि में 'दि गदग को आपरेटिव टेक्सटाइल मिल', गाणगापुर में श्री विजयनगर चीनी का कारखाना, श्री सोमेश्वर फार्मर्स को-ऑपरोटिव स्पिनिंग मिल (कृषक सहकार सूत - कताई कारखाना) उत्पादन की दिशा में अग्रसर है।

विजयपुर जिला

विश्वविख्यात गोलगुम्बद विजयपुर नगर में है। इसे फुसफुसाने वाला गुम्बद कहा जाता है। जैसा कि आप जानते हैं कि इस प्रदेश पर आदिलशाही राजवंश का शासन था। दिल्ली के मुगलशासक औरंगजेब के आक्रमण से आदिलशाहि प्रशासन समाप्त हो गया। 1724 में यह निजामों के वश में आया। किंतु सन् 1760 में निजामों से मराठा पेशवा ने इसे अपने वश में कर लिया। इसका भी अंत हुआ और सन् 1818 में यह अंग्रेजों के अधिकार में आ गया । स्वतंत्रता के बाद सन् 1956 में यह कर्नाटक में विलीन हो जया।

©KTBS Not to be republished

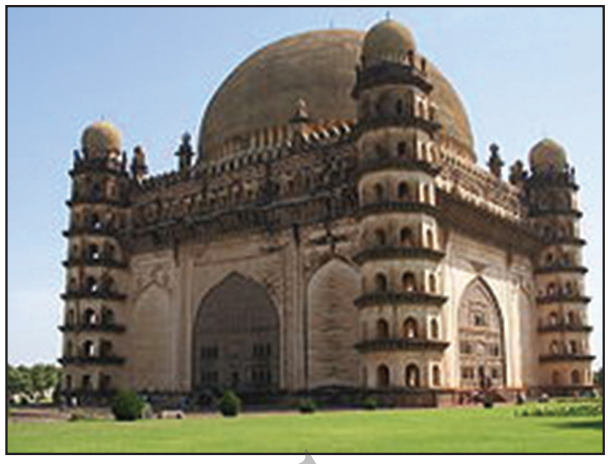

गोलगुंबद, विजयपुर

चालुक्यों के शासन काल में इसका नाम विजयपुर पड़ा। इस प्रदेश पर बार-बार दिल्ली सल्तनत का आक्रमण होता रहा। इसके साथ साथ आदिलशाहि राजाओं को विजयनगर शासकों से भी लड़ना पडता था।

आदिलशाही शासकों ने सन् 1656 में गोलगुम्बद का निर्माण कराया। इस गुम्बद का व्यास पूरे विश्व में द्वितीय बडे गुम्बद में प्रसिद्ध है। एक अन्य भवन (इमारत) इब्राहिमरोजा है। इसकी तुलना कई लोग आगरा के ताजमहल से करते हैं। इब्राहिम आदिलशाह ने अपने शासन काल में हिंदू और मुसलमानों के बीच सौहार्द्रता स्थापित करने का कार्य किया। यह एक प्रसिद्ध कवि था। इसने अपनी रचनाओं में सरस्वती गणपति स्तोत्र वंदना की है।

वचन आन्दोलन के प्रवर्तक बसवण्ण से जुडे अनेक नगर इस जिले में है। बसवण्ण का कार्य क्षेत्र बसवकल्याण है विजयपुर जिले की सीमा पर है। यहाँ मलप्रभा तथा कृष्णा नदी का संगम है। इससे यह कूडलसंगम कहलाया। यहाँ बसवण्ण के ऐक्य का स्थान है।

कुडलसंगम ऐक्य मंटप

© KTBS Not to be republished

विजयपुर जिले का प्रमुख उद्योग कृषि है। यहाँ उत्पन्न खाद्य पदार्थों में ज्वार, मक्का, मूँग, बाजरा आदि प्रमुख है। यहाँ की प्रमुख वाणिज्यिक फसल कपास, गन्ना आदि हैं। यहाँ उत्पन्न तेलीय बीजों में मूँगफली, सूर्यमुखी आदि प्रमुख हैं। इस जिले का वातावरण फलों के उत्पादन के लिए अनुकूल है। यह राज्य प्रमुख रुप से अंगूर उत्पादन का राज्य है। अनार, आड़ू, पपीता, खरबूज आदि यहाँ उत्पादित किए जाते हैं।

विजयपुर शैक्षिक केंद्र के रुप में विकसित हो रहा है। यहाँ कर्नाटक राज्य महिला विश्वविद्यालय है। यहाँ कृषि महानिद्यालय है। अनेक अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) और वैद्यकीय महाविद्यालय यहाँ हैं।

बागलकोट जिला

विजयपुर जिले को विभक्त कर 1997 में बागलकोटे जिले की रचना की गई। इस जिले में चालुक्यों की राजधानी बादामी है। बादामी, ऐहोले तथा पट्टदकल्लु को वास्तुशिल्प की प्रयोग शाला कहा जा सकता है। यहाँ गुफाओं को काटकर मंदिर बनाए गए हैं। इसे विश्व ने परम्परा के केंद्र के रुप में मान्यता दी है। इस जिले का बनशंकरी मंदिर और शिवयोग मंदिर विख्यात है।

पल्लव, विजयनगर राजा, आदिलशाहि राजवंश, निजाम, मराठा तथा अंग्रेजों ने यहाँ शासन किया। इस जिले का गुलेदगुड्ड रेशमी वस्त्र बुनने के लिए प्रसिद्ध है।

अबूबकर् दर्गा, जमखंडी

बीलगी मुहर्रम त्योहार के आचरण के लिए प्रख्यात है। प्रसिद्ध हिन्दुस्तानी गायिका और अभिनेत्री अमीरबाई कर्नाटकी बीलगी नगर से हैं। इलकल का विजयमहंतेश मठ

©KTBS Not to be republished

हजारों भक्तों को आकार्षित करता है। यहाँ का हजरत सैय्यद मुर्तुजा खाद्री दरगाह प्रसिद्ध है । इलकल की साडियाँ यहाँ की महत्वपूर्ण उत्पाद हैं। जमखंडी के पटवर्धनों के वश में स्थित राजसंस्थान है। यहाँ का अबूबकर दरगाह प्रसिद्ध है।

इस जिले के रबकवि बनहट्टी बुनकरों का केंद्र है। यहाँ हथकरघा तथा विद्युत करघों द्वारा बुनाने का कार्य होता है।

ऐहोले, देवालय

इस जिले में बहनेवाली तीन नदियाँ कृष्णा, मलप्रभा तथा घटप्रभा है। महाराष्ट्र में कोयना बाँध निर्मित होने के बाद इन नदियों के पानी की मात्रा कम हो गयी। इससे अकाल खानाबदोशी (अकाल के कारण स्थान छोड जाना) गरीबी ने यहाँ के निवासियों के जीवन को बदतर बना दिया है। कृष्णा नदी पर पुल या बाँध बनाने के लिए लोगों ने सरकार पर दबाव डाला। अंत में इस विभाग के किसानों ने सिद्धू नामगौडा के नेतृत्व में कृष्णा नदी के तट पर कृषक संघ संगठित कर धन और सामग्री संग्रह की और श्रमदान कर चिक्कपडसलगी नामक स्थान पर बैराज (पुल) निर्मित किया। यह देश का प्रथम निजी बैराज है। लालबहादूर शास्त्री के नाम पर आलमट्टी बॉध प्रसिद्ध है।

इस जिले में प्राप्त खनिजसम्पदा चूनापत्थर, ग्रेनाइट पत्थर, लालग्रेनाइट, डालमाइट, आदि हैं। यहाँ अनेक चीनी के कारखाने, सीमेंट कारखाने हैं।

बेलगावी जिला

कर्नाटक का प्रसिद्ध सीमांत जिला बेलगावी है। यह गोवा तथा महाराष्ट्र राज्य के बगल में पडता है। इस जिले का प्राचीन नाम वेणुग्राम है, अर्थात बाँस का गाँव। इस जिले का प्राचीन गाँव हलसी है। कदंबों की एक शाखा ने इसे अपनी राजधानी बनाया था। इस प्रदेश पर चालुक्यों, राष्टकूटों, देवगिरि के यादवों, दिल्ली सुल्तानों का

© KSBP Not to be republished

शासन था। कित्तूर रानी चेन्नम्मा को सन् 1824 में अंग्रेजों ने हराया और इसे अपने वश में कर लिया, और मुंबई प्रांत में मिला दिया। इससे इस जिले में मराठों का प्रभाव बढा। फलस्वरुप आज भी यहाँ महाराष्ट्र के साथ सीमा विवाद चल रहा है। इस जिले में कृष्णा नदी के तट पर स्थित यडूरु का वीरभद्र मंदिर प्रसिद्ध है। अंगेजों ने यहाँ अपनी एक सैनिक टुकडी की छावनी बनायी थी।

इस जिले का गोकाक जलप्रापात बडा आकर्षक है। गोकाक मिल से अनेक लोगों का उद्योग मिला है। शेडबाल का 12 वीं शताब्दी में निर्मित शांतिनाथ मंदिर भक्तों को आकर्षित करता है। यल्लम्मा का पहाड प्रसिद्ध रेणुका एल्लम्मा का स्थान है। यहाँ जिला शैक्षिक केंद्र के रूप में विकासित हो रहा है। यहाँ रानी चेन्नाम्मा विश्वविद्यालय, विश्वेश्वरय्या तांत्रिक विश्वविद्यालय है। यहाँ अनेक अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) वैद्यकीय महाविद्यालय हैं।

यह जिला राज्य का प्रमुख औद्योगिक केंद्र हैं। यहाँ चीनी के कई कारखाने हैं। हिडाल्को उद्योग, कपास मिल, चमडे का उद्योग, टाटा की विद्युत इकाई, हिंदुस्तान वनस्पति दूध की इकाई यहाँ हैं।

चीनी का कारखाना

कर्नाटक सरकार ने बेलगावी में बेंगलूरु की विधानसौध के समान बृहत् सुवर्ण सौध का निर्माण किया है। यहाँ वर्ष में एक बार सरकार विधानमण्डल अधिवेशन चलाती है।

उत्तर कन्नड जिला

कर्नाटक का प्रासिद्ध तटीय जिला उत्तर कन्नड है। इसका केंद्रस्थान कारवार है। इस जिले के स्वरुप के कारण ही भारत सरकार ने यहाँ बृहत नौका स्थान 'सी बर्ड' की स्थापना की है। इस जिले के कुल विस्तार का 70 प्रतिशत भाग वनप्रदेश है। यहाँ के लोगों का मुख्य उद्योग मत्स्यपालन है। इस जिले का पर्यटन सामर्थ्य भी

©KTBS Not to be republished

उत्तम है। यहाँ अनेक आकर्षणीय जलप्रपात हैं। इस जिले को भौगोलिक विशेषताओं के आधारपर दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम तटीय प्रदेश कारवार, अंकोला, कुमटा, होन्नावर तथा भट्कल भाग हैं तो दूसरा मलेनाडु (पर्वतीय) प्रदेश है। इसमें शिरसी, सिद्दापुर, यल्लापुर, हलियाल, जोयिडा, तथा मुंडगोड आते हैं।

कैगा विद्युत केंद्र

इस जिले में वार्षिक वर्षा 3000 मिलीमीटर तक होती है। यहाँ सदाबहारी वन है।

इस जिले का बनवासी कदम्बों की राजधानी थी। इस प्रदेशपर कदम्ब, चालुक्य, राष्ट्रकूट, होयसल, विजयनगर राजा, मराठा तथा अंग्रेजों का शासन था। कहते हैं कि प्राचीन काल से यह ल्यापार का केंद्र भी था। मोराको का प्रवासी इबन बटूट के यहाँ निवास के बारे में बताया जाता है। यह जिला सन् 1750 में मराठों के अधिकार में था। तत्पश्चात् यह मैसूरु संस्थान के कब्जे में आया। किन्तु सन् 1799 में इसे अंग्रेजों नें अपने वश में ले लिया । अंग्रेजों ने इसे मद्रास प्रांत का हिस्सा बना दिया। किंतु सन् 1860 में इसे मुंबई प्रांत में मिला लिया।

प्राचीन काल से यह अरब, डच, पुर्तगालियों का व्यापार केंद्र था। काली मिर्च, लौंग, दालचीनी आदी मसाला चीजों का व्यापार सामग्री थे। नोबेल पुरस्कार विजेता कवि रवींद्रनाथ ठाकुर 1882 में यहाँ आए थे। अपनी आत्मकथा में अपने कारवार आने के बारे में एक अध्याय में उल्लेख किया है। पंप महाकवि से वर्णित बनवासी इसी जिले में है। कैगा विद्युत केंद्र यहाँ है।

©KTBS not to be republished

सी बर्ड नौकादल

इस जिले में उगायी जाने वाली प्रमुख फसल गन्ना, कोक, काजू, धान, केला, अनानस, आडू आदि हैं। इस जिला के प्रमुख बंदरगाह भटकल, होन्नावर, कारवार, तदडी, बेलीकेरी आदि हैं। यहाँ कन्नड के साथ साथ कोंकणी भाषा का भी चलन है।

इस जिले में बहने वाली प्रमुख नदियाँ अघनाशिनी, शरावती, काली, गंगावती आदि हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. इस जिले में औसत होने वाली वर्षा की मात्रा कितनी है?
2. इस जिले के प्रमुख बंदरगाहों के नाम लिखिए ।
3. भारत सरकार द्वारा स्थापित यहाँ की नौका सेना का नाम क्या है?
4. इस जिले में बहने वाली नदियों के नाम लिखिए।
5. इस जिले में कन्नड भाषा के बाद अत्याधिक बोली जाने वाली एक अन्य भाषा कौन सी है?

क्रिया कलाप

1. कर्नाटक के तीस जिलों की सूची बनाइए। जिलानुसार कर्नाटक का मानाचित्र संग्रह कीजिए। प्रत्येक जिले के पर्यटन केंद्रों की सूची बनाइए। इन सब की संक्षित्प टिप्पणी बनाकर रपट तैयार कीजिए।
2. कर्नाटक के विविध जिलों के वचनकारों से संबंधित स्थानों की सूची बनाइए। वचनकारों की सूची तैयार कीजिए। इन सब को मिलाकर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

*****

©KTBS Not to be republished

पाठ 2	दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश

पाठ परिचय

इस पाठ में दक्षिण भारत पर शासन किए शातवाहन, चोल, राष्ट्रकूट, कल्याण चालुक्य और होय्सल राजवंशों के प्रसिद्ध राजाओं के बारे में बताया गया है। इन वंशों का देन इतिहास में कला, वास्तुशिल्प, धर्म, साहित्य, शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक आदी क्षेत्रों में क्या है। ये सब का विवरण दिया है।

सामर्थ्य

1. गौतमिपुत्र शातकर्णि और शातवाहनों की देन का स्मरण करना ।
2. मयूरवर्म का साहस और कदंबों के उपहार का प्रशंसा करना ।
3. दुर्विनीत और गंगों की देन का स्मरण करना ।
4. पुलिकेशी और चालुक्यों की देन के बारे में समझना ।
5. चोल और पल्लव राजाओं के सैनिक और सांस्कृतिक देन को स्मरण करना ।
6. राष्ट्रकूट राजाओं के सैनिक और संस्कृतिक साधनाओं के बारे में जानना ।
7. कल्याण चालुक्य और होय्सलों के काल का कला, वास्तु-शिल्प का सौंदर्य को पहचानना ।

©KTBS Not to be republished

शातवाहन

मौर्य के बाद दक्षिण भारत में शासन किए प्रमुख राज वंश शातवाहन है। बताया जाता है कि शातवाहन कन्नड मूल के थे। इस वंश के राजाओं का नाम कन्नड के हैं। (उदा : हाल, पुलुमावि, नागनिक आदी) शातवाहन का राजधानी महाराष्ट्र का पैठण अथवा प्रतिष्ठान। इस वंश का श्रेष्ठ राजा गौतमी पुत्र शातकर्णी था। यह अवनती के कगार पहुँचा शातवाहन वंश को फिर से प्रवर्धमान किया।

©KTBS Not to be republished

गौतमीपुत्र शातकर्णी

गौतमी पुत्र शातकर्णी ने शक, यवन, पहलव नामक विदेशी राजवंशों को हराया। शकों का नहपाण के सिक्कों पर अपना नाम का पुनर्मुद्रण किया। कोंकण, सौराष्ट्र, मालवा, बिरार आदी प्रदेशों में वह अपना राज्य विस्तार किया था । वह 'त्रि समुद्रतोय पीतावाहन' (तीन समुद्रों का पानी पिया हुआ घोडों का सवारी करनेवाला) उपधि पाया था।

शातवाहनों की देन

धर्म : शातवाहन वैदिक धर्म का पालन करते थे । शिवमोग्गा जिले का तालगुंद का प्रणवेश्वर की पूजा शातवाहन करते थे। ऐसे शासनों से पता चलता है। ये बौद्धों को भी प्रोत्साहन दिया । नासिक, कार्ले, कन्हेरी, अमरावती आदी स्थानों में बौद्ध धार्मिक केंद्रों का निर्माण किया। उनके काल में सूर्य, विष्णु, गणेश आदी देवताओं की आरधना रूढी में था ।

साहित्य और शिक्षण : 'प्राकृत' भाषा सातवाहन के शासन भाषा था। उनके शासन प्राकृत और ब्रह्मी लिपी में हैं। हाल नामक राजा ने 'गाथा सप्तसती' कृति की रचना प्राकृत भाषा में ही किया है। गुणाढ्य ने 'वड्डकथा' और सर्ववर्म ने 'कातंत्र व्याकरण' की रचना की शिक्षा के लिए अग्रहारों की स्थापना हुई। उनमें शिवमोग्गा जिले का तालगुंद (स्थान कुंदूरु) प्रमुख शिक्षा केन्द्र था।

वास्तु शिल्प : वास्तुशिल्प को शातवाहनों की देन अपार है। उनके काल में चैत्य, विहार और स्तूपों का निर्माण हुआ। बौद्धों के प्रार्थना मंदिर को 'चैत्य' कहते हैं और बौद्ध भिक्षुओं का वासस्थान ही विहार है।

शातवाहनों के काल में भारी चट्टानों को काटकर चैत्य और विहारों का निर्माण किया गया। महाराष्ट्र का कार्ले में बहुत बडा और सुंदर चैत्य है । चैत्यों के बाजू में ही चट्टानों को काटकर विहारों को बनाया गया है। आंध्रप्रदेश का अमरावती में अमृतशिला का स्तूप कलात्मक है। कर्नाटक का कलबुर्गी जिले के कनगनहल्ली (सन्नती के पास) और उत्तर कन्नड जिले का बनवासी में शातवाहन काल का वास्तुशिल्प के अवशेषों को देख सकते हैं।

कनगनहल्ली स्तूप के अवशेष

© KTBS not to be republished

व्यापार और शहर : शातवाहनों का काल आर्थिक रुप से समृद्धकाल था । इस का मुख्य कारण यह था कि शहरों के अंदर और बाहर होनेवाले व्यापार कार्य कलाप। साम्राज्य के कई शहर व्यापारी केंद्र थे। वैसे शहरों को निगम कहते थे । महाराष्ट्र के पैठण, कार्ले, कह्हेरी, जुन्नार और नासिक, आंध्रप्रदेश के धन्यकटक (धरणी कोटे) और उत्तर कन्नड जिले का वैजयंती (बनवासी) आदी प्रमुख निगम थे ।

शहरों में श्रेणी नामक संघ थे। व्यापारी लोग और अलग-अलग उद्योग के लोग अपने हित के लिए बनाया गया संघ को ही श्रेणी कहते थे। उदा - धानिक श्रेणी धान व्यापारियों का संघ था। इसी तरह कुम्हार, बुनकर, कृषिक, लोहार, आदी अपने अपने श्रेणी बनाए थे । हर श्रेणी का मुखिया रहता था, उसे श्रेष्ठी य शेट्टी कहते थे। श्रेष्ठी अमीर रहते थे। ऐसा एक श्रेष्ठी ने कार्ले का चैत्य बनवाया। बैलगाडी, गधा, घोडा आदी शहरों के अंदर सामान ले जाने का साधन थे ।

साम्राज्य के पूर्व और पश्चिम तटीय बन्दरगाहों द्वारा विदेशी व्यापार चलता था। शातवाहन के काल में युरोप का रोमन् साम्राज्य के साथ भारत का वाणिज्य संबंध अच्छा था।

©KTBS Not to be republished

सामान ले जानेवाला बैलगाडी (कनगननहल्ली का उभरा शिल्प)

आप समझिए

1. बनवासी वैजयंती नाम से शातवाहन का प्रांतीय राजधानी था । शातवाहन के काल में प्राकृत जनप्रिय भाषा थी।
2. अंदाजन 23000साल पहले प्रारंभ हुआ शातवाहनों का शासन चार शतमानों तक रहा।

I. खाली जगहों को सूक्त शब्द से भरिए।

1. शातवाहनों के काल में शिक्षा के लिए ..... स्थापित किया।
2. शातवाहनों का राज्य भाषा ..... था।
3. व्यापारियों के हित-रक्षा के लिए बनाए संघ को ..... कहते थे।
4. गौतमी पुत्र शातकर्णी ने ..... सिक्कों पर अपना नाम मुद्रित करवाया।

II. नीचे के प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. शातवाहन वंश का श्रेष्ठ राजा कौन था?
2. गौतमी पुत्र शातकर्णी का उपाधि क्या था ?
3. चैत्य किसे कहते हैं?
4. हालराज से रचित कृति का नाम बताइए।
5. शातवाहन काल के प्रमुख निगम शहरों का नाम बताइए ।
6. श्रेणी किसे कहते हैं ?

III. समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।

1. शातवाहन के काल का व्यापार और शहरों के बारे में चर्चा कीजिए।

चर्चा करा

- शातवाहन के काल का आर्थिक अभिवृद्धि के कारण चर्चा करके उन अंशो को बताइए।

©KTBS Not to be republished

कदंब

कदंब वंश कन्नड का पहला राजघराना था। वे शातवाहनों के बाद वायव्य कर्नाटक में पाए गए। कदंब वंश का स्थापक मयूरवर्म था। दक्षिण कन्नड जिले का बनवासी कदंबों की राजधानी थी । इस वंश का लांछन सिंह था।

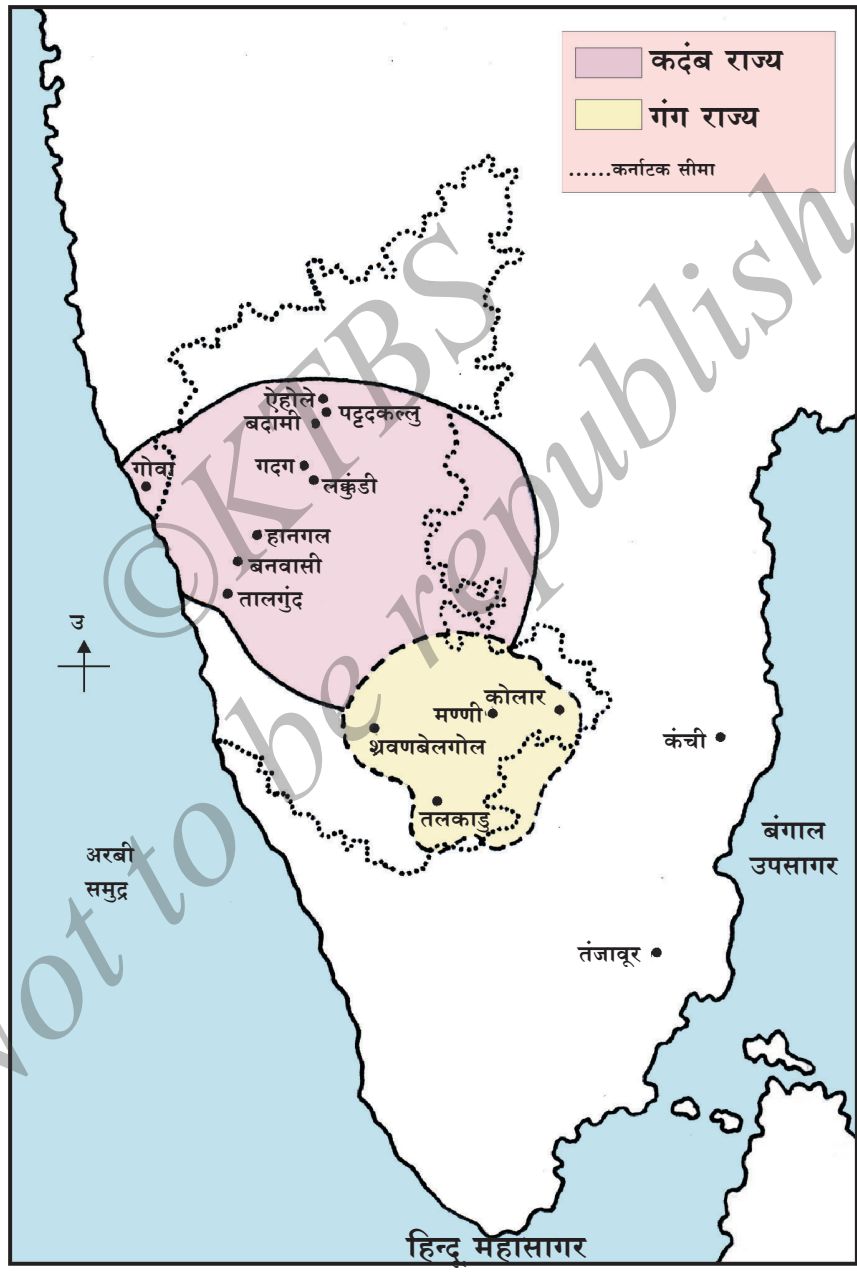

©KTBS Not to be republished

मयूर वर्म

ब्राह्मण मयूरवर्म अध्ययन के लिए जब कंची गया था तब पल्लव अधिकारी से उसका अपमान हुआ था। यह अपमान उससे सहा नहीं गया। इसलिए वह ब्राह्मणत्व छोडकर क्षत्रिय बनने चला। पहाडी लोगों का संघटन करके पल्लवों पर हमला किया। अंत में पल्लव राजा उसका राजत्व मानकर कर्नाटक के कुछ प्रदेश मयूरवर्म को दिया। मयूरवर्म ने चित्रदुर्ग के नजदीक चंद्रवल्ली के पास का तालाब को दुरुस्त करवाया।

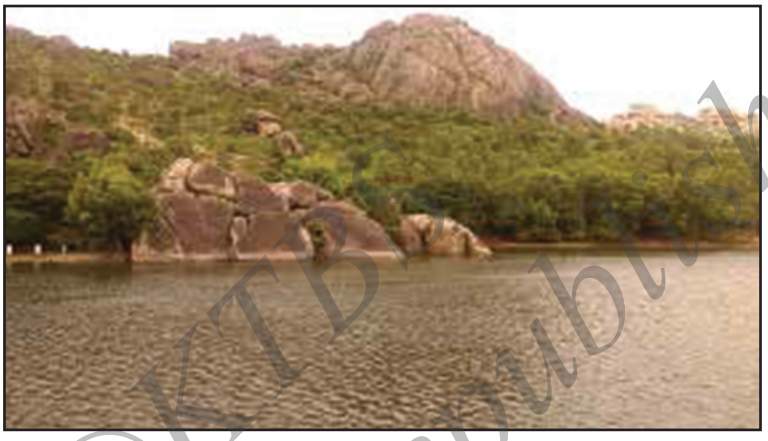

चंद्रवल्ली तालाब

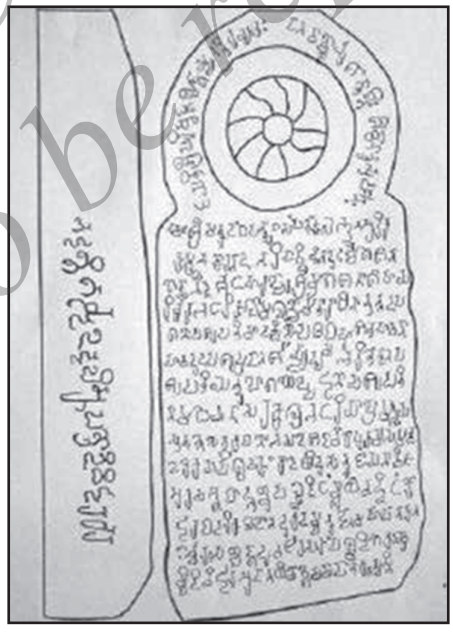

हल्मिडी शासन

©KTBS not to be republished

तालगुंद का प्रणवेश्वर

मयूरवर्म के बाद आए राजाओं में काकुस्थवर्म प्रसिद्ध था। हल्मिडी शासन इसके काल का है। बताया जाता है कि हल्मिडी शासन कन्नड का पहला शासन है। यह भी बताया जाता है कि काकुस्थवर्म का विवाह उत्तर भारत का प्रसिद्ध गुप्त वंश की लडकी से हुई थी।

कदंबों की देन

धर्म : कदंब शैव थे। तालगुंद का प्रणवेश्वर और बनवासी का मधुकेश्वर लिंग कर्नाटक का प्राचीन शिवलिंग हैं। बौद्ध, और धर्मों का गौरव करके कदंब धर्म सहिस्णुता दिखाई।

साहित्य और शिक्षा: कदंब काल में प्राकृत, संकृत और कन्नड प्रचलित थे। कदंबों के ज्यादातर शासन संस्कृत में हैं। इनके काल में जनभाषा कन्नड था और वह साहित्यिक रुप ले रहा था। इस परिवर्तन को हल्मिडी शासन में देख सकते हैं। कदंबों के काल में अग्रहार और घटिकास्थान शिक्षा केंद्र थे। तालगुंद इनके काल का अग्रहार था और कंची प्रुसिद्ध घटिक स्थान था।

वास्तूशिल्प : हलसी का जैन बसदी, कादरोली (बेलगावी जिला) शंकरदेव मंदिर, बनवासी का मधुकेश्वर देवालय आदी इनके काल का वास्तुशिल्प रचनाएँ हैं।

©KTBS Not to be republished

मधुकेश्वर देवालय

नए पद

अग्रगार : ब्राह्मणों का आवास स्थल

घटिका स्थान : ये उच्च शिक्षा केंद्र । आज के विश्वविद्यालय के सामान थे।

I. खाली स्थानों को सूक्त शब्द से भर्ती किजिए।

1. कन्नड का पहला राज वंश .....
2. काकुस्थवर्म का विवाह उत्तर भारत का ..... वंश की लडकी से हुआ था।

II. नीचे के प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए ।

1. कदंब वंश का स्थापक कौन था?
2. कदंब का राजधानी का नाम क्या था ?
3. कन्नड का पहला शासन कौन सा था?
4. कदंब काल के शिक्षा केंद्रों के नाम बताइए।

कार्य कलाप :

कर्नाटक के विश्वविद्यलय और वे कहाँ स्थित हैं? उनकी सूची बनाइए।

©KTBS Not to be republished

गंग

वायव्य कर्नाटक में कदंब शासन करते वक्त दक्षिण कर्नाटक में गंग शासन कर रहे थे। कृषि मूल के गंग कर्नाटक में दीर्घ काल शासन किया। लगभग 650 वर्ष काल शासन किया । कोलार (कुवलालपिुर) और तलकाडु(तलवनपुर) इनकी राजधानी थी। इस वंश का स्थापक कोंगाणिवर्म था। मदगज इनके लांछन था। गंगों में दुर्विनीत प्रसिद्ध राजा था।

गंगों का लांछन

दूर्विनीत

प्रायः डेढ हजार साल पहले शासन किया दुर्विनीत वीर और विद्वान् था। उसकी माँ जेष्ठादेवी पुन्नाट राजघराने की थी। उस वंश में पुत्र संतान न होने के कारण दुर्विनीत ही वारिस बना। पास-पडोस के शत्रुओं को हराकर गंग राज्य का विस्तार किया। सिंचाई के लिए सागर जैसे कई तालाब बनवाया।

संस्कृत और कन्नड दोनों भाषाओं में पारंगत दुर्विनीत संस्कृत कवि भारवी का 'किरातार्जुनीय' कृति का 15 वी सर्ग को भाष्य (विमर्शा) लिखा। गुणाढ्य का 'वड्डकथा' का संस्कृत में भाषांतर किया । कन्नड का गद्य लेखकों में दुर्विनीत भी एक है, ऐसे 'कविराज मार्ग' में श्रीविजय बताता है। 'कविराजमार्ग' कन्नड में पहला उपलब्ध ग्रंथ है।

दुर्विनीत के बाद आए श्री पुरुष, राचमल्ल आदी प्रमुख हैं। श्रीपुरुष भी दुर्विनीत की तरह कई तालाबों का निर्माण किया। उनमें कुणिगल् दोड्डकेरे प्रसिद्ध है। 'मूडल् कुणिगल् केरे नोडोरिगोंदैभोग मूडि बर्ताने चंदिराम'... प्रसिद्ध जानपद गीत इस तालाब को देखकर ही रचना किया गया है। श्रीपुरुष के बाद राचमल्ल आया। विश्वप्रसिद्ध गोम्मटेश्वर मूर्ति को राचमल्ल का प्रधानी चावुंडराय ने हासन जिले के श्रवणबेलगोल में निर्माण करवाया । अपने नाम से वहाँ एक बसदी को भी बनवाया ।

©KTBS Not to be republished

कुणिगल तालाब

गंगों की देन

धर्म : गंग राजाओं ने जैन और वैदिक दोनों धर्मों को प्रोत्साहन दिया । कुछ राजा वैष्णव मत भी अपनाए थे। गंग राज्य में बौद्ध, कालामुख और लोकायुत पंथ भी थे ।

साहित्य : गंग राजाओं में कई विद्वान् थे । दूर्विनीत संस्कृत और कन्नड दोनों भाषाओं में विद्वान था। श्रीपुरुष ने 'गजशास्त्र' कृती की रचना किया है। गंगो का प्रधानी चावुंडराय ने चावुंडराय पुराण कृति की रचना कन्नड भाषा में किया है।

वास्तुशिल्प और मूर्तिशिल्प: वास्तुशिल्प और मूर्तिशिल्प को गंगो की देन अपार है। मण्णे का (नेलमंगल तालूक) कपिलेश्वर, तलकाडु का पातालेश्वर, कोलार का कोलाराम का मंदिर, श्रवणबेलगोल का 58 फुट ऊँचा एकशिला गोम्मटेश्वर की मूर्ति इनके मूर्तिशिल्प को दिया अनमोल देन हैं।

नए पद

1. **कालामुख :** यह एक उग्र शैवपंथ था । इस पंथ के लोग मुँह पर काला स्याही लगाते थे। इसलिए यह नाम आया होगा।
2. **लोकायुत :** इन्हे चार्वाक भी कहते थे । इस पंथ के लोग भौतवादी होने पर भी वास्तव जिन्दगी पर विश्वास रखते थे।

©KTBS Not to be republished

I. रिक्त स्थानों को सूक्त शब्द से भरिए ।

1. दुर्विनीत की माँ जेष्ठादेवी ..... राजघराने की थी ।
2. श्रीपुरुष ने ..... कृति की रचना किया है।

II. नीचे दिए गए प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए ।

1. गंगों की राजधानी का नाम बताइए।
2. दुर्विनीत किन भाषाओं का विद्वान् था?
3. कुणिगल् तालाब का निर्माण किस राजा ने किया?
4. गोम्मटेश्वर की मूर्ति कहाँ है? उसका निर्माण किसने किया?

कार्यकलाप

- मूडल् कुणिगल्ल केरे जानपद गीत का संग्रह करके सुश्राव्य रुप से गाइए।
- तालाबों के उपयोगों की सूची बनाइए।
- समय के उपयोगों की सूची बनाइए।
- समय मिलने पर श्रवणबेलगोल जाकर, वहाँ की कला, वास्तुशिल्प देखकर अपने अनुभवों को प्रबंध रुप में लिखिए।

बादामी चालुक्य

कर्नाटक में बादामी चालुक्य अंदाजन दो शतमानों तक वैभव से राज्यभार किया। बागलकोट जिले का बादामी (वातापी) चालुक्यों की राजधानी थी। वराह चालुक्यों का लांछन था। इनमें इम्मडी पुलिकेशि प्रसिद्ध राजा था।

इम्मडी पुलिकेशि

बादामी चालुक्यों में इम्मडी पुलिकेशि पराक्रमी राजा था। उसका राज्य पर चाचा मंगलेश कब्जा कर रखा था। इसलिए युद्ध करके जन्मदत्त उसे ही मिलनेवाला राज्य को चाचा मंगलेश से छीनना पडा। बाद में राज्य विस्तार करने यात्रा आरंभ किया। कदंब और गंग पुलिकेशि के शरण में आए। सामंत राष्ट्रकूटों की दंगा को दमन किया । बाद में उत्तर का लाट, मालव, गुर्जर को हराके गुजरात तक आगे बढा। पूर्व में वेंगी, कलिंग, कोसल के राजा पुलिकेशि के शरण में आ गए। दक्षिण में कंची के पल्लवों को हराया। कावेरी नदी पार करके चोल, केरल और पांड्य को अपना लिया। पुलिकेशि उत्तर

©KTBS Not to be republished

पथेश्वर हर्षवर्धन के साथ जो युद्ध किया वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। नर्मदा नदी किनारे हुआ इस युद्ध में पुलिकेशि ने हर्षवर्धन को हरा दिया। इस जीत के फलस्वरूप पुलिकेशि को 'परमेश्वर' 'दक्षिणपथेश्वर' उपाधी मिले। इस तरह चारों ओर विजययात्रा पूर्ण करके पुलिकेशि का राज्य अरब्बी समुद्र से बंगाल उपसागर तक फैल गया।

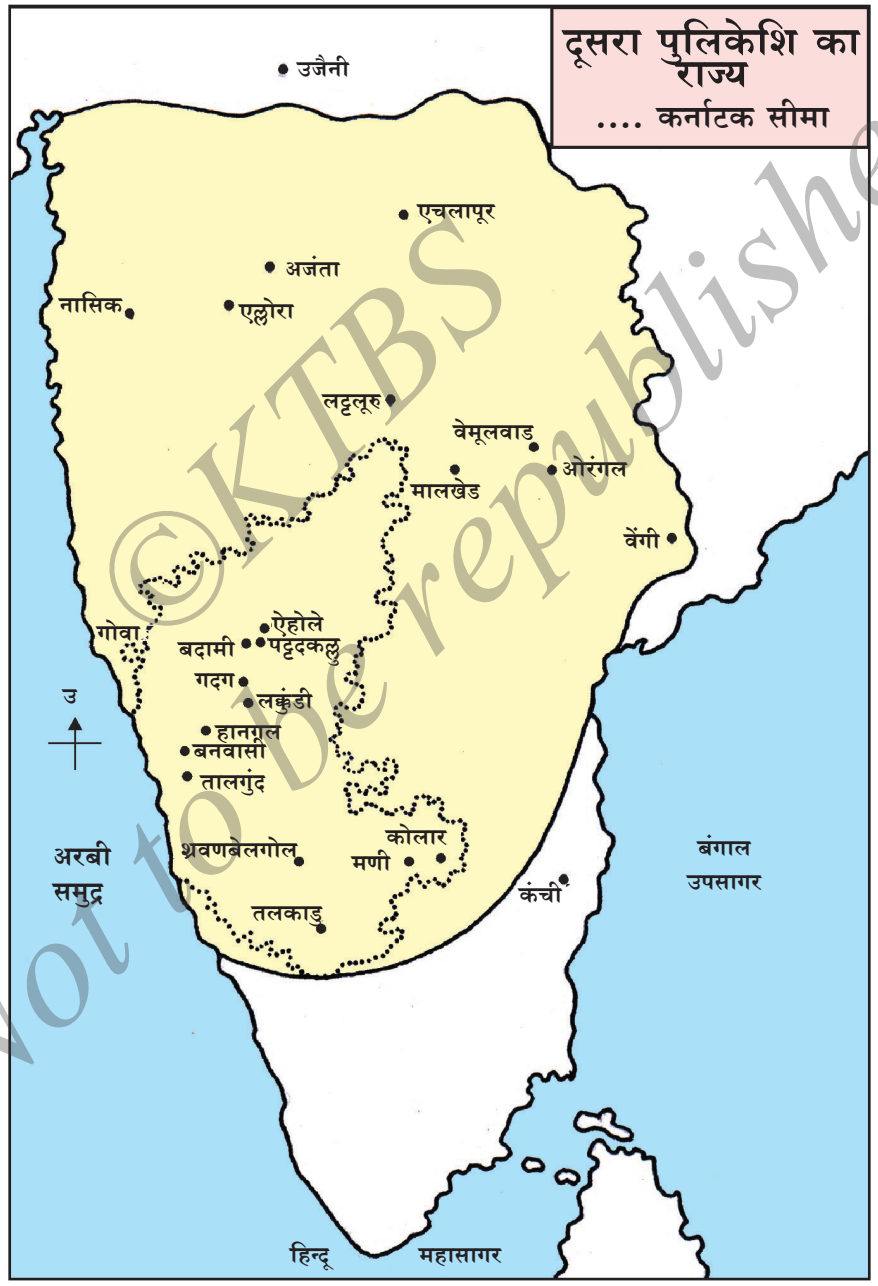

©KTBS Not to be republished

पुलिकेशि की कीर्ति भारत के बाहर भी फैला था। वह पर्शिया देश का राजा खुस्रु के पास एक नियोग भेजा था। इसके बदले खुस्रु ने अपना राजदूत को पुलिकेशि के आस्थान भेजा था। बताया जाता है कि अजंता की पहली गुफा के एक वर्णचित्र में पुलिकेशि खस्रु के राजदूत का स्वागत कर रहा है।

वास्तुशिल्प और शिल्पकला को बादामी चालुक्यों की देन

बादामी, ऐहोले, पट्टदकल्लु, महाकूट बादामी चालुक्यों के प्रमुख वास्तुशिल्प केन्द्र हैं। बादामी, ऐहोले में उनके काल के गुहालय हैं । ऐहोले के देवालयों में लाड्खान देवालय, दुर्ग (सूर्य) देवालय, मेगुति देवालय, हुच्चिमल्लि देवालय मुख्य हैं। ऐहोले को देवालयों के वास्तुशिल्प का पलना कहते हैं। बादामी के गुहालय के नटराज और विष्णु का उभारा शिल्प अद्भुत हैं।

बादामी का गुहालय

© KTBS not to be republished

आप समझिए

ऐहोले के देवालयों में लड्खान् देवालय सबसे पुराना देवालय है। यह एक शिवालय है। कुछ साल पहले लाड्खान नाम का संत यहाँ रहने से यह नाम आया है। यहाँ का सूर्य देवालय को दुर्ग देवालय कहते हैं । यह देवालय किले के आवरण में रहने के कारण इसे दुर्ग देवालय कहते है। किला को दुर्ग भी कहते हैं।

पट्टदकल्लु के देवालयों में विरुपाक्ष देवालय सुंदर और बडा देवालय है। यहाँ का मल्लिकार्जन देवालय और एक प्रमुख देवालय है। बताया जाता है कि पट्टदकल्लु में चालुक्य राजाओं का राज्याभिषेक होता था। आज यह विश्व परंपरा स्थानों की सूची में है।

शेषनाग पर बैठा विष्णु बादामी गुहालय

© KTBS Not to be republished

नटराज, बदामी गुहालय

विरुपाक्ष देवालय, पट्टदकल्लु

नए पद

विश्व परंपरा स्थान विश्व संस्था ने घोषणा किया है कि दुनिया के कुछ अपूर्व, अमूल्य स्थान विश्वपरंपरा के हैं। इन्हें विशेष संरक्षण दिया जाता है। कर्नाटक में हंपी और पट्टदकल्लु इस सूची में आते हैं।

I. नीचे दिए प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. चालुक्यों की राजधानी का नाम बताइए। वह किस जिले में है?
2. पुलिकेशि ने उत्तर भारत का किस राजा को हराया?
3. चालुक्यों का मुख्य वास्तुशिल्प केंद्रों के नाम बताइए।
4. देवालयों के वास्तुशिल्प का पलना किस स्थान को कहते हैं?

II. समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए।

1. 'इम्मडी पुलिकेशि के सैनिक बल' विवरण दीजिए।

III. नीचे के 'ए' और 'बी' सूची के विषयों को जोडकर लिखिए।

ए	बी
ऐहोले	विश्वपरंपरा स्थान
पट्टदकल्लु	चालुक्यों का लांछन
वराह	देवालयों के वास्तुशिल्प का पलना

©KTBS Not to be republished

कार्य कलाप

- भारत के विश्वपरंपरा में शामिल स्थानों का चित्रों के साथ सूची बनाइए । संक्षिप्त विवरण दीजीए।
- चालुक्य देवालयों के चित्र संग्रह करके विवरणों के साथ एक आल्बम् बनाइए।

पल्लव

पल्लव राजवंश दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवंश है। तमिलनाडु पल्लवों की राजधानी थी। वे प्रायः 300 सालों तक शासन किया। पल्लवों में नरसिंहवर्म श्रेष्ठ राजा था।

नरसिंह वर्म

नरसिंहवर्म को महामल्ल उपधि था। यह पराक्रमी था। चालुक्य राज्य पर हमला करके इम्मडी पुलिकेशी को हराकर बादामी जीत लिया। इस विजय का संकेत स्वरुप 'वातापिकोंड' उपाधि धारण किया। नरसिंहवर्म मामल्लपुर (आज का महाबलिपुर) रेवु नगर को सुंदर शहर के रुप में अभिवृद्धि किया।

शिल्पकला को पल्लवों की देन

©KTBS Not to be republished

शिल्पकला को पल्लवों की देन अपार है। महाबलिपुरम् में नरसिंहवर्म के काल का 7 शिला रथ हैं। जगत् प्रसिद्ध इन्हें एक-एक शिला में उत्कीर्ण किया है। महाबलिपुर में गंगावतरण उभरा शिल्प है। इसमें भगीरथ तप करके गंगा को भूमी पर लाने का चित्र है। यह प्रसिद्ध उभरा चित्र है।

पल्लवों ने भारी बडे-बडे विशाल देवालयों का निर्माण किया । महाबलिपुर समुद्र किनारे पर निर्मित शिव देवालय में एक है। पल्लवों से निर्मित और दो प्रसिद्ध देवालय हैं - कंची का कैलासनाथ और वैकुंठ पेरुमाल् देवालय ।

नए पद

उभरा शिल्प : उभरकर ऊपर दिखता उत्कीर्ण शिल्प

I. नीचे के प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. पल्लवों की राजधानी का नाम बताइए।
2. कंची का प्रसिद्ध पल्लव राजा कौन है? उसका उपाधि क्या है?
3. पल्लवो के काल का प्रसिध्द शिलारथ कहाँ हैं ?
4. पल्लवों के काल का प्रसिद्ध देवालयों का नाम बताइए।

कार्यकलाप

1. पल्लवों का वास्तुशिल्प के चित्रों को माहिती के साथ संग्रह कीजिए।

© KTBS not to be republished

चोल

चोल दक्षिण भारत का प्रबल शक्ति बनकर चार शताब्दी तक शासन किया। तंजावूर(तमिलनाडु) चोलों की राजधानी थी। चोल सम्राटों में राजराज चोल और राजेन्द्र चोल प्रमुख हैं।

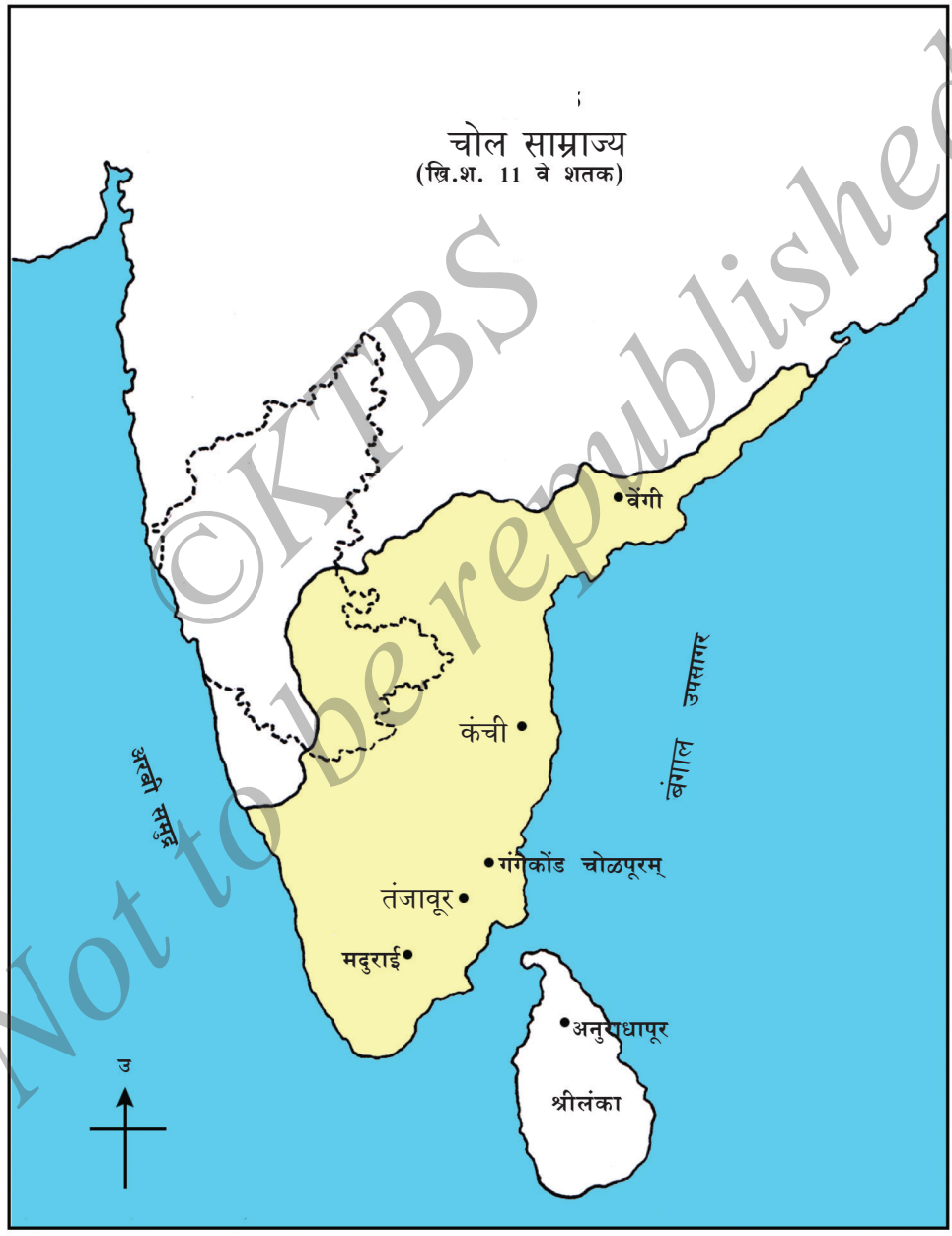

©KIBS Not to be republished

चोल साम्राज्य : राजराज पराक्रमी और दक्ष शासन करनेवाला था। इसके विशाल साम्राज्य में तुंगभद्रा नदी के दक्षिण भाग के सभी प्रदेश श्रीलंका और मालदीव द्वीप थे। साम्राज्य की रक्षा के लिए प्रबल भूसेना और नौका सेना थे। बृहदीश्वर देवालय राजराज की देन है।

राजेन्द्र चोल: राजराज के बाद उसका बेटा राजेन्द्र चोल राजा बन गया। उत्तर भारत का यशस्वी विजय यात्रा उसके साधनाओं में एक है। उस विजय की याद में राजेन्द्र ने 'गंगैकोंड' उपाधि धारण किया । इसके अलावा 'गंगैकोंड चोलपुरम्' नाम की राजधानी और वहाँ एक बृहत् शिवदेवालय का निर्माण किया। राजधानी के पास सिंचाई के योग्य 'चोलगंगम्' नामक भारी तालाब बनवाया।

आग्नेय एशिया का सुमात्रा के श्रीविजय राज्य जीतना राजेन्द्र चोल का गणनीय साधना है।

साहित्य: चोलों के शासन काल तमिल साहित्य और संस्कृति का सुवर्णयुग था। उनके काल में साहित्य का भरपूर अभिवृद्धि हुई । 'पेरिय पुराणम्' का भक्ति साहित्य में प्रमुख स्थान है। इसी काल का कंबन् से लिखा गया 'कंबन् रामायण' आज भी जनप्रिय है।

ग्राम शासन : चोलों का ग्राम शासन पद्धति आदर्शपूर्ण था। ग्रामों का शासन हर ग्राम का ग्रामसभा ही करता था । ग्रामसभा के सदस्यों का चुनाव होता था। कुछ सदस्यों का समिति बनाकर, उन्हें निर्दिष्ट काम सौंपा जाता था। वित्तीय लेखा-जोखा सौंपना था। अनर्ह सदस्यों को ग्रामसभा से दूर रखा जाता था। चोल ग्राम शासन पद्धती आज के ग्रामपंचायत व्यवस्था जैसा था।

भारत में शासन किया अंग्रेज अधिकारी चोलों का दक्ष शासन से प्रसन्न होकर, चोल काल के ग्राम शासन के बारे में वर्णन किया कि - वे ग्राम छोटे गणराज्य जैसे थे।

वास्तुशिल्प और मूर्तिशिल्प

वास्तुशिल्प और मूर्तिशिल्प को चोलों की देन अपार है। कांसे से निर्मित नटराज और कालिंग मर्दन नृत्य शिल्प भारतीय मूर्तिशिल्प को उनकी अपूर्व देन है।

©KTBS Not to be republished

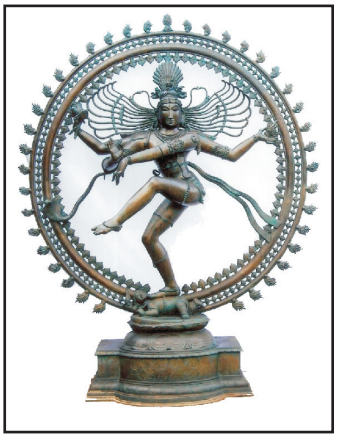

नटराज

कालिया मर्दन नृत्य

चोलों के वास्तुशिल्प में तंजावूर का बृहदीश्वर मंदिर विश्व प्रसिद्ध है। इसका निर्माण होकर एक हजार साल ही बीत गए हैं। इस देवालय के गर्भगृह का गोपुर 200 फूट ऊँचा है। यह भारत में ही ऊँचा और बृहत् देवालय है। इसे विश्व परंपरा स्थान भी मिला है। इस देवालय के सामने का नंदी विग्रह दक्षिण भारत में ही सबसे बडा है। चोल काल का और एक बडा देवालय गंगैकोंड चोलपुरम् में है । वह शिव देवालय है।

बृहदेश्वर देवालय, तंजावूर

भारतीय रिजर्व बैंक ने हाल ही में रू 1000 का सहस्रवर्ष का 'बृहदीश्वर देवालय' नाम का सिक्का प्रचलन में लाया है।

©KTBS Not to be republished

I. रिक्त स्थानों को सूक्त शब्द से भरिए ।

1. चोलों की राजधानी .....।
2. बृहदीश्वर देवालय का निर्माण करानेवाला .....

II. नीचे के प्रश्नों का एक ही वाक्य में उत्तर लिखिए।

1. चोल काल के प्रमुख साहित्य कृतियों के नाम बताइए ।
2. चोल काल के ग्रामशासन की विशेषताएँ बताइए।
3. भारतीय मूर्तिशिल्प को चोलों की क्या देन है?
4. बृहदीश्वर देवालय क्यों प्रसिद्ध हुआ है?

III. नीचे के प्रश्नों का समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए।

1. राजराज चोल के साधनाओं के बारे में बताइए ।
2. राजेन्द्र चोल के बारे में टिप्पणी कीजिए।

कार्यकलाप :

- चोल काल का ग्राम शासन और आज का पंचायत, दोनों के समान लक्षण बताइए।
- चोलकाल के मूर्तिशिल्प देखकर मिट्टी (क्ले) से प्रतिरुप बनाइए।

राष्ट्रकूट

चालुक्यों के साम्राज्य का अंत होकर, राष्ट्रकूटों का शासन प्रारंभ हुआ । राष्ट्रकूट नाम से ही याद आती हैं कविराज मार्ग, आदिकवि पंप और एल्लोरा का कैलास देवालय।

कविराज मार्ग: यह कन्नड का सबसे पहला उपलब्ध ग्रंथ है। इसे हम (गंगों का दुर्विनीत के बारे में पढते वक्त) जान गए हैं। इस अपूर्व लक्षण ग्रंथ की रचना राष्ट्रकूट के अमोघवर्ष नृपतुंग के काल में (प्रायः 1200 साल पहले) हुई। इसकी रचनाकार श्रीविजय है। आज तक मिले कन्नड ग्रंथों में यह अत्यंत प्राचीन है।

भाषा, शैली, छंदस् आदि के विवरण देनेवाला ग्रंथ को लक्षण ग्रंथ कहते हैं।

©KTBS Not to be republished

पंप : कन्नड का श्रेष्ठ कवी पंप है। इसने कन्नड का सबसे पहला काव्य रचना की। इसलिए पंप को कन्नड का आदिकवि कहते हैं। पंप से पहले रचित कन्नड काव्य आज तक नहीं मिले हैं । पंप राष्ट्रकूट का मांडलीक वेमुलवाड का अरिकेसरी के राज्यसभा में था। 'आदिपुराण' और 'विक्रमार्जुन विजय' पंप के श्रेष्ठ काव्य हैं। महाभारत कथा निरूपण करनेवाला ''विक्रमार्जुन विजय को'' 'पंपभारत' भी कहते हैं। कन्नड के प्रमुख कवियों पर पंप का प्रभाव अपार है। इसी काल के और एक कवी पोन्न है।

कैलास देवालय, एल्लोरा

महेश मूर्ति, एलिफंटा, इसे त्रिमूर्ति भी कहते हैं।

एल्लोर और एलिफंटा : एल्लोरा का कैलास देवालय सौ फूट का चट्टान काटकर किया एक शिला मंदिर है। इस निर्माण का श्रेय और कीर्ति राष्ट्रकूट राजा पहला कृष्ण को मिलता है। दुनिया में इस तरह का वास्तुशिल्प और कहीं भी नहीं मिलता। यहाँ का मूर्तिशिल्प वैभव नयन मनोहर है। एलिफंटा के मूर्तिशिल्पों में रावण कैलास पर्वत उठाने का कथा प्रसंग अद्‌भुत है।

राष्ट्रकूट साम्राज्य में आज महाराष्ट्र में रहे बहुत भाग थे ।
एल्लोर और एलिफंटा महाराष्ट्र में हैं।

राष्ट्रकूटों का मूर्तिशिल्प कलावैभव को हम एलिफंटा गुहालयों में देख सकते हैं। एलिफंटा मुंबई बंदरगाह के पास का एक छोटा सा द्वीप है। यहाँ का भारी आकार का तीन मुखोंवाला महेशमूर्ति विस्मयकारी है।

प्रसिद्ध राजे : राष्ट्रकूटों में पहला प्रसिद्ध राजा ध्रुव था। उत्तर भारत पर पहली बार यशस्वी विजययात्रा किया । उसका बेटा ही तीसरा गोविन्द ।

©KTBS Not to be republished

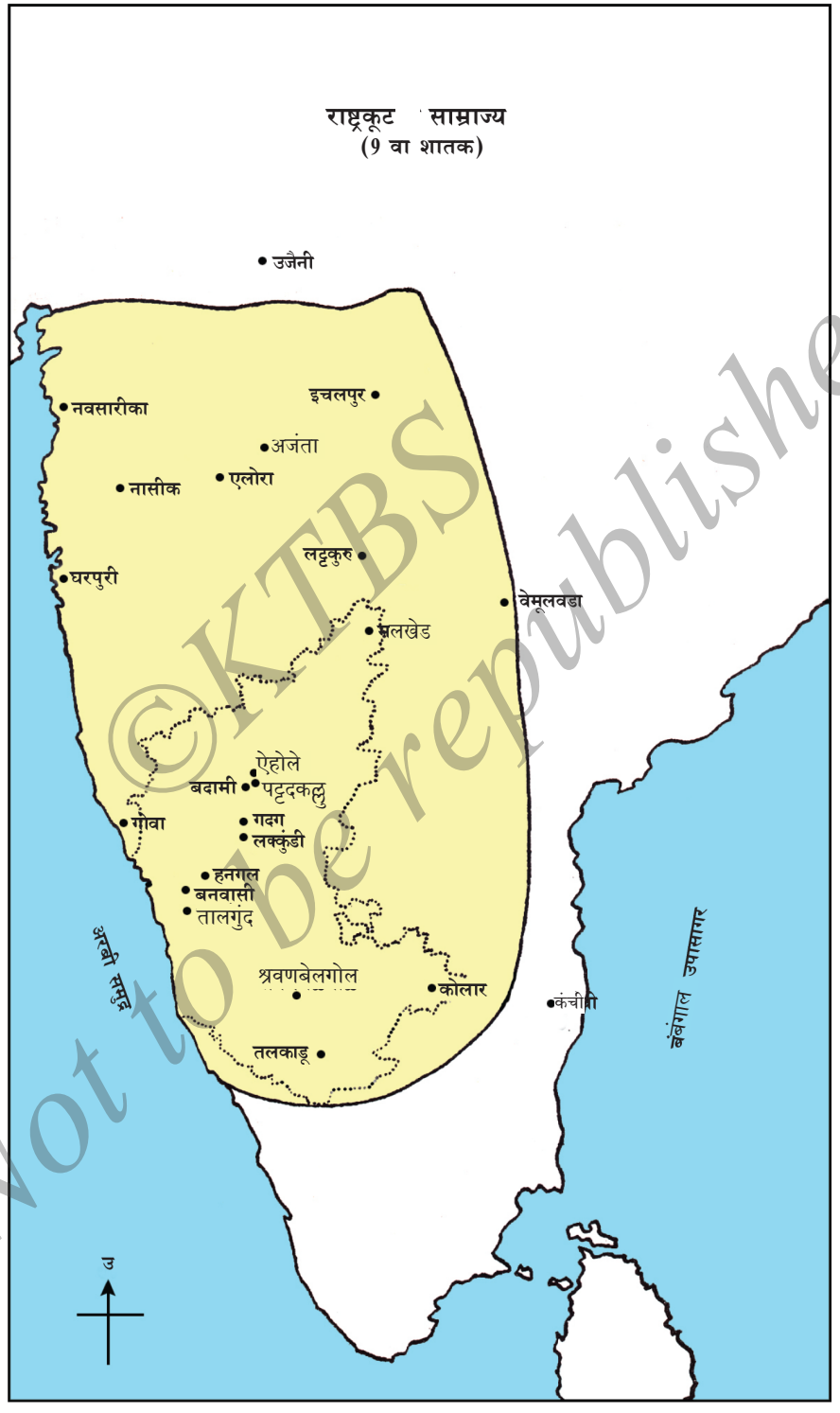

©KTBS Not to be republished

राष्ट्रकूट नृपतुंग के काल का साम्राज्य

तीसरा गोविंद राष्ट्रकूट सम्राटों में प्रमुख है। यह दक्षिण भारत पर प्रभुत्व पाया । बाद में हिमालय का घास प्रदेश तक सैनिक कार्याचरण किया । इस महत् साधना को उसका शासन में 'गोविंद के मद-मस्त हाथी गंगा नदी का पावन जल पिया' इस तरह मनोहर रुप से वर्णन किया है।

अमोघवर्ष नृपतुंग

नृपतुंग तीसरे गोविन्द का पुत्र था। जब वह सोलह साल का था, तब उसका राज्याभिषेक हुआ। वह 60 साल से भी ज्यादा समय शासन किया। खुद विद्वान् था। श्रीविजय उसके राजसभा का विद्वान् था।

नृपतुंग को अपने प्रजा का क्षेम ही प्यारा विषय था। वह मान्यखेड शहर (आज का मलखेड, गुल्बर्गा जिला) बनवाया। वह राष्ट्रकूटों की राजधानी बनी। अरब प्रवासी सुलैमान ने नर्णन किया है कि उस काल का विश्व के चार विशाल साम्राज्यों में राष्ट्रकूट साम्राज्य एक था (बाकी विशाल साम्राज्य - रोमन्, अरब और चीनी साम्राज्य)

तीसरा कृष्ण

तीसरा कृष्ण के काल में राष्ट्रकूट साम्राज्य फिर से भारत के राजकीय में अग्रस्थान पाया। कृष्ण ने चोलों का पराजय करके, रामेश्वर तक अपना जयध्वज फहराया। विजय की याद में वहाँ विजयस्तंभ और देवालय का स्थापना किया। यह पांड्य, चेरों को हराया, इतना ही नहीं सिलोन का राजा से कप्प संग्रह किया। इसके अलावा तीसरा गोविन्द की तरह उत्तर भारत में भी यशस्वी विजययात्रा किया। कवि पोन्न कृष्ण के आश्रय में था। तीसरा कृष्ण के बाद राष्ट्रकूट राज्य की अवनति होने लगा।

धर्म : राष्ट्रकूट वैदिक थे, शैव और वैष्णव दोनों मतों का अनुसरण करते थे। राष्ट्रकूट राजाओं ने कन्हेरि में बौद्ध धर्म को दान दिया माहिती शासन द्वारा मिलता है। जैन धर्म राष्ट्रकूट के काल में जनप्रिय था। अमोघवर्ष ने जैन धर्म को प्रोत्साहित किया। राष्ट्रकूट के काल में अरब व्यापार की वृद्धि होने के कारण इस्लाम धर्म समुद्र तटीय प्रदेश में जनप्रिय था। मुस्लिम अधिकारियों को राष्ट्रकूट राजसभा में नियुक्त किया था। कुलमिलाकर राष्ट्रकूट के काल में धर्म समन्वय और धर्म सहिष्णुता घर कर लिया था।

©KTBS Not to be republished

I. रिक्त स्थानों को सूक्त शब्द से भरिए।

1. कन्नड का सबसे पहला उपलब्ध ग्रंथ ..... ।
2. कन्नड का आदिकवी ..... ।
3. एल्लोरा का ..... देवालय एक शिला से निर्मित है ।

II. नीचे दिए प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. राष्ट्रकूटों के काल का प्रमुख कवी कौन हैं?
2. राष्ट्रकूटों के प्रमुख वास्तुशिल्प केन्द्रों का नाम बताइए।
3. पंप के कृति का नाम बताइए ।
4. राष्ट्रकूट वंश के प्रसिद्ध राजाओं की सूची बनाइए।
5. राष्ट्रकूट साम्राज्य के प्रति सुलैमान के क्या विचार है?

III. समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।

1. अमोघवर्ष के बारे में टिप्पणी कीजिए ।
2. तीसरा कृष्ण के सैनिक साधना के बारे में लिखिए।

कार्य कलाप

1. श्रीविजय, पंप, पोन्न इनके बारे में लिखित छोटे पुस्तक पढिए।
2. राष्ट्रकूट काल का कला और वास्तुशिल्प के चित्र संग्रह करके, विवरणों के साथ एक आल्बम् बनाइए।

कल्याण चालुक्य

राष्ट्रकूट के बाद चालुक्य वंश के राजा बीदर जिले के बसव कल्याण को राजधानी बनाकर, फिर एक बार अधिकार में आए। इसलिए इन्हें कल्याण चालुक्य कहते हैं। इम्मडी तैल इस वंश का पहला राजा था। छठा विक्रमादित्य कल्याण चालुक्यों में प्रसिद्ध राजा है।

©KTBS Not to be republished

छठा विक्रमादित्य

छठा विक्रमादित्य का सुदीर्घ शासन काल में चालुक्य राज्य की अभिवृद्धि हुई । वह अपना अधिकार पाने की याद में चालुक्य विक्रम शक आरंभ किया। विक्रमादित्य ने कई विद्वानों को आश्रय दिया था। इस कृति में विक्रमादित्य का जीवन चरित्र है। विज्ञानेश्वर उसके राजसभा का और एक विद्वान् था। इसका ग्रंथ का नाम है 'मिताक्षर संहिता'। इसे हिन्दू कानून पद्धति का प्रमाण ग्रंथ मानते हैं।

तीसरा सोमेश्वर : विक्रमादित्य के बाद उसका तीसरा पुत्र सोमेश्वर को अधिकार मिला। सोमेश्वर का प्यार साहित्य और कला की ओर था। वह 'मानसोल्लास' नाम का प्रसिद्ध संस्कृत विश्वकोश की रचना की। इसमें सर्व शात्रों के बारे में लिखा है। सोमेश्वर महान् विद्वान् था। वह 'सर्वज्ञ चक्रवर्ती' नाम से ही प्रख्यात था। लेकिन उसके काल में राज्य विस्तार नहीं हुआ।

साहित्य : कल्याण चालुक्यों के काल में कन्नड को अपार प्रोत्साहन मिला ।

कवि चक्रवर्ती नाम से प्रख्यात रन्न ने 'साहस भीम विजय' अथवा 'गदायुद्ध' नामक वीर काव्य की रचना किया। पंप, पोन्न और रन्न को 'कन्नड साहित्य के रत्नत्रय' कहते हैं।

वचन साहित्य कल्याण चालुक्य काल की देन है। वचनकार कन्नड में वचनों को लिखा ।

जेडर दासिमय्य, बसवण्ण, अल्लमप्रभु, अक्कमहादेवी, चन्नबसवण्ण, सिद्धराम, मडिवाल माचय्य, सूले संकव्वे आदी इस काल के प्रमुख वचनकार थे।

वास्तुशिल्प : लक्कुंडि, इटगि, बंदलिके, बल्लिगावे आदी कल्याण चालुक्य के वास्तुशिल्प केन्द्र थे। वे ललितकला केन्द्र भी थे। कोप्पल जिले के इटगि महादेव देवालय इस काल का अत्युत्तम वास्तुशिल्प है। वहाँ के एक शासन में इसे 'देवालयों का चक्रवर्ती' बताया है। कल्याण चालुक्यों का वास्तुशिल्प का प्रभाव होय्सल वास्तुशिल्प पर हुआ।

नया पद

विश्वकोश-लोकज्ञान का सभी विषयों को व्यवस्थित रुप से बतानेवाला ग्रंथ को 'विश्वकोश' कहते है। अंग्रेजी में इसको 'एन्सैक्लोपीडिया' कहते हैं।

©KTBS Not to be republished

महादेव देवालय इटगी

I. खाली जगहों को उचित शब्द से भरिए ।

1. चालुक्य विक्रम शक आरंभ करनेवाला राजा ..... ।
2. कविचक्रवर्ती नाम से प्रसिद्ध कवि ..... ।
3. मिताक्षर संहिता का रचनाकार ..... ।

II. नीचे के प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. कल्याण चालुक्यों में प्रसिद्ध राजा कौन था?
2. छठा विक्रमादित्य के दरबार में रहे विद्वानों के नाम बताइए।
3. राजा मुम्मडी सोमेश्वर की कृति का नाम क्या है? उसकी विशेषताएँ क्या हैं?
4. कन्नड साहित्य के रत्नत्रयों का नाम बताइए।
5. 'देवालयों का चक्रवर्ती' किस देवालय को कहते हैं? और यह कहाँ है?

कार्य कलाप

- आपके शाला ग्रंथालय से शिवराम कारंत का 'बाल प्रपंच' अथवा 'किरियर विश्वकोश' पढिए।

©KTBS not to be republished

होय्सल

होय्सल दक्षिण कर्नाटक और तमिलनाडु का भौगोलिक प्रदेश मिलाके पूरा विशाल प्रदेश पर तीन शतमान से ज्यादा वैभवपूर्ण शासन किया। प्रारंभ में बेलूरु, बाद में देवसमुद्र उनकी राजधानी थी। देवसमुद्र ही आज का हलेबीडु है। इस वंश का स्थापक सल था । बाघ को मारने का सल का चित्र ही होय्सलों का लांछन था। होय्सलों में विष्णुवर्धन और तीसरा बल्लाल प्रसिद्ध राजा थे।

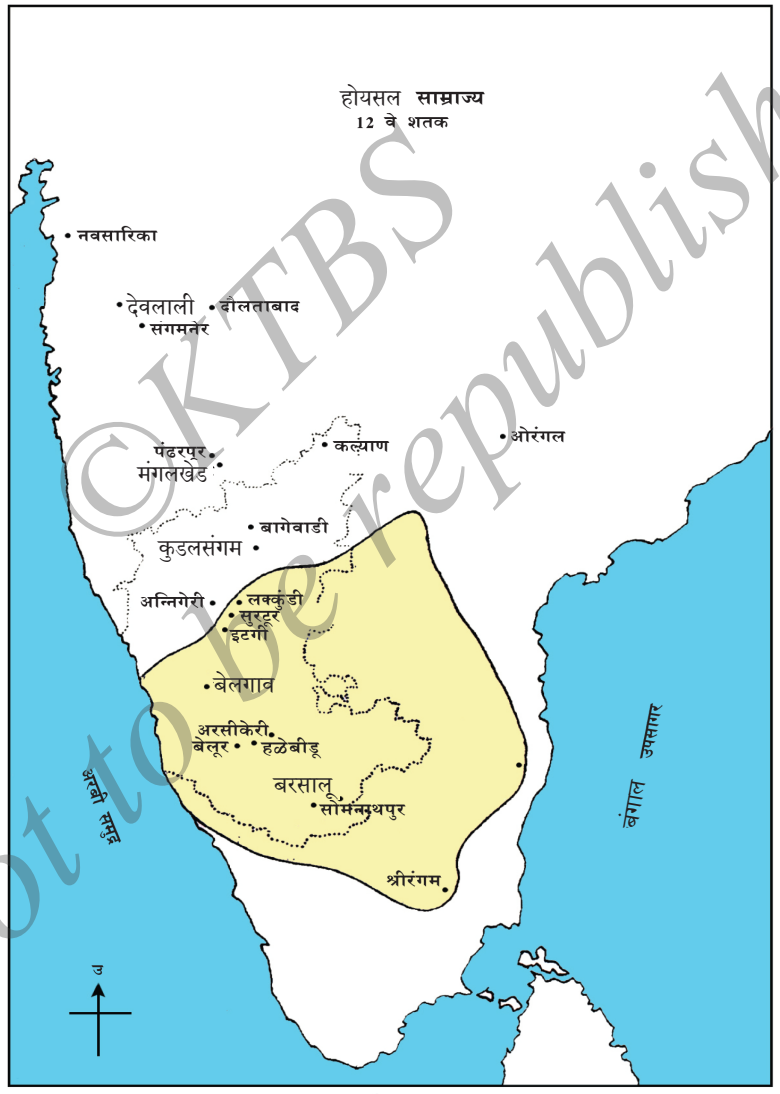

होय्सल विष्णुवर्धन का राज्य

©KTBS Not to be republished

विष्णुवर्धन

विष्णुवर्धन ने चोल और पांड्य को हराकर , उनके वश के कन्नड प्रदेशों को जीत लिया। वह जैनमतीय था। बाद में श्रीवैष्णव पंथ को स्वीकार किया। उसकी रानी शांतला जैन पंथ में ही थी। वह 'नाट्य सरस्वती' नाम से प्रसिद्ध हुई। धर्म सहिष्णु विष्णुवर्धन ने शैव और जैन मतों को उदार प्रोत्साहन दिया।

तीसरा बल्लाल : तीसरा बल्लाल होय्सल वंश का अंतिम प्रमुख राजा था। वह सुदीर्घ पचास साल तक शासन किया। उसके काल में दिल्ली के सुल्तान बार-बार दक्षिण राज्यों पर हमला करते थे। वहाँ की संपत्ती लूट लिया। हमलों के परिणाम स्वरुप होय्सल वंश के साथ दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंश नाश हो गये। इस घोरविपत्ती का सामना तीसरा बल्लाल को अकेला ही करना पडा। इस बीच दिल्ली का प्रतिनिधि बनकर आए सुल्तान का हिंसाचार बढा। बूढा होने पर भी बल्लाल ने उसके साथ युद्ध किया। युद्ध में बल्लाल सुल्तान से मारा गया। बाद में अधिकार पर आया चौथा बल्लाल का भी अल्पकाल में मृत्यु हो गई। इस तरह होय्सल वंश का अंत आज से 670 साल पहले हुआ।

वास्तु शिल्प और मूर्ति शिल्प : वास्तुशिल्प और मूर्तिशिल्प क्षेत्र को होय्सलों की देन अनुपम है। सूक्ष्म बारीकी अलंकारिता के अनेक देवालय होय्सल काल में निर्मित हुए । इन देवालयों का सामान्य ये लक्षण हैं।

- ये देवालय नक्षत्राकार के चबूतरे पर खडिया के मृदु पत्थरों से निर्मित हैं।
- देवालय के अंदर नवरंग के खंभ अत्यंत मुलायम हैं।
- बाहर के दीवारों पर पुराण और महाकाव्यों के कथा निरूपण किया शिल्प हैं।

होय्सल देवालयों में हलेबीडु का होय्सलेश्वर, बेलूर का चन्नकेशव, सोमनाथपुर का केशव देवालय प्रमुख हैं।

©KTBS Not to be republished

मदनिके शिल्प

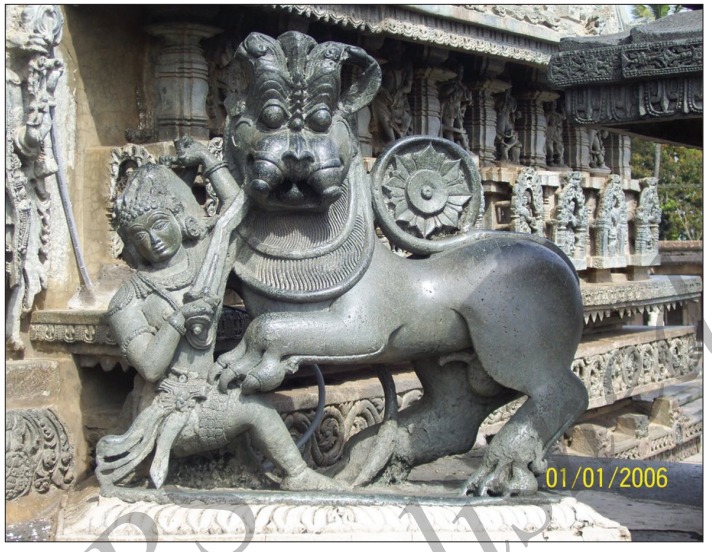

होय्सलों का लांछन

होय्सलेश्वर देवालय, हलेबीडु

विष्णुवर्धन ने चोलों पर विजय पाने की लक्ष्य में बेलूर का चित्ताकर्षक चन्नकेशव देवालय का निर्माण करवाया। इसके निर्माण में बल्लीगावे का दासोज, गदग का नागोज प्रमुख हैं। वहाँ का सालभंजिके अथवा मदनिके शिल्प अत्याकर्षक हैं। सोमनाथपुर का केशव देवालय भी उतना ही आकर्षक है। राष्ट्रकवि कुवेंपु इसे देखकर ''बागिलोलु कै मुगिदु वलगे बा यात्रिकने, शिलेयल्लवी गुडियु कलेय बलेयु'' कहकर प्रशंसा किया है।

© KTBP not to be republished

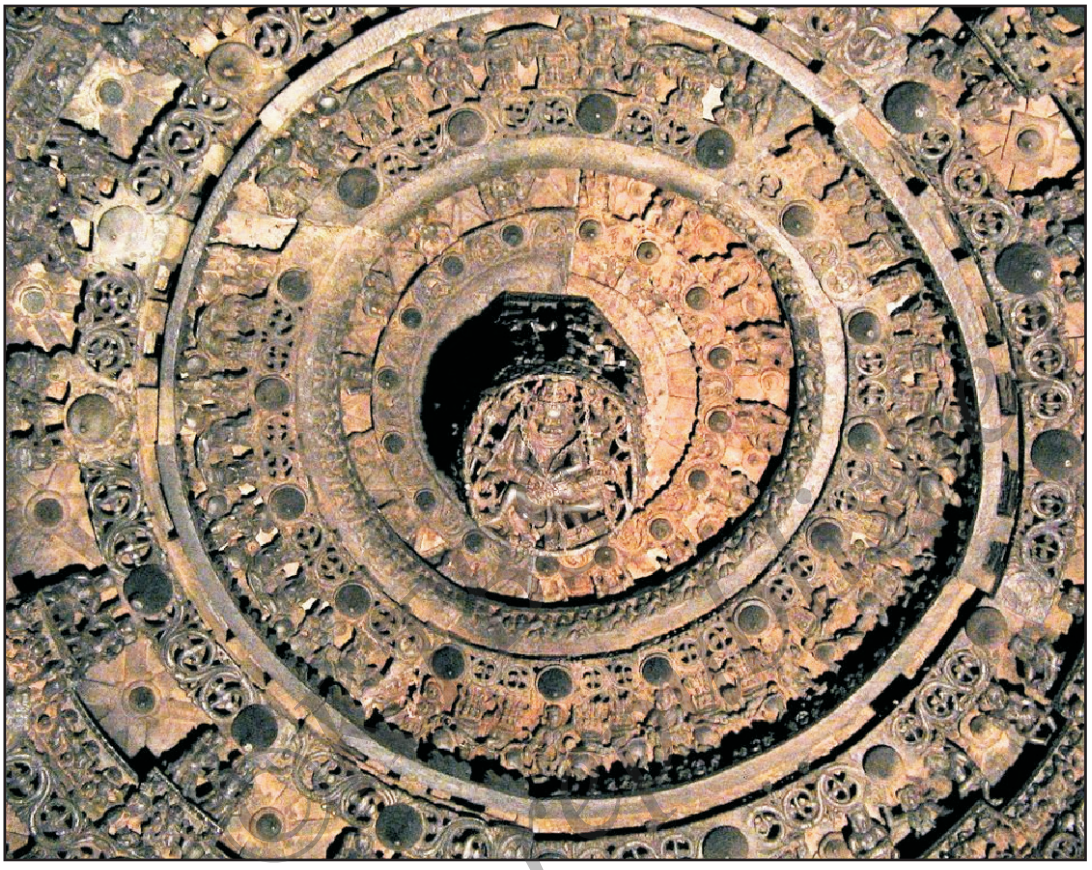

भुवनेश्वरी बेलूर

साहित्य : जन्न, हरिहर और राघवांक आदी इस काल के श्रेष्ठ कवि थे। जन्न ने 'यशोधर चरित' हरिहर ने 'गिरिजा कल्याण' और राघवांक ने 'हरिश्चंद्र काव्य' कृति की रचना की। हरिहर ने 'रगले' नाम का नया काव्य शैली का आरंभ किया । शुद्ध कन्नड में 'कब्बिगर कावम्' कृति की रचना आंडय्य कवि ने किया ।

नए पद

सालबंजीके : मदनिके - खंभों के ऊपर जोडा गया अलंकारिक स्त्री विग्रह।

रगले- एक प्रकार का काव्य शैली ।

Not to be Republished

I. नीचे के पश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. होय्सल राजधानी के नाम बताइए ।
2. होय्सल वंश के प्रसिद्ध राजाओं के नाम बताइए।
3. विष्णुवर्धन की रानी कौन थी? उसे कौन सा नाम मिला था?
4. दिल्ली सुल्तानों के हमले होते वक्त कौन सा होय्सल राजा था?
5. होय्सल काल के श्रेष्ठ कवियों के नाम बताइए।
6. होय्सल काल के प्रमुख देवालयों का नाम बताइए।
7. बेलूर चन्नकेशव देवालय के शिल्पों का नाम बताइए।

II. समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए।

1. तीसरा बल्लाल के बारे में टिप्पणी कीजिए।
2. होय्सल देवालय के सामान्य लक्षण बताइए।

III. नीचे के 'ए' और 'बी' सूची के विषयों को जोडकर लिखिए।

ए	बी
सल	हलेबीडु
शांतला	कब्बिगर कावं
बेलूरु	होय्सल वंश का स्थापक
आंडय्य	नाट्य सरस्वती
दोर समुद्र	चन्नकेशव देवालय

कार्य कलाप

होय्सल काल के देवालयों का चित्र संग्रह करके विवरण दीजिए ।

©KTBS Not to be republished

पाठ 3	कोडगु, कित्तूरू, तुलुनाडु तथा हैदराबाद-कर्नाटक

पाठ का परिचय

कर्नाटक का प्रशासन किये राज्य साम्राज्यों के श्रीमंत इतिहास की जानकारी जितनी मुख्य है उतनी ही मुख्य छोटे छोटे प्रदेशों के इतिहास की जानकारी।

क्योंकि प्रादेशिक इतिहास तत्वपूर्ण होते हुए, वह कर्नाटक का संपूर्ण इतिहास जानने के लिए सहायक है। इस दृष्टि से, कोडगु, कित्तूर, तमिलनाडु तथा हैदराबाद-कर्नाटक के चरित्र का इस पाठ में निरूपण किया गया है।

सामर्थ्य

1 कोडगु के चरित्र का परिचय प्राप्त कर लेना ।

2 अंग्रेजों के विरुद्ध कित्तूर रानी चेन्नम्मा तथा उसके अनुयायी संगोळ्ळी रायण्णा ने चलाये वीर संग्राम का परिचय प्राप्त कर लेना।

3 तमिलनाडु का इतिहास, संस्कृति तथा देन को समझना ।

4 हैदराबाद-कर्नाटक प्रदेश में अंग्रेजों के अधीन राजा, निजाम तथा स्थानीय जमीनदारों के विरुद्ध संग्राम को जानना ।

कोडगु

पश्चिम घाटी की तराई में रहा जिला ही कोडगु है, यहाँ के लोग कोडव भाषा बोलते हैं।.

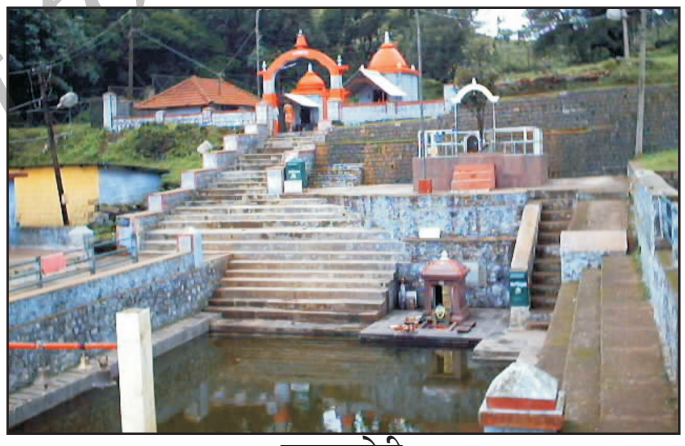

तलकावेरी

©KTBS Not to be republished

कर्नाटक जनता की कावेरी जीव नदी है। तलकावेरी कावेरी का उगमस्थान है। लाखों लोग तलकावेरी की आराधना करते हैं। कोडगु अरण्य सम्पत्ति से भरा है, नागरहोले में राष्ट्रीय उद्यान है।

हालेरी राजघराना: कोडगु का प्रशासन किया मुख्य राजघराना ही हालेरी राजघराना है। 17वीं सदी के आरंभ में इसकी स्थापना वीरराज ने की। आगे चलकर मुद्दुराजा ने मडिकेरी शहर का निर्माण कर उसे अपनी राजधानी बनाया। मुद्दुराजाकेरी ही मडिकेरी हुआ है।

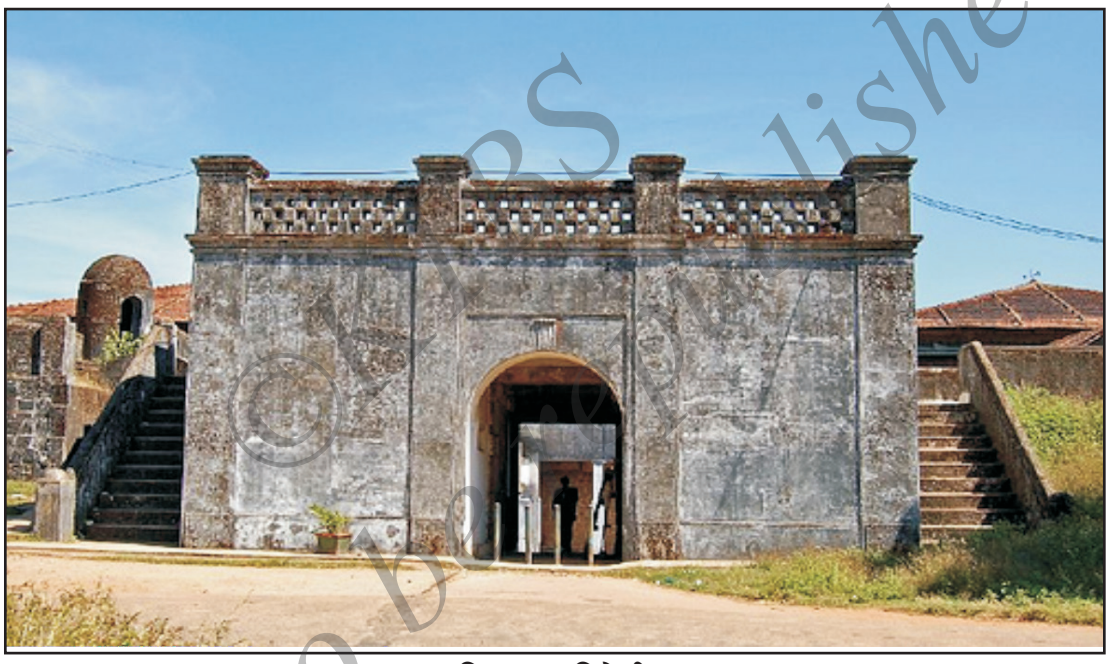

किला, मडिकेरी

कोडगु का 18वी सदी के उत्तरार्ध में हैदरअली तथा टिप्पुसुल्तान ने प्रशासन किया। उस समय कोडगु का राजा वीरराजा बंधित हुआ था। उसके हाथ से बचकर वीरराजा अंग्रेजों की सहायता से कोडगु को अपने वश में लिया। टिप्पु के मरणोपरांत अंग्रेज तथा कोडगु के राजा मित्रता से रहे।.

कोडगू तथा अंग्रेज : प्रभावशाली रहे अंग्रेज कोडगू को अपने वश में लिये (1834)। कोडगू का अंतिम राजा चिक्कवीरराजेंद्र को अपनी सीमा से भगाकर स्वयं ही प्रशासन चलाने लगे। कोडगु का विभाजन कर, कोडगु का भाग अमरसुल्या को केनरा जिले में विलीन किया।

© BSRS Not to be published

अमरसुल्या संग्राम : केनरा जिले में किसानों पर कर अधिक होने से वहाँ के किसान अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संग्राम किया। उन्होंने अंग्रेजों को कोडगु से भगाने का संकल्प किया था। इस संग्राम को 1837 का अमरसुल्या संग्राम कहते हैं। संग्राम कारों ने सुल्या, पुत्तूरु, कासरगोडू तथा मंगलूरू को तेरह दिनों तक अपने वश में लिया था। लेकिन अंग्रेज इस संग्राम का चकनाचूर किया। कई संग्रामकारों को उन्होंने फाँसी शिक्षा दी।

संग्राम के प्रमुख नायक पुट्टबसप्पा, कल्याणस्वामी तथा गुड्डेमने अप्पय्या थे।.

गुड्डेमने अप्पय्या गौडा के कांस्य की मूर्ति,मडिकेरी

कोडगु में स्वातंत्र्य संग्राम: स्वातंत्र्य संग्राम में कोडगू के स्वातंत्र्य प्रेमी सक्रियता से भाग लिये थे। स्वतंत्रता के पश्चात् कोडगु कुछ समय तक अलग राज्य बनकर रहा। 1956 में कोडगु कर्नाटक में विलीन हुआ।

©KTBS Not to be republished

कोडगु के दो आँखों के तारे : कोडगु का नाम जगद्‌विख्यात करने वालों में जनरल कोडंदेर कार्यप्पा हैं। वे भारत के प्रथम भारतीय जनरल हुए थे। स्वतंत्र भारत की थलसेना, नौसेना तथा वायुसेना के प्रथम अधिपति बने थे। अपने प्रशासन, साहस तथा शूरता के लिए प्रख्यात हुए कार्यप्पाजी को 'फील्ड मार्षल' नाम की अत्युन्नत उपाधि दी गई है।

फील्ड मार्षल कार्यप्पा

जनरल तिम्मय्या

और एक महान देशभक्त कोडगु के जनरल कोडंदेर तिम्मय्या हैं। वे भारत तथा पाकिस्तान के युद्ध के संदर्भ में भारत की जीत के कारणीभूत रहे। ये दोनों वीर कोडगु की आँखों के तारों के नाम से प्रसिद्ध हुए। सैन्य शक्ति के साथ-साथ पहचाने गये कोडगु खेल, साहस, लोककला तथा प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।

समूह में चर्चा करके उत्तर दो

1. कावेरी नदी के उगमस्थान को क्या कहते हैं?
2. कोडगू का प्रशासन किये प्रमुख राजघराने का नाम क्या था?
3. अमरसुल्या का संग्राम क्यों हुआ ?

क्रियाकलाप

फील्ड मार्षल कार्यप्पा तथा जनरल तिम्मय्या के जीवन सम्बन्धी जानकारी संग्रह कीजिए ।

© KTBS Not to be republished

कित्तूर

बेलगाँव जिले का कित्तूर लगभग दो सदियों के पहले प्रभावशाली राज्य था। व्यापार तथा व्यवसायों के लिए प्रसिद्ध था।

वीरमहिला कित्तूर चेन्नम्मा की कांस्य की मूर्ति

रानी चेन्नम्मा : वीर महिला कित्तूर की रानी चेन्नम्मा राजा मल्लसर्ज की छोटी पत्नी थी। मल्लसर्ज और उसका उत्तराधिकारी बेटे का भी देहांत हुआ। चेन्नम्मा ने शिवलिंगसर्ज को दत्तक लेकर राज्य का शासन चलना आरंभ किया। धारवाड के कलक्टर थॅकरे दत्तक स्वीकार करना उचित नहीं है इस तरह झूठा बहाना बनाया। कित्तूर का शासन अंग्रेज सरकार ही निभाने के लिए सिफारिश किया। इस विचार को जानकर चेन्नम्मा क्रोधित होकर आगबबूला हुई। अंग्रेजों की दमन नीति का विरोध कर राज्य में स्वतंत्रता के लिए संग्राम छेड़ने का निर्णय किया। थॅकरे 500 सैनिकों के साथ कित्तूर पर आक्रमण किया। घनघोर युद्ध हुआ।

©KTBS Not to be republished

चेन्नम्मा ने अपने सैनिकों के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध पराक्रम के साथ युद्ध किया। अंग्रेज सेना वहाँ से भाग निकली। थॅकरे को गोली लगने से वही देर हुआ।

फिर से अंग्रेज सेना ने कित्तूर पर आक्रमण किया। कित्तूर की सेना छोटी थी। केवल छः हजार सैनिक थे । अंग्रेज की सेना बहुत बड़ी थी। यह युद्ध तीन दिनों तक चला। चेन्नम्मा की ओर रहनेवाले ही उसे धोखा दिये। इससे कित्तूर की सेना पराजित हुई। चेन्नम्मा बंदी बनाई गई। उसे अंग्रेज बैलहोंगल के कारागृह में रखा गया। पाँच वर्ष तक कारागृह में रहकर रानी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करनेवाले वीरों को संदेश भेजकर जोश भरती थी।

अंग्रेज सत्ता का विरोध की हुई प्रथम भारतीय महिला की कीर्ति चेन्नम्मा को मिलती है।

वह स्वतंत्रता संग्राम की ध्रुवतारा बनकर चमकती है। उसके स्मरणार्थ आज भी लोकगीत (लावणी) गाए जाते हैं।

संगोल्ली रायण्णा: संगोल्लिरायण्णा चेन्नम्मा का निष्ठावान सेवक था। सामान्य जनता के बीच इस योद्धा का उगम हुआ। चेन्नम्मा को बंदी बनाने के बाद कित्तूर का नेतृत्व लेकर सैन्य संगठन किया। अंग्रेजों के दफ्तर जलाकर खजाना लूटा था। गोरिल्ला युद्ध में निष्णात रायण्णा अंग्रेजों के लिए सिंह स्वप्न बना था। सीधे युद्ध में उसे पराजित करना असाध्य रहने से अंग्रेज कुटिलोपाय किया।

पैसों के लालच में आकर देशद्रोही रायण्णा को धोखे से बंदी बनाकर अंग्रेजों को सौंप दिया। उसे तथा उसके छः साथियों को भी फाँसी दी गई। अंत्यदर्शन लेने आई माता केंचव्वा के चरणों में गिरकर वरदान माँगते हँसते-हँसते रायण्णा फाँसी पर चढा। सभी साथियों की नंदगढ में समाधि बनाई गई। रायण्णा के अनुयायियों ने क्रांति जारी रखी।

संगोल्लि रायण्णा

©KTBS Not to be republished

रायण्णा की समाधि पर वट के पौधे को उसका अनुयायी बिच्चुगत्ति चेन्नबसप्पा ने लगाया। कहा जाता है चेन्नबसप्पा वैराग्य लेकर वहीं निवास किया था। वह वटवृक्ष आज भी है। रायण्णा के बाद अनेक वीर युवक की क्रांति को जारी रख कर कित्तूर की जनता का स्वातंत्र्य प्रेम दिखाये ।

काल गणना (ई. स.)

कित्तूर चेन्नम्मा	-	1824
संगोल्लि रायण्णा	-	1829

उत्तर दो

1. कित्तूर रानी चेन्नम्मा अंग्रेजों के विरुद्ध क्यों भड़क उठी?
2. संगोल्लिरायण्णा कौन था? उसका अंत्य कैसे हुआ ?

क्रियाकलाप

कित्तूर चेन्नम्मा से संबंधित लोकगीतों (लावणी) का संग्रह करो ।

तुलुनाडु

प्राचीन काल में कर्नाटक के तटवर्ती का एक भाग (अधिकांश आज के दक्षिण तथा उडुपि जिले) तुलुनाडु से जाना जाता है। पुराण साहित्य में यह क्षेत्र परशुराम का क्षेत्र कहलाया। यहाँ के अधिकांश लोगों की भाषा तुलु है। कोंकणी ब्यारी भाषा का प्रयोग करनेवाले अधिकांश लोग भी तुलुनाडू में हैं।

इतिहास काल में तुलुनाडु का कदंब, आलुप, होयसल, विजयनगर राजघराने शासन करते आये। तुलुनाडु में आलुप वंश के राजा दीर्घ समय तक शासन किये। उद्यावर (उदयपुर), मंगलूरू (मंगलपुर), वारकूरु अनेक तुलु राज्य की राजधानियाँ बनी थीं।

चौट राजघराने की अब्बक्का रानी (16वीं शताब्दी) पुर्तगलियों के विरुद्ध संघर्षकर उन्हें हराई थी ।

मतधर्म : तुलुनाडु के राजाओं में अधिकांश जैन थे। यहाँ बौद्ध, जैन, वीरशैव, नाथ, इस्लाम, इस तरह अनेक मतवाले निवास किये हैं। नागाराधना, भूताराधना, ये तुलुनाडु के दो आराधना पंथ है।

©KTBS Not to be republished

द्वैत मतस्थापक मध्वाचार्य तुलुनाडु के हैं। मंगलूरु के कद्रि में हरे मंजुनाथ का मंदिर तुलुनाडु का प्राचीन मंदिर हैं।

- तुलुनाडु में ईसाई शिक्षा संस्थाओं की स्थापना कर शिक्षा क्षेत्र को अमूल्य देन दी है। उन्होंने ही मंगलूरु में मुद्रणालय की स्थापना की है। फर्डिनांड किरेल से रचा हुआ कन्नड शब्दकोश बासेल मिशन मुद्रणालय में मुद्रित हुआ। तुलु शब्दकोश की रचना जर्मन से आये मेन्नर ने की। आरंभ में तुलुनाडु में ईसाई धर्म का प्रचार विदेशी पाद्रियों ने की। आगे चलकर यह कार्य देशियों ने आगे बढ़ाया। कई सुंदर गिरिजाघर यहाँ है।
- प्राचीन काल से ही अरब देश के साथ तुलुनाडु व्यापार संबंध बनाया रखा था। परिणामस्वरूप यहाँ इस्लाम धर्म प्रचुरता में आया। मुसलमानों में प्रार्थना के लिए जगह जगह मस्जिदों का निर्माण किया।

वास्तुशिल्प: कद्रि मंजुनाथ मंदिर में सुंदर अवलोकितेश्वर की बड़ी कांस्य शिल्प है। यह एक हजार वर्ष प्राचीन है। मूडबिदरे का हजार खंभों की बसदी, कार्कल, वेणूरु, धर्मस्थल में रही गोम्मटमूर्ति जैन संस्कृति के संकेत हैं।

अवलोकितेश्वर कांस्य शिल्प, मंगलूरु

©KTBS not to be republished

यहाँ प्रसिद्ध दैव कोटि चन्नय्या के गरोडियाँ दिखाई देते हैं।

हजार खंभों की बसदी, मुडबिदरे

लोककला : कंबुल (कंबल), कोलिअंक, चेन्ने आदि तुलुनाडु के कुछ लोककला के खेल हैं। यक्षगान, तालमद्दले यहाँ की प्राचीन प्रसिद्ध कलाएँ हैं।

अंग्रेज प्रशासन: 19वीं सदी के आरंभ से कर्नाटक तटवर्ती प्रदेश में अंग्रजों ने प्रशासन चलाया। उस समय इस तटवर्ती प्रदेश को 'केनरा' जिला कहते थे। आगे चलकर केनरा जिले को दो भागों में विभाजित किया गया। वे उत्तर के 'उत्तर कन्नड' (नार्त केनरा) दक्षिण भाग के 'दक्षिण कन्नड' (सौथ केनरा) जिले हैं।

स्वातंत्र्य संग्राम : तुलुनाडु के स्वातंत्र्य संग्राम में कार्नाडू सदाशिवराव तथा अत्तावर यल्लप्पा अग्रगण्य हैं।

©KTBS not to be republished

- देशभक्त के प्रख्यात कार्नाडू सदाशिवरावजी किये हुए हरिजनों की सेवा अविस्मरणीय है। दलित वर्ग के अनेक बच्चों को अपने घर में ही भोजन कराते थे । देश के लिए सर्वस्व त्याग किये उज्वल तारा थे।
- अत्तावर यल्लप्पा नेताजी सुभाषचंद्र बोस जी स्थापित किये 'आजाद हिन्द सरकार' की मंत्रिमंडल में सचिव बने थे। नेताजी के आज़ाद हिन्द फ़ौज में पंद्रह वर्षों तक वे सेनाधिकारी बने थे।
- अस्पृश्यता के विरुद्ध संग्राम, दलित बालिकाओं के लिए शिक्षा तथा अनेक दलितोद्धारक कार्य करनेवालों में कुद्मुल रंगराव अग्रगण्य थे। महात्मा गाँधी मंगलूरु आये थे तब इनके कार्यों को देखकर खुश हुए।

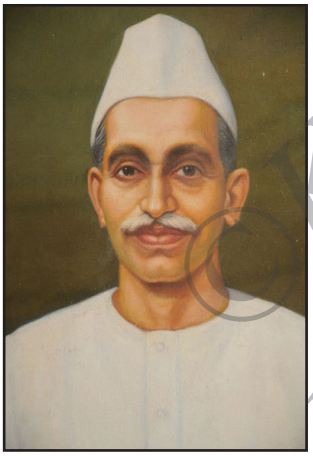

कार्नाड सदाशिवराव

अत्तावर यल्लप्पा

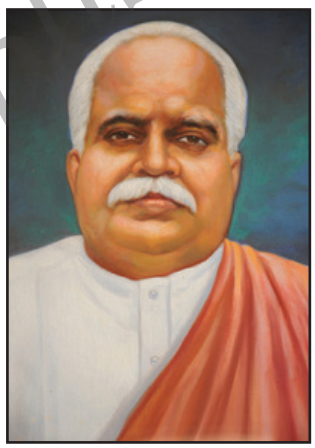

कुद्मुल रंगराव

बैंकिंग क्षेत्र में तुलुनाडु प्रसिद्ध है। केनरा, कार्पोरेशन, सिंडिकेट, कर्नाटक तथा विजया बैंक स्वातंत्र्यपूर्व ही यहाँ स्थापित हुए। देशभर में फैले ये प्रसिद्ध बैंक हजारों शाखाएँ भारत की अर्थव्यवस्था को विशेष देन दी है। इनसे लाखों लोगों को रोजगार भी प्राप्त हुआ है।

1956 में उत्तर तथा दक्षिण कन्नड जिले कर्नाटक से जुडे। (इसके पहले दक्षिण कन्नड जिले मद्रास अधिपत्य से मिले थे) । दक्षिण कन्नड जिले का विभाजन होकर उडुपि जिला बना (1997)।

© KTBS Not to be republished

नये शब्द

गरोडि - आराधना केंद्र

काल गणना (ई. स.)

अलुपों का प्रशासन काल - 7 - 14वी सदी

अंग्रेजों का प्रशासन - 1801 - 1947

उत्तर दो.

1. तुलुनाडु में अधिक समय तक शासन किया राजघराना कौन सा है?
2. उल्लाल की अब्बक्का रानी कौन है?
3. फर्डिनांड किटेल कौन है?
4. हजार खंबों की बसदी कहाँ है?
5. तुलुनाडु की प्रसिद्ध प्राचीन कलाएँ कौन सी है?
6. कार्नाडू सदाशिवराव को हम क्यों याद करते हैं?
7. कुद्मुल रंगराव दलितोद्धार के लिए कौन-कौन से कार्य किये?
8. तुलुनाडु में स्थापित भारत के प्रमुख बैंक कौन-कौन से हैं?

क्रियाकलाप

1. कुदमुल रंगराव तथा कार्नाडू सदाशिवराव के जीवन चरित्र पढ़ो ।
2. भारत की आर्थिक प्रगति में कर्नाटक के तटीय प्रदेशों का जोगदान - इस विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन करके, चर्चा कीजिए और रपट तैयार करो ।

हैदराबाद-कर्नाटक

शिकारी नायकों के विद्रोह

विजयनगर साम्राज्य के अवनति के बाद हैदराबाद कर्नाटक में शिकारी नायक मुखियाँ का प्राबल्य था। क्रांतिकारी रहे वे 1800 के बाद अंग्रेजों के (विरुद्ध) खिलाफ किये विद्रोह अनगिनत रहे।

©KTBS Not to be republished

कारण : स्थानीय जमीनदारों का शोषण, अंग्रेज लागू किये शस्त्रास्त्र कानून, जंगल कानून तथा उनका शोषण, ऐसे शोषणों से तबाह होकर स्थानीय राजाओं, मुखिया तथा सामान्य जनता विरोध करने लगी। 1800 के बाद चले पच्चीस से अधिक विद्रोहों में शिकारी ही अधिकतया भाग लेने का हम देखते हैं। विद्रोह करने का उद्देश्य अंग्रेजों को भगाना ही था।.

हलगली नायकों के विद्रोह

हलगली बागलकोट जिले के मुधोल तालूक का एक गाँव है। यह गाँव आज भी पैलवानों (पहलवानों) के लिए प्रसिद्ध है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में यह गाँव प्रसिद्ध हुआ। वहाँ अधिकांश लोग शिकारी नायक हैं। शिकार तथा आत्मरक्षा के लिए उनके पास हथियार रहते थे।

1857 में अंग्रेज जारी किये शस्त्रास्त्र नियमों के अनुसार भारतीय जनता सरकार की अनुमति लेकर ही हथियार रख ले सकते थे। स्वभावतः शूर, स्वाभिमानी भी हुए शूर नायकों को यह असह्य की बात थी। कारणों से संघर्ष होकर अंग्रेज शिकारी नायकों पर आक्रमण किया।

जडग, बाल, रामी आदि विद्रोह के नायक शूरता से संग्राम किया। आक्रमण में अनेक वीर स्वर्गवासी हुए। 290 जनों को बंदी बनाकर उनमें से 19 को फाँसी दी गई । हलगलि शिकारी वीरनायकों की वीर कथा कर्नाटक के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अमर है।

रामी : हलगली विद्रोह (संग्राम) में तीन अंग्रेज सैनिकों को बंदूक की गोली से हत्या की हुई रामी शिकारी वीर महिला है। इस विद्रोह में रामी वीरगति पाती है।

हलगली के शिकारी नायकों के बारे में लिखी हुई लावणी की शुरुआत ऐसी है।

हलगली के शिकारी शेरों से भी शूर हैं।

निश्चलता से खड़े होकर संग्राम में वीरगति पाये हैं।

कुल की मर्यादा बताकर गये हैं।

©KTBS Not to be republished

सिंधूर लक्ष्मण

सिंधूर लक्ष्मण अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम किया हुआ एक महान वीर है।

सांग्ली जिले के जत तालूक के सिंधूर गाँव में शिकारी साबु तथा नरसव्वा दंपत्ति से लक्ष्मण का जन्म हुआ। इसकी समाधि बीलगी में है।

सिंधूर गाँव इनामदारों (पटेलों) के प्रशासन से काँप उठा था। लेकिन लक्ष्मण उनके विरुद्ध क्रांति की चिनगारी फैलाया। आगे चलकर लक्ष्मण अंग्रेजों का विरोधी बना।

लक्ष्मण अंग्रेजों के खजाने तथा अमीरों को लूटकर गरीबों में पैसे बाँटता था। समाजमुखी होकर शोषितों की सेवा करता था। गाँव की पंचायत (चावडी) के सामने लक्ष्मण को बुलाकर तहकीकात करते समय उसे संशय हुआ। इसलिए वह वहाँ से फरार हुआ। वहाँ के पुलिस अधिकारी की हत्या करने से उसे गिरफ्तार करने के लिए अंग्रेज शतप्रयत्न किये। आगे चलकर उसे गोली से मारा गया। स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किये क्रांतिकारी सिंधूर लक्ष्मण इतिहास के पन्नों में चिरस्मरणीय है।

सुरपुर के नायक

यादगिरि जिला सुरपुर शूर शिकारियों का प्रदेश बना था। सुरपुर का राजा कृष्णप्पा नायक का देहांत होने के बाद आठ वर्ष का वेंकटप्पा नायक उत्तराधिकारी बना। सुरपुर संस्थान निजाम तथा अंग्रेजों ने बाँट लेने की ताक में थे।

राजा वेंकटप्पा नायक अंग्रेजी शिक्षा पाया था। स्वातंत्र्यप्रियता उसके मन में भर चुकी थी। इस बार प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की गर्मी (1957) सुरपुर तक पहुँची। वेंकटप्पा नायक संग्राम में तुरंत कूद पड़ा।

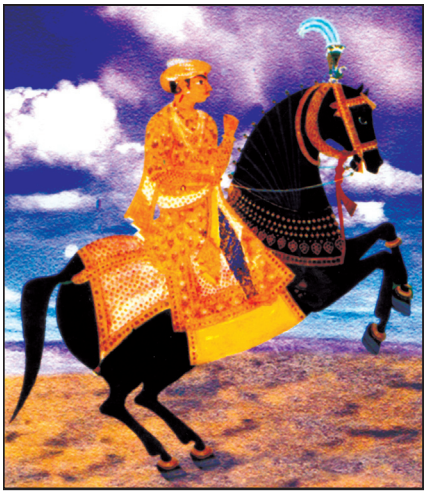

राजा वेंकटप्पा नायक

अंग्रेज सेना सुरपुर के किले पर आक्रमण किया। भयंकर युद्ध हुआ। अंग्रेज सेना का एक वरिष्ठ अधिकारी दूसरे दिन ही युद्ध में ढ़ेर हुआ। इससे अंग्रेज सेना हिम्मत खो चुकी। धोखाधड़ी से तो किला जीतने का निर्णय उन्होंने लिया। नायक का प्रमुख अधिकारी किले का गुप्त विषय बताकर अंग्रेजों की जीत का सहायक बना।

©KTBS Not to be republished

वेंकटप्पा नायक वहाँ से भागकर सेना को इकट्ठा करने के लिए हैदराबाद के निज़ाम यहाँ जाता है। लेकिन निज़ाम का प्रधानमंत्री सालार जंग अंग्रजों से अपने लिए कुछ लालच मिलने के उद्देश्य उसे अंग्रेजों के वश में देता है। अंग्रेज पूछताछ करके वेंकटप्पा को सजाए मौत देते हैं।

बाद में नाटकीयता से सजा चार वर्ष के लिए कम करते हैं, लेकिन वेंकटप्पा नायक को धोखे के साथ गोली मारकर हत्या किये। इस घटना को आत्महत्या कहकर अफ़वाह फैलाते हैं। उस समय वह 24 साल का युवक था।

अंग्रेज सुरपुर हैदराबाद के निज़ाम को दान में दिया। इस तरह कलबुरगि, बीदर तथा रायचूर प्रदेश हैदराबाद संस्थान में विलीन हुए।

हैदराबाद-कर्नाटक मुक्ति संग्राम

हैदराबाद कर्नाटक मुक्ति संग्राम एक दमनकारी राजा के विरुद्ध जनता (एक बनकर) एकता से क्रांति किये हुए उज्वल इतिहास का निदर्शन है। उसी तरह महान त्याग, बलिदानों की अमिट छाप का सबूत है।

हमारे देश में पहले 562 छोटे-छोटे राज्य अंग्रजों के अधीन में थे। इन राज्यों में हैदराबाद प्रमुख था।

संग्राम का इतिहास : हैदराबाद संस्थान में हिन्दुओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। आम तौर पर वे धार्मिक आचरण नहीं कर पाते थे।

संस्थान में शिक्षा के लिए निर्लक्ष्य किया गया था। वह सब कुछ उर्दूमय होने से कन्नड भाषा तथा साहित्य को बड़ा धक्का पहुँचा।

निज़ाम 'कालागप्ती' नामक 53 भीषण नियमों को जारी कर जनता का मूलभूत स्वातंत्र्य खदेड दिया था।

संग्राम की स्थिति : संग्राम के जनप्रिय नेता स्वामी रमानंद तीर्थजी थे। वे हैदराबाद संस्थान के चारों ओर संचार अहिंसात्मक सत्याग्रह आंदोलन का संगठन किया। संग्राम के और एक प्रसिद्ध नायक हर्डेकर मंजप्पा थे। वे 'कर्नाटक के गाँधी' के नाम से प्रसिद्ध थे। वे पान निरोध, अस्पृज्ञयता निवारण जैसे अनेक समाजमुखी कार्यक्रम जनप्रिय किया। अस्पृश्यता निवारण केलिए समाजोपयोगी कार्यक्रम लोकप्रिय लिए ।

©KTBS Not to be republished

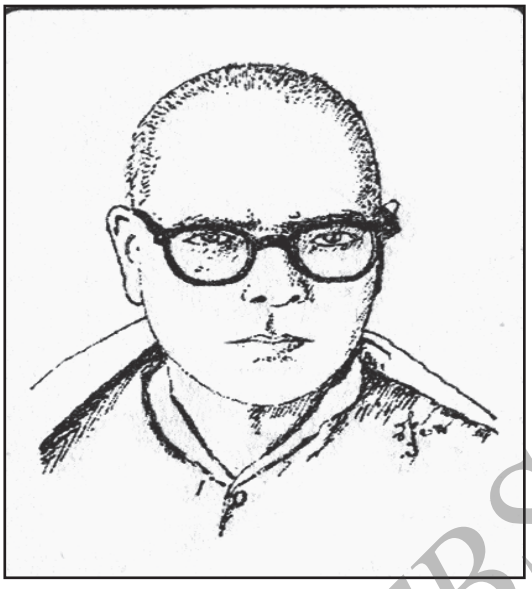

स्वामी रमानंद तीर्थ

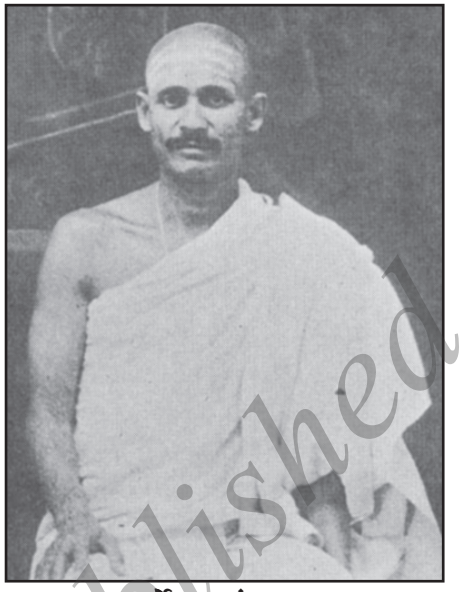

हर्डेकर मंजप्पा

वंदेमातरम् आंदोलन : इस बीच वंदे मातरम् गाने का सरकार ने निषेध किया। इसका विरोध किये धीर (वीर) नायक 'वन्दे मातरम् रामचन्द्रराव' थे। 'वंदेमातरम्' गाये अनेक लोगों को बंदी बनाया गया।

आर्य समाज के संग्राम का सामना करने मुस्लिम मूलभूतवादी इत्तेहाद-उल्-मुसलमिन नामक संघ का गठन किया। उसके मुखिया कासिम रजवि थे। संघ हिंसात्मक मार्ग अपनाया।

कांग्रेस संस्था का संस्थान में निषेध किया गया था। वह हैदराबाद स्वतंत्र भारत के संयुक्त राष्ट्र जोड़ने निजाम से आग्रह किया गया। 1947 अगस्त 15 के दिन स्व-तंत्र भारत का ध्वज हैदराबाद में फहराने जनता दृढ़ संकल्प की थी। लेकिन निज़ाम सरकार कठिन प्रतिबंध लगाई ।

इसी समय रजाकार संस्थान में व्यापक रूप से खून खराबा करना आरंभ किया। उन्हें निज़ाम का उत्तेजन था। इसी समय चारों ओर एक ही समान वंदेमातरम् की आवाज़ गूँज रही थी।.

©KTBS Not to be republished

शरणगौड़ा इनामदार : हैदराबाद मुक्ति संग्राम में भूगत कार्याचरण का संगठन शरणगौड़ा इनामदार ने किया। युव टोलियाँ रजाकारों पर बिजली की भाँति टूट पड़ी। परिणामस्वरूप अनेक ग्राम रजाकार की दुष्टता से मुक्त हुए। मुक्त हुए लोग अभिमान से उन्हें 'सरदार' नाम से जानने लगे।

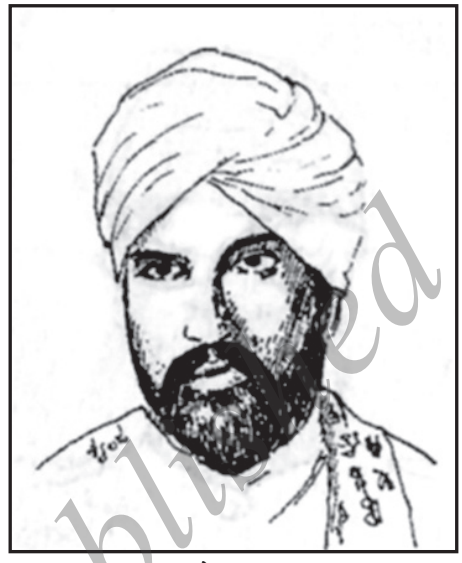

शरणगौडा इनामदार

रजाकारों अत्याचार से लाखों लोग हैदराबाद संस्थान को त्यागकर पडोसी स्वतंत्र भारत की ओर स्थानांतरित हुए। हजारों युवक हैदराबाद सीमा की लंबाई तक शिबिरों की स्थापना कर दुष्ट रजाकारों के विरुद्ध सशक्त संग्राम चलाया।

सरदार वल्लभभाई पटेल

1947 में देश स्वतंत्र होने पर भी हैदराबाद संस्थान अभी तक भारत में विलीन नहीं हुआ था। इस बीच रजाकारों की हिंसा निरंतर चलती रही। आखिर में हैदराबाद की समस्या सुलझाने गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेलजी को सरकार ने अधिकार सौंपाया।

उनके आदेशानुसार 1948 के सितंबर 17 के दिन भारतीय सेना हैदराबाद में प्रवेश की। अन्य मार्ग न रहने के कारण निजाम शरणागत हुआ। बाद में हैदराबाद संस्थान भारत में विलीन हुआ।

1951 में हैदराबाद प्रांत में चुनाव हो कर जनता अपने प्रतिनिधियों को पहली बार निर्वाचन (चुन) कर भेजा। अग्रगण्य नायक स्वामी रमानंद तीर्थ गुल्बर्गा क्षेत्र से लोकसभा के लिए निर्वाचित हुए।

© KTBS not to be republished

काल गणना (ई. स.)

1857	-	हलगलि गाँव के शिकारी नायकों पर अंग्रेजों का आक्रमण । रामी का अंत्य।
1854 - 58	-	सुरपुर का राजा वेंकटप्पा नायक का संग्राम तथा अंत्य ।
1922 जुलाई 22	-	सिंधूर लक्ष्मण को गोली मारकर अंग्रेजों ने हत्या की ।
1948 सितंबर 17	-	हैदराबाद निजाम की शरणागति तथा हैदराबाद संस्थान भारत संयुक्त में विलीन हुआ ।

उत्तर दो.

1. शिकारी नायक विद्रोह करने के कारण कौन-कौन से हैं?
2. हलगलि के शिकारी नायक किस कानून का विरोध किया?
3. रामी कौन थी?
4. सिंधूर लक्ष्मण कौन था?
5. 1857-58 के प्रथम स्वतंत्र संग्राम में सुरपुर के वेंकटप्पा नायक का पात्र क्या है?
6. 'कालागप्सी' किसे कहते हैं?
7. स्वामी रामानंद कौन थे?
8. 'कर्नाटक के गाँधी' किसे कहते हैं?
9. 'वंदेमातरम्' संग्राम के धीर नायक कौन थे?
10. हैदराबाद मुक्ति संग्राम में शरणगौड़ा इनामदार का पात्र क्या था?

क्रियाकलाप :

1. शिकारी नायकों के विद्रोह से संबंधित लावणी तथा गीतों का संग्रह करो ।
2. 'भारत के एकीकरण में सरदार पटेल का पात्र' विषय पर चर्चा करके रपट तैयार कीजिए ।

* * * * *

©KTBS Not to be republished

पाठ 4	धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलन

पाठा का परिचय

ई.स. 8 वी शतमान से 16 वी शतमानों के बीच कई धर्मिक सधारकों का जन्म हुआ। वे चिंतनशील थे और उन्होंने वैचारिक आधार पर धर्म और समाज का पुनरुत्थान किया। इस पठ में धार्मिक सुधार आंदोलन के अग्रमान्य शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य और बसवेश्वर के जीवन तथा उनके द्वारा हुए सुधारों का संक्षिप्त विवरण यहाँ है।

सामर्थ्य

1. धार्मिक सुधारकों द्वारा प्रतिपादित चिंतन और सुधारों को समझना।
2. उनके चिंतन आज के संदर्भ में कितने महत्वपूर्ण है, इस विषय को समझना।

भारत में अनेक महापुरुषों का जन्म हुआ है। वे केवल बोधक ही नहीं बल्कि सक्रिय होकर समाज सुधार भी किया। लोगों में रहे अज्ञान और बुरे संप्रदाय इनके सुधार से द्वर हो गए । इनका गहरा प्रभाव आज भी देखने को मिलता है।

श्री शंकराचार्य

श्री शंकराचार्य

शंकराचार्य का जन्म केरल के कालडी नाकम गाँव में हुआ। वे इतना प्रतिभावान थे कि आठ साल के उम्र में ही चार वेदों को जान लिया। शंकर के पिता शिगगुरु और माता आर्यांबे थे। शंकराचार्य से त्तिपादित तत्व को अद्वैत कहते हैं।

शंरकराचार्य की देन

- शंरकराचार्य उस समय का हिन्दु समाज के अंधविश्वास आचार-विदारों का खंडन करके, सुधार लाए।
- शंरकराचार्यने बदरी (उत्तरखंड), द्वारका(गुजरात), पुरी (ओडिसा) तथा श्रृंगेरी (कर्नाटक) में पीठ की स्थापना की। ये पीठ भारतीयों को भावनात्मक

©KTBS Not to be republished

और धार्मिक रुप से जोडने के केन्द्र बन गए।

- शंरकराचार्य ने आनंद लहरी, सौंदर्य लहरी आदी स्तोत्रों की रचना की। उनके स्तोत्रों में भजगोविंदम् आज भी जनप्रिय है। शंरकराचार्य अपने 32 साल की जिवित अवधि में इतने सारे साधना किए थे।

श्री रामानुजाचार्य

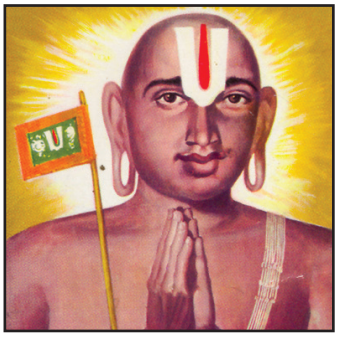

श्री रामानुजाचार्य

रामानुजाचार्य का जन्म चेन्नै के पास पेरंबदूर में हुआ। कंची नगर में शास्त्रध्ययन किए। रामानुजाचार्य के पिता केशव दीक्षित और माता का नाम कांतिमती था। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को विशिष्टाद्वैत कहते हैं।

रामानुजाचार्य देश के चारों दिशाओं में घूमकर श्री वैष्णवमत का प्रचार किया। मुक्ति के लिए भक्ति और शरणागति ही मुख्य है - इस तरह बताया। चोल राजा से हुए कष्टों को सहन नहीं कर सके। इसलिए कर्नाटक आए उनका स्वागत होय्सल राजा विष्णुवर्धन ने किया और मेलुकोटे में आश्रय दिया।.

चेलुव नारायण देवालय, मेलुकोटे

©KTBS Not to be republished

रामानुजाचार्य के सुधार

- जातीवाद का खंडन किया।
- निम्न वर्ग के लोगों को भी मेलुकोटे देवालय में प्रवेश करने का मुक्त अवकाश दिया। रामानुजाचार्य लगभग 120 सालों तक जीवित थे।

बसवेश्वर

बसवेश्वर

कर्नाटक के सामाजिक तथा धार्मिक आंदोलन में बसवेश्वर ने अत्यंत क्रांतिकारी पात्र निभाए। बसवेश्वर विजयपुर जिले का बसवनबागेवाडी के थे। मादरस और मादलांबिके इनके माता-पिता थे । बसवतत्व को शक्तिविशिष्टाद्वैत कहते हैं। बचपन में उपनयन संस्कार को न मानते हुए लिंग दीक्षा लिया। उनका विद्याभ्यास कूडलसंगम में हुआ।

कल्याण से शासन कर रहे कलचूरी वंश के बिज्जल ने बसवेश्वर को भंडार के आधिकारी नियुक्त किए। कल्याण में बसवेश्वर क्रांतिकारी चिंतनों का प्रचार करने लगे । संप्रदायवादी इसका विरोध करने लगे। इससे दु:खित होकर वे कल्याण छोडकर, कूडलसंगम चले गए। ऐसा माना जाता है कि बाद में उनका देहांत कूडलसंगम में ही हुआ।

बसवेश्वर का स्वर्गस्थ स्थान कूडलसंगम

©KTBS Not to be republished

बसवेश्वर के सुधार

- बसवेश्वर ने जातिरहित और वर्गरहित समाज निर्माण की ठान ली
- बसवेश्वर ने जातीयते, मूर्तिपूजा, यज्ञा-याग आदि का खंडन किया। देह ही देवालय कहा।
- स्त्री माता है, बही सर्वस्व है यह उक्ति स्त्रीयों के खोया हुआ मनोबल को जागृत करके, उनमें आत्मविश्वास भर दिया।
- उन्होंने बसवकल्याण में अनुभव मंटप की स्थापना की। यह वचनकारों का मंच हुआ था।
- बसवेश्वर ने असंख्यात वचनों की रचना की है। ये कूडलसंगमदेव अंकित से पूर्ण होते हैं।.

कायक मतलब कर्म (काम) या भक्ति से किए जानेवाला परिश्रम। ऐसे कर्म से आए हुए फल को समान रुप से स्वीकार करना ही भक्तिपूर्ण भोजन (दासोह) कहलाता है। बसवेश्वर का लक्ष्य लोगों में परिश्रम करने की प्रवृत्ति को बढावा देना था।

वचन साहित्य : वचन एक विशिष्ट साहित्य का प्रकार है। वचनों को गद्य की तरह पढ सकते हैं और पद्य की तरह गा भी सकते हैं। जेडर दासिमय्य, अल्लमप्रभु, चेन्नवसवण्ण, अक्कमहादेवी आदी वचनकार थे। वे सभी जाती, वर्ग से मिले हुए थे। वचनों में प्रकटित चिंतन आज भी प्रचलित हैं।

मध्वाचार्य

मध्वाचार्य

मध्वाचार्य के जन्म उडुपी के पास पाजक (बेल्ले) ग्राम में हुआ। उनके माता-पिता वेदावती और मध्यगेहभट्ट थे।

सन्यास स्वीकार करने के बाद मध्वाचार्यजी ने अपने उपदेशों के प्रचार के लिए संपूर्ण भारत का दो बार संचार किए। विष्णु उनके आराध्यदैव थे।

©KTBS Not to be republished

श्री कृष्ण देवस्थान, उडुपि

मध्वाचार्य की देन

- मध्वाचार्य ने संस्कृत में गीता तात्पर्य निर्णय, महाभारत तात्यर्य निर्णय आदी 37 कृतियों की रचना की।
- उडुपि में अष्ठमठों की स्थापना की।
- उन्होंने लोगों को सरल भक्ति मार्ग का उपदेश किया।

अष्ठमठ के साथ उत्तरादी, व्यासराय और राघवेन्द्र मठ आदी मध्दतत्व के अनुयायियों के मुख्य धर्मकेंद्र हैं।

काल गणन (ई.सन्)

शंकराचार्य	-	लगभग 11 शतमान पहले जीवित थे।
रामानुजाचार्य	-	लगभग 8 शताब्दी से पहले जीवित थे।
बसवेश्वर	-	लगभग 8 शतमान पहले जीवित थे।
मध्वाचार्य	-	लगभग 6 शतमान पहले जीवित थे।

©KLE Not to be republished

नए शब्द

दीक्षा - मंत्रोपदेश, भंडार - खजाना

I. नीचे के प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. शंकराचार्य से स्थापित पीठों के नाम बताइए।
2. रामानुजाचार्य को कर्नाटक में कौन सा राजा ने आश्रय दिया?
3. वचन साहित्य का महत्व क्या है? कुछ वचनकारों के नाम बताइए।
4. मध्वाचार्य की क्या देन है?

II. नीचे के ए और बी सूची के विषयों को जोडकर लिखिए।

ए	बी
शंकराचार्य	विशष्टाद्वैत
रामानुजाचार्य	द्वैत
बसवेश्वर	अद्वैत
मध्वाचार्य	शक्तिविशिष्टाद्वैत

III. समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।

1. बसवेश्वर के उपदेश (सुधार) टिप्पणी कीजिए।

कार्य कलाप

1. शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, बसवेश्वर के जीवनी पढिए।
2. वचनकारों के वचन संग्रह करके सुश्रव्य रुप से गाइए।
3. प्रमुख वचनकार और उनके अंकितनामों का संग्रह कीजिए।

* * * * *

©KTBS Not to be republished

पाठ 5	भारत के इतिहास में रजपूत

पाठा का परिचय

क्रि.श. 650 से 1200 के अवधि में रजपूत वंश हमारे भारत के इतिहास में मुख्य पात्र निभाए। इस पाठ में कुछ प्रसिद्ध वंश प्रतिहार, पाल, चौहाण और गुहिलों के साधना; वास्तुशिल्प और साहित्य क्षेत्रों को उनकी देन आर्थिक और सामाजिक जीवन का विवरण दिया है।

सामर्थ्य

1. कुछ रजपूत वंशों के मुख्य उपलब्धियों को समझना।
2. रजपूत वंशों के वास्तुशिल्प और साहित्य क्षेत्र को दिया अमूल्य देन की प्रशंसा करना।
3. रजपूत काल ऐतिहासिक स्थानों को भूपट में पहचानना ।

©KTBS Not to be republished

रजपूत कौन थे? रजपूत अपने साहस, पराक्रमों के लिए प्रसिद्ध हैं। मूलतः क्षत्रिय थे। अपने आपको सूर्यवंशी चंद्रवंशी वंश से पहचाने जाते हैं। रजपूत वंशो ने लगभग 500 साल उत्तर भारत में शासन किया। भारत पर आक्रमण (हमला) किए अरब, तुर्क, अफगान और मोगलों का सामाना रजपूतों ने बडी बहादुरी से किया।

रजपूत घराने

भारत के इतिहास में कई रजपूत घरोनों का प्रमुख पात्र है। रजपूतों में पाल, प्रतिहार, पारमार, चौहान, गुहिल, गहडवाल, सोलंकी आदी 36 घरोने हैं। उनमें प्रतिहार, पाल चौहान और गुहिलों की उपलब्धियों का विवरण यहाँ दिया है।

प्रतिहार : प्रतिहार राजा मध्यप्रदेश का आवंती (उज्जयनी) से शासन करते थे। नागभट इस वंश का प्रसिद्ध राजा था। अरबों की हमले से भारत की रक्षा करने का श्रेय इसे मिलता है। इसने विशाल साम्राज्य की स्थापना की।

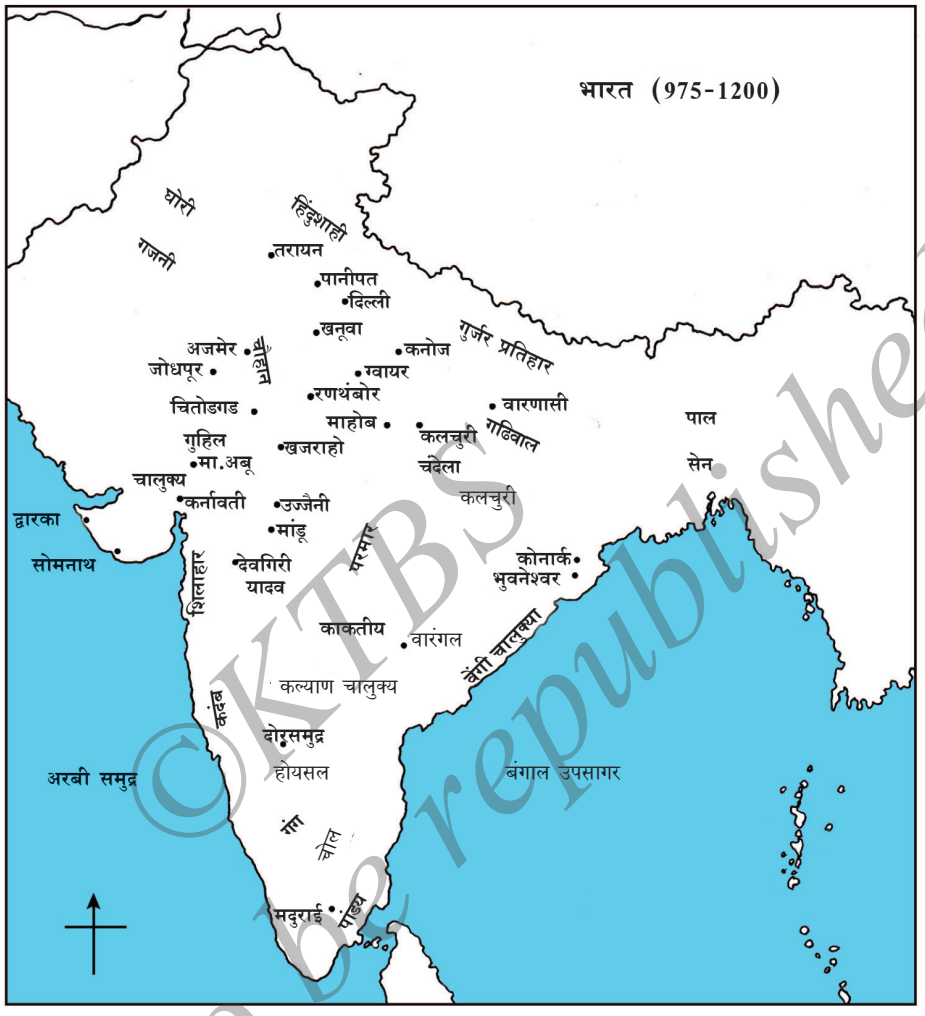

इसी वंश का भोजराज एक श्रेष्ठ राजकुमार और साहित्यकार था। उस काल में भारत का प्रतिष्ठित नगर पर भोजराज ने कब्जा कर लिया था। बंगाल के पाल को भी हराया। उनके राज्य संदर्शन करने आया अरब देश का प्रवासी ने भोजराज के बारे में कहा है कि वह एक प्रतिभाशाली राजा है, अरबों का शत्रु है, सेना में सर्वो त्तम अश्वदल रखा है।

पाल: पाल राजाओं बे लगभग चार शतमानों तक शासन किया। धर्मपाल पाल वंश का श्रेष्ठ राजा था। इसके समय में पाल राज्य उत्तरभारत के प्रतिष्ठित गणराज्यों में एक था। प्रसिद्ध नगर कन्नौज पर विजय पाना इसकी विशेष उपलब्धी है। कर्नाक

©KTBS Not to be republished

मूल के विजयसेन ने पाल राजाओं का शासन समाप्त करके सेन वंश का शासन प्रारंभ किया।

पाल राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। हिन्दू धर्म को प्रोत्साहन दिया। विद्या प्रसार कार्य में विशेष रुचि थी। इनके काल में उद्दंडपुर, विक्रमशील विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई।

चौहान: चौहानों में तीसरा पृथ्वीराज प्रसिद्ध राजा था। दिल्ली उसकी राजधानी थी।

पृथ्वीराज चौहान ने कन्नौज के राजा जयचंद्र की बेटी संयुक्ता से शादी करने की दिलचस्प घटना का विवरण अनेक ग्रंथों में है। संयुक्ता बहुत सुंदर थी। जयदंद्र और उसके बंधु पृथ्वीराज के बीच शत्रुता थी। बेटी के स्वयंवर में जयचंद्र ने पृथ्वीराज को निमंत्रण नहीं भेजा था। उसे अपमानित करने हेतु जयचंद्र ने पृथ्वीराज की प्रतिमा बनवाकर, पहरेदार की रुप में दरवाजे पर रखवा दिया।

पृथ्वीराज में अनुस्क्त हुई संयुक्ता ने स्वयंवर में आए राजकुमारों को छोडकर, पृथ्वीराज की प्रतिमा को वरमाला पहनाई। वहीं पास में छिपकर बैठा पृथ्वीराज ने तुरंत उसे अपने घोडे पर बिठाकर, अपने महल ले जाकर शादी किया। इस घटना दोनों घरानों में जो दुश्मनी थी वह और भी बढ गई।

पृथ्वीराज ने महम्मद घोरी के आक्रमणों को नियंत्रित किया । अनेक रजपूत राजाओं को एकत्रित किया। लेकिन कन्नौज का जयचंद्र इसके साथ नहीं दिया। पृथ्वीराज ने तरैन युद्ध में महम्मद घोरी को हराया, फिर भी उसे क्षमा कर लिया। अगले साल ही महमद घोरी ने बडी सेना के साथ दूसरे तरैन युद्ध में पृथ्वीराज को हराकर, उसे मार दिया। दिल्ली महम्मद घोरी के वश में आ गया। यहाँ से दिल्ली में सुल्तानों के शासन आरंभ हुआ।

विजय स्तंभ
चितोडगड

पृथ्वीराज शौर्य और धैर्य में प्रख्यात था। चंदबरदाई नामक कवी ने पृथ्वीराज राजो हिन्दी महाकान्य में इसकी का वर्णन किया है।

©KTBS Not to be republished

गुहिले : रजपूतों में गुहिल(गुहिलोट) वीर परंपरा के वंशज थे। इस वंश का राजा सोम्मण ने अरबों के आक्रमण से अपना राज्य की रक्षा करके बप्परावल् उपाधि प्रप्त किया। इस घराने का राणा कुंभ सुल्तानों के विरुद्ध युद्ध करके राज्य की रक्षा करनेवाला पराक्रमी राजा था। राज्य की सुरक्षा के लिए 32 किले बनवाए । चित्तौडगढ के प्रस्यात विजयस्थंभ का निर्माण इसीने किया। ये सब राणा कुंभ के उपलब्धी हैं।

राणा सांग अथवा राणा संग्रमसिंह गुहिल वंश के और एक प्रसिद्ध राजा था। सौ युद्धों का योद्धा। इसके शरीर पर युद्ध के अस्सी घावों के निशान थे। इसने दिल्ली के सुल्तानों के साथ लगातार युद्ध किए।

रजपूतों की देन

अर्थिक स्थिति : भारत के साथ ज्यादा विदेशी व्यापार अरब व्यापारियों के साथ हपता था। मसाला पदार्थ, कपास, रेशम का वस्त्र, सुगंध द्रव्य और हीरे भारत से निर्यात होते थे। घोडों का आयात मध्य एशिया अरेबिया से किया जाता था। रजपूत लगान की आय से अधिकांश घन किलों के निर्माण, मंदिरों के निर्माण में खर्च करते थे। इससे लोगों को उद्योग मिलता था ।

सामाजिक स्थिति : रजपूत के काल में वृत्ति के अनुगुण विविध वर्ग बने हुए थे। समाज में स्त्रीयों को गौरव का स्थान था। स्त्रीयों , साहित्य, नृत्य, संगीत, चित्रकला, कसीदा आदी कलाओं में निपुण थीं।बाल विवाह, सतिप्रथा का प्रचलन था। ब्रह्मा का निवास स्थान कहलाने वाला पुष्कर (अजमेर के पास) उनके यात्रास्थल का । हर साल यहाँ होनेवाला ऊँट मेला आज भी प्रसिद्ध है।

साहित्य :रजपूतों के काल में संस्कृत साहित्य का खूब विकास हुआ। गुजराती, हिन्दी, राजस्थानी भाषाओं की भी अभिवृद्धि हुई। चांद बर्दाई का पृथ्वीराज रोसो इस का प्रसिद्ध कृति है। रजपूत राजाओं में कई राजा विद्वान् थे। कवियों के आश्रायदाता थे। गीतगोविंद का रचनाकार जयदेव कवी सेन के आस्थान में था। नलंद, काशी विक्रमशील, उज्जयनी आदी प्राचीन विद्याकेंद्रों को रजपूतों ने प्रोत्साहन दिया।

कला और वास्तुशिल्प : रजपूतों के काल में कला और वास्तुशिल्प अत्यंत समृद्ध थे। उनके द्वारा निर्मित कलात्मक मंदिर, सुंदर महल और सदृढ किलों को

©KTBS Not to be republished

हम आज भी बडे गर्व से देखते हैं। देवालयों में खुजराहो का विश्वविख्यात कंडराय महादेव का मंदिर, अबुपर्वत का दिलबार मंदिर प्रमुख हैं। गुलाबी नगर जयपुर का हवामहल, उदयपुर का बृहत् राजमहल प्रसिद्ध हैं। किलों में मध्यप्रदेश का खलियट किला भारत के किलों में ही विशेष है। इसे भारत के किलों का माला की मोती कहकर वर्णन किया है।

ग्वालियर किला

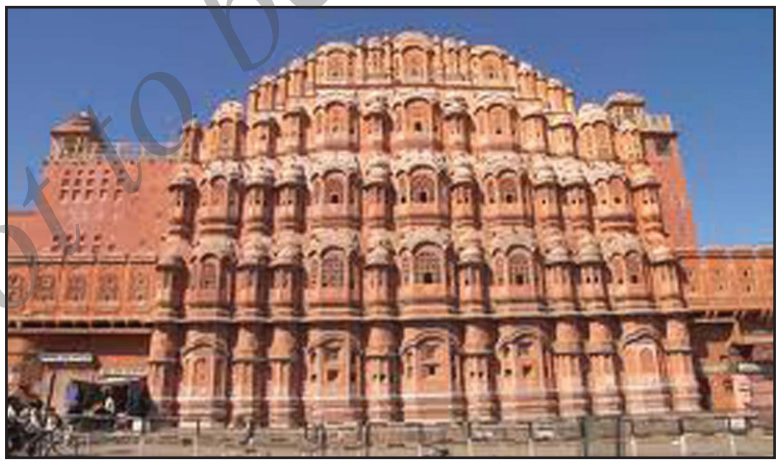

हवामहल, जयपुर

©TBS Not to be republished

चित्रकला के बारे में बताना है तो रजपुतों ने भित्ति चित्र और चिकिनी रंग बिरंगे वर्ण चित्रों को प्रोत्साहित किया। देवालय, महल, दीवार और पुस्तकों में अलंकार के लिए इन चित्रों को कलाकारों ने बनाया था।

क्रि, श के पर्याय आजकल सामान्य शक (सा.श) उपयोग कर रहे हैं। फ्रि.पू. के बदले सामान्य शक पूर्व (सा.श.पू) उपयोग हो रहा है। जात्यातीत दृष्टि से इस तरह का उपयोग कर रहे हैं।

काल गणना (सा.श)

रजपूतों का काल	-	650-1200
नागभट	-	8 वी शतमान
भोज	-	9 वी शतमान
धर्मपाल	-	8-9 वी शतमान
चौहान	-	12 वी शतमान

नए पद

1. चिकनी चित्रकला : सूक्ष्म चित्रित लघु चित्र
2. भित्ति चित्र : दिवारों पर चित्रित चित्र

I खाली जगहों को सूक्त शब्द से भरिए।

1. अरबों के आक्रमण से भारत की रक्षा किया प्रतिहार राजा _____
2. पालों की शासन का अंत करनेवाला सेन वंश का राजा _____
3. पृथ्वीराज चौहान की राजधानी _____

II जवाब दीजिए

1. प्रमुख रजपूत घरोनों के नाम लिखिए।
2. प्रतिहार घराने के प्रसिद्ध राजा कौन -कौन हैं?
3. पृथ्वीराज चौहान के बारे में टिप्पणी कीजिए।

©KTBS Not to be republished

4. राणा कुंभ के उपलब्धियों के बारे में लिखिए।

5. रजपूतों के काल में भारत से निर्यात होनेवाले चीजों की नाम बताइए।

6. ऊँट का मेला कहाँ लगता है?

7. रजपूतों के काल का प्रमुख साहित्य कृतियों के नाम लिखिए।

8. रजपूतों से प्रोत्साहित विद्याकेन्द्रों के नाम बताइए।

9. रजपूतों के काल का प्रमुख देवालय और महलों के नाम लिखिए ।

III समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।

1. 'पृथ्वीराज चौहान ' टिप्पणी लिखिए ।
2. राणा कुंभ की साधनाओं के बारे में लिखिए ।

IV नीचे के 'ए' सूची और 'बी' सूची के विषयों को जोडकर लिखिए ।

ए	बी
चाँद बर्दाई	गीतगोविदं
खोम्माण	पृथ्वीराज रासो
जयदेव	ऊँट मेला
गुलाबी नगर	बप्पारावल्
पुष्कर	जयपुर

कार्य कलाप :

1. रजपूतों से निर्मित देवालय, महल और किलों के चित्र विवरण के साथ संग्रह कीजिए।
2. रजपूतों के काल का प्रसिद्ध वास्तुशिल्प केन्द्रों को भूपट में पहचानिए।
3. रजपूतों के काल के साहित्यकार और उनके कृतियों की सूची बनाइए।

* * * * *

©KTBS Not to be republished

पाठ 6	प्रभुत्व

पाठ का परिचय

इस पाठ में प्रभुत्व का अर्थ, प्रकार, प्रजाप्रभुत्व सरकार, सर्वाधिकारी सरकार तथा समतावादी सरकार के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।

सामर्थ्य

1. प्रभुत्व का अर्थ समझना ।
2. प्रभुत्व के प्रकार समझना ।
3. प्रजाप्रभुत्व सरकार के बारे में जानना।
4. सर्वाधिकारी सरकार के बारे में समझना।
5. समतावादी सरकार की समानता व्यवस्था को जानना।
6. तीनों प्रभुत्वों के मध्य का अंतर को पहचानना।

©KTBS Not to be republished

प्रजाप्रभुत्व का अर्थ

एक राष्ट्र की प्रजा के सुख शांति तथा निश्चिंत जीवन निर्वाह के लिए व्यवस्थित प्रशासन की आवश्यकता होती है। ऐसे प्रशासन की व्यवस्था को नियमानुसार अधिकार चलाने की संस्था को प्रभुत्व कहते हैं। यह संस्था प्रजा के अनुकूल कानून की रचना कर उसकी स्थापना तथा शांति व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी लेती है।

प्रजाप्रभुत्व के प्रकार

प्रभुत्व के कई प्रकार हैं। ये निम्नालिखित हैं।

1. प्रजाप्रभुत्व सरकार (2) सर्वाधिकारी सरकार (3) समतावादी सरकार।

1) प्रजाप्रभुत्व सरकार : प्रजाप्रभुत्व एक अलग प्रकार की सरकार है। यह जनता द्वारा चयनित प्रतिनिधि द्वारा चलाए जानेवाला प्रशासन को प्रजाप्रभुत्व सरकार कहते है। लोगों के प्रोत्साहन से, प्रजा द्वारा ही प्रभुत्व पाकर प्रशासन चलाए जाने के कारण इसे प्रजा की सरकार भी कहते हैं। अपने प्रतिनिधियों को चुनने की स्वतंत्रता प्रजा को होती है। यही प्रजाप्रभुत्व की जान हैं। सही मायने में प्रजाप्रभुत्व - व्यक्ति को आवश्यक स्वतंत्रता, अभिप्राय प्रकट करने की स्वतंत्रता, संघ संस्थाओं की

स्थापना की स्वतंत्रता को सुनिश्चित कर राज्य के साथ व्यक्ति के संबंध को बनाने की व्यवस्था है। प्रजा प्रभुत्व का जनप्रिय निर्वाचन इस प्रकार है - प्रजा से, प्रजा के लिए, तथा प्रजाओं के लिए आवश्यक सरकार ही प्रजाप्रभुत्व है - अब्राहम् लिंकन।

प्रजाप्रभुत्व सरकार के तीन अंग है।

1. शासकांग 2. कार्यांग 3. न्यायांग

1)शासकांग प्रशासन की रचना का कार्य करता है। कार्यांग प्रशासन कार्य को कार्यरत करता है और न्यायांग - न्यायिक विषयों से संबंधित कार्य करता है। कार्यांग प्रशासन कार्य को कार्यरत करता है और न्यायांग - न्यायिक विषयों से संबंधित कार्य करता है।

प्रजाप्रभुत्व के मूलतत्व :

1. **स्वातंत्र्य :** स्वातंत्र्य प्रजाप्रभुत्व की जान है । प्रजा को मुख्य रूप से अपना अभिप्राय व्यघूक्त करने का स्वातंत्र्य, सरकार में भाग लेने का स्वांतत्र्य, अपने देश में धूमने का स्वातंत्र्य, सभा - समारोह में भाग लेने का स्वातंत्र्य तथा और भी कई स्वातंत्र्य रहते हैं ।

2. **समानता :** प्रजाप्रभुत्व सभी के समान स्थान मान पाने का तत्व पर आधरित है । सब की समानता के लिए यहाँ अवसर है । धर्म, जाति, समूह, भाषा, लिंग, अमीर, गरीब आदि भेद-भाव के बिना सबको समान रुप से देखता है ।

3. **भाईचारा :** प्रादेशिक भिन्नता, भाषा भिन्नता, धार्मिक भिन्नता आदी कई तरह के भिन्नता होने पर भी 'हम सब भाई -भाई हैं' भावना ही भाईचारा है । प्रजाप्रभुत्व में भाईचारा को प्रोत्साहन मिलता है ।

4. **जनता का कल्याण :** राजकीय, आर्थिक, सामाजिक क्षोत्रो में प्रगति करके, लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करके सुखी राज्य निर्माण करना ही प्रजाप्रभुत्व का मुख्या लक्ष्य है ।

5. **जनता का सरकार :** प्रजाप्रभुत्व जनता का सरकार है । समय सारणी के अनुसार चुनाव व्दारा प्रतिनिधियों को चुनकर, उनके व्दारा राजकीय प्रबंध चलता है । सामान्यतः प्रजा के इच्छा के अनुरुप प्रशासन चलना चाहिए । नहीं तो अगले चुनाव में जनप्रतिनिधि अपना अधिकार खो देते हैं ।

6. बहुमत का सरकार : प्रजाप्रभुत्व में एक आधिक राजकीय पक्ष सरकार की रचना करके प्रशासन करता है ।

©KTBS Not to be republished

7. सार्वजनिक टिप्पणी के अवकाश : प्रजाप्रभुत्व में प्रजा को आभिव्याक्ति स्वातंत्र्य को अवकाश है । इसलिए सरकार की नीति, नियम तथा कार्य की विमर्शा करने का, टीका - टिप्पणी करने का अधिकार प्रजा को रहता है । कारण सरकार अपना कार्य ठीक तरह से करते हैं । इस तरह प्रजाप्रभुत्व में सार्वजनिक अभिप्राय को ज्यादा महत्व रहता है ।

8. अधिकार विकेंद्रीकरण : अधिकार विकेंद्रीकरण प्रजाप्रभुत्व का और एक तत्व है । अधिकार केन्द्र, राज्य तथा स्थानीय सरकारों में विभाजित रहता है । अधिकार केंद्रीकरण से प्रजा की अभिप्राया को मान्याता मिलने में देर हो सकता है । कनिष्ट स्तर पर अधिकार मिलना भी मुश्किल होता है ।

9. वयस्क मतदान पध्दती : प्रजाप्रभुत्व में सरकार की रचना के लिए चुनाव अनिवार्य है । वयस्क मतदान व्दारा चुनाव होते हैं । 18 साल से ज्यादा उम्र के लोग मतदान में भाग लेकर मतदान करते हैं । इससे उत्तम सरकार की रचना होगी यह प्रजाप्रभुत्व की आशय है । इस तरह प्रजाप्रभुत्व के अनेक गुणलक्षण है ।

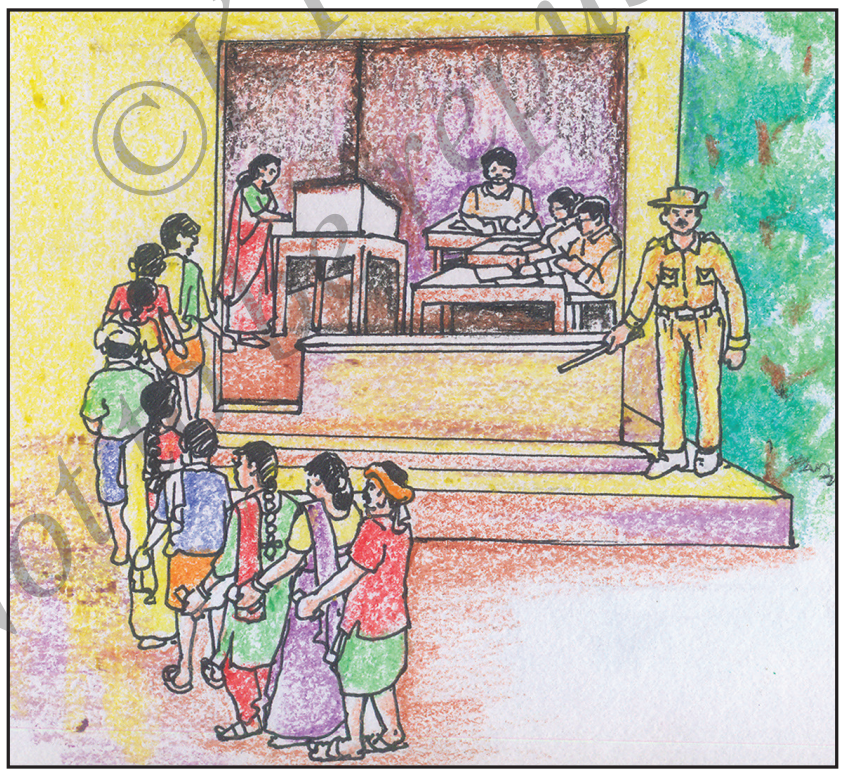

मतदान स्थान

© KTBS Not to be republished

2) सर्वाधिकारी सरकार : इस व्यावस्था में राज्य का संपूर्ण अधिकार एक व्याक्ति अथवा एक छोटा समूह में केंद्रीक्रत रहता है । किसीसे या किसी प्रकार के निर्बंध के बिना कोई एक व्यक्ति अथवा एक छोटा समूह का अभिप्रय ही सर्वाधिकार सर्कार व्यवस्था है । प्रजाप्रभुत्व स्वातंत्र्य को महत्व देता है तो सर्वाधिकार इसका विरोध करता है । सर्वाधिकारी अपने मन के अनुसार प्रशासन कर सकता है । ऐसे सरकार में न्याय, धर्म, आर्थिक, सामाजिक रीति सब प्रभु के आज्ञानुसार निर्धारित होता है । इसे विरुध्द आवाज उठाने का या प्रश्न करने का अधिकार प्रजा को नहीं रहता । न्याय - अन्याय के निर्धार में सर्वाधिकारी का ही अंतिम निर्णय होता है ।

प्रपंच के अलग - अलग भागो में प्राचीन काल से ही निरंकुश सर्वाधिकारी प्रभुत्व देखा जा सकता है । उदा - 16 वी शताब्दी में युरोप तथा 18 वी शाताब्दी में फ्रान्स, स्पेन, रुस तथा इंग्लेड देशो में सर्वाधिकारी शासन था ।

सर्वाधिकार सरकार

यह प्रजाप्रभुत्व सरकार व्यवस्था के विरुद्य सरकारी व्यवस्था है। राज्य का सम्पूर्ण अधिकार एक व्यक्ति या एक छोटे समूह में केंद्रीकृत होता है। किसी भी प्रकार के निषिद्धता के बिना एक व्यक्ति या एक समूह का अभिप्राय / मत ही सर्वाधिकारी सरकार व्यवस्था है। प्रजाप्रभुत्व स्वतंत्ररुप से कार्य करता है तो इसके विपरीत सर्वाधिकार इसका विरोध करता है। सर्वाधिकारी अपनी इच्छानुसार प्रशासन

©KTBS Not to be republished

चला सकता है। ऐसी सरकार में न्याय, धर्म, अर्थिकता, सामाजिक रीति रिवाज सभी प्रभु की आज्ञा पर निर्भर होते हैं। इस पर प्रश्न उठाने या विरोध व्यक्त करने का अधिकार प्रजा को नहीं होता। जनता की माँग तथा आशाओं की पूर्ति संबंधी कोई कानून नहीं होता। न्याय, अन्याय संबंधी फैसले (निर्णय) भी सर्वाधिकारी के ही अंतिम फैसले होते हैं।

विश्व के विविध भागों में प्राचीन काल से ही निरंकुश सर्वाधिकारी शासन । प्रभुत्व देखा जा सकता है। उदा: 16 वीं शताब्दी में यूरोप में तथा 18 वीं शताब्दी में फ्रांस, स्पेन, रुस तथा इंग्लेंड देशों में सर्वाधिकारी सरकार थी ।

सर्वाधिकार के लक्षण :

1. **एक पक्ष, एक नायक तथा एक ही राजकीय कार्य सूची :** सर्वाधिकार व्यावस्था में एक ही पक्ष को अवकाश रहता है । वह सार्वधिकारी का पक्ष होता है । दूसरे राजकीय पक्ष अथवा संघ - संस्था को कार्य करने का अवकाश ही नही रहता । उन्हे रद्द किया जाता है । सर्वाधिकारी के विरोध करनेवाले को निर्दय रुप से दबाया जाता है ।

1.एक नायक : सर्वाधिकार सरकार एक व्यक्ति के नायकत्व में चलता है। सर्वाधिकारी पर संपूर्ण भरोसा रखना पडता है । सर्वाधिकारी राष्ट्र की एकता का प्रतिनिधित्व करता है । सभी निर्णयों को अकेला सर्वाधिकारी ही लेता है। उसका निंर्णय ही अंतिम है ।

2. **व्यक्ती स्वातंत्र्य नहीं रहता :** सर्वधिकार व्यावस्था में व्यक्ति का वैयक्तिक स्वातंत्र्य या अधिकार नही रहता । वहाँ के कानून को अति गौरव देना ही व्यक्ति का स्वातंत्र्य मान जाता है । प्रजा को किसी प्रकार का संघ - संस्था बनाने का स्वातंत्र्य नहीं रहता । सर्वधिकारी प्रशासन के बारे में स्वतंत्र अभिप्राय व्यक्त करने का स्वातंत्र्य नही रहता । प्रजा को सर्वाधिकारी का शासन को मान्य करना या प्रशंसा करना पडता है ।

3. **राष्ट्रीयता का वैभवीकरण :** राष्ट्रीयता को बहु मुख्य प्रामुख्यता रहता है । लोगो में राष्ट्रीयता की भावना भरके, राष्ट्र प्रेम को बढावा देता है । राष्ट्र के लिए लोग किसी भी तरह का त्याग के लिए तैयार रहने की निरीक्षण सर्वाधिकार करता है ।

4. **एक चक्राधिपत्य :** सर्वधिकार एकचक्राधिपत्य होता है । लोगों के सामाजिक, राजकीय, अर्थिक शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक अंशों का नियंत्रण करता है । राष्ट्र के

©KTBS Not to be republished

विरध्द भी नहीं हना है । सब राष्ट्र के पर होना है ।

5. **जनांग श्रेष्ठता :** सर्वधिकार जनांग श्रेष्ठता को मानता है । प्रपंच के बाकी राष्ट्रों से अपना जनांग ही श्रेष्ठ समझता है उदा - हिट्लर जर्मनी का था। वह दुनिया के सभी राष्ट्रों से जर्मन ही श्रेष्ठ समझता था ।

सर्वधिकार प्रजाप्रभुत्व के विरुध्द व्यवस्था है । दूसरा महायुध्द सर्वधिकार का फल है । आजकल बहुत सारे आधुनिक राष्ट्र प्रजाप्रभुत्व अपनाने लगे हैं ।

समतावादी सरकार

समाज में उत्पादन का प्रमुख (प्रथम) अंश भूमि, मजदूरोंका श्रम, पूंजी सब समुदाय का होने का सिद्धान्त तथा प्रत्येक व्यक्ति का अपनी शक्ति के अनुसार कमाकर अपनी आवश्यकतानुसार प्राप्ति के तत्व का प्रतिपादन करने वाली सरकारी व्यवस्था ही समता वादी सरकार कहलाती है। यहाँ निजी जायदाद को अवसर नहीं होता। समानता के तत्व पर आधारित समतावाद-समाज में गरीब-अमीर, ऊँच-नीच भेद-भाव रहित मानव संबंधी व्यवस्था है। निजी जायदाद धीरे-धीरे अमीर और गरीब के अंतर को बढाकर असमानता उत्पन्न करती है। इस असमानता से गरीब-अमीर संघर्ष उत्पन्न होता है। अंत में अधिक संख्या में कमाने वाले लोगों की जीत होती है । किसी भी प्रकार के भेद भाव रहित समानता का समाज की सृष्टि होती है। वहाँ सभी सब के लिए मेहनत करने की परंपरा सब में पैदा होकार, सब लोग सुखी रहने की व्यवस्था का निर्माण होता है । यह समतावादी सरकार का सिद्धान्त है। यही उसका सार है। इसके प्रतिपादक जर्मनी के तत्वज्ञानी कार्लमार्क्स है।

समतावाद के लक्षण :

समतावाद के कुछ गुण लक्षण निम्न प्रकार के है ।

1. **जायदाद समुदाय के हाथ में रहता है :** अगर उत्पादन की भूमी, मजदूरों का श्रम तथा पूंजी निजी व्याक्तियो के हाथ में रहा तो शोषण होता है । हर व्यक्ति अपने सामर्थ्य के अनुसार मेहनत करना चाहिए । उनके आवश्यकतानुसार पाना ही समतावाद का तत्व है ।

2. **समानता :** समतावाद में हर एक प्रजा सभी रूप से समान होते हैं । वर्ग, जाति, धर्म, रंग के आधार पर बिना भेद भाव के सबको समान रुप से देखता है ।

3. **वर्गरहित समाज :** समतावद में अमीर गरीब नामक वर्ग ही नहीं रहते हैं ।

©KTBS Not to be republished

इस तरह वर्गरहित समाज का निर्माण हो जाता है । मेहनत करके काम करनेवालों का एक ही वर्ग रहना यह समतावाद का तत्व है ।

4. **मजदूरों को अधिकार :** निजी जायदाद अगर अस्तित्व में रहे तो लाभ के नाम पर शोषण हो सकता है । आगे चलकर अमीर गरीब के बीच संघर्ष पैदा होकर, अंत में अधिकार ज्यादा संख्या में रहे काम करनेवाले मजदूरों को मिलता है ।

5. **क्रांतिकारी बदलाव :** समतावादी व्यवस्था में बदलाव शीघ्र गति में होता है । तब हर एक को समान राजकीय, आर्थिक तथा सामाजिक अवकाश प्राप्त होते हैं । सभी लोग समानता से सुखी जीवन बिता सकते हैं ।

कुल मिलाकर समतावाद मानव संबंधी सरकारी व्यवस्था है । हर एक प्रजा समानता के साथ शोषण मुक्त जीवन बिता सकते है ।

समूह में चर्चा करके उत्तर दीजिए ।

1. प्रभुत्व किसे कहते हैं ?
2. प्रभुत्व के प्रकारों के नाम बताइए।
3. प्रजाप्रभुत्व किसे कहते हैं ?
4. सर्वाधिकारी सरकार का अर्थ बताइए।
5. सामतावादी सरकार किसे कहते है ? विस्तार से बताइए।

कार्य कलाप

प्रजाप्रभुत्व, सर्वाधिकारी, समतावादी सरकार इनके बीच का अंतर की सूची बनाइए।

* * * * *

©KTBS Not to be republished

पाठ 7	केंद्र सरकार, राज्य सरकार, न्यायांग

पाठ का परिचय

इस पाठ में केंद्र सरकार के शासकांग तथा कार्यांगों की रचना तथा व्याप्ति का परिचय दिया गया है। सांसदों की अर्हता तथा कार्य; राष्ट्रपति की अर्हता तथा कार्यों के बारे में बताया गया है। मंत्रिमंडल की रचना तथा कार्य प्रस्तुत किया गया है।.

सामर्थ्य :

1 केंद्र सरकार की रचना तथा कार्यों के बारे में जानना ।

2 शासकांग तथा कार्यांगों की रचना तथा उनके अधिकारों के बारे में विचार विमर्श करना।

3 लोकसभा तथा राज्यसभा की रचना तथा कार्यविधान के बारे में जानना ।

4 राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री के अधिकार तथा कार्य के बारे में जानना ।

संयुक्त भारत : भारत कर्नाटक सहित 28 राज्य तथा लक्ष्यद्वीप मिलकर 6 केंद्रशासित मिलाकर एक संयुक्त संघ है। संयुक्त संघ के सरकार को केंद्र सरकार कहते हैं। सरकार के तीन अंग हैं।

शासकांग : शासन या कानून बनाना इसका प्रमुख कार्य है । साथ ही यह कार्यांग पर नियंत्रण रखने का कार्य करता है।

कार्यांग : यह शासनों को प्रशासन के द्वारा कार्यरूप में लाता है।

न्यायांग : न्यायांग न्याय निर्णय करता है।

केंद्र शासकांग

केंद्र शासकांग को 'सांसद' या 'पार्लिमेंट' कहते हैं। भारत का सांसद राष्ट्रपति तथा दो सदनों से मिला हुआ (युक्त) है। दो सदन इस प्रकार हैं - 'लोकसभा' तथा 'राज्यसभा'। संसद अपनी सभा नई दिल्ली में रहे 'पार्लिमेंट भवन' में चलाता है। यहाँ सांसद सदस्य चर्चा कर पूर्ण देश को अन्वय होने के शासन बनाते हैं।

लोकसभा : 'लोकसभा' संसद का सदन है। सांसदों को 18 वर्ष उम्रवाली प्रजा निर्वाचन करती है। अधिकतया सदस्यों की संख्या 552 होती है।

©KTBS Not to be republished

सांसद : सांसदों की अधिकारावधि पाँच वर्ष होती है। सांसदों की इच्छानुसार उतनी बार चुनाव में स्पर्धा कर सकते हैं। पाँच वर्ष की अवधि के बाद लोकसभा का विसर्जन होता है।

सांसदों की योग्यता : 1. सांसद बनने वाले भारत के नागरिक रहना । 2. उनकी उम्र कम से कम 25 वर्ष होनी चाहिए । 3. न्यायालय से जेल सजा के अधीन नहीं रहना चाहिए। 4. वे संपूर्णतया आर्थिक नुकसान में नहीं रहना चाहिए।

लोकसभाध्यक्ष: सांसद अपने में से ही एक को लोकसभा अध्यक्ष (स्पीकर) के रूप में चुन लेते हैं। लोकसभाध्यक्ष के अधिकार तथा कर्तव्य इस तरह हैं - सदन में चर्चा करने के विषयों का निर्णय लेना । सदन में नियमों का पालन शांति तथा संयम बनाये रखना। ठीक तरह से चर्चा करना तथा निर्णय लेना ।

राज्यसभा : 'राज्यसभा' संसद का उन्नत सदन है। राज्यसभा के सदस्यों की अधिकतम संख्या 250 है। ये प्रजा से सीधा निर्वाचित नहीं होते। उनमें से 238 सदस्यों को सभी राज्यों के विधायक चुनते हैं। बचे 12 सदस्यों का राष्ट्रपति द्वारा नामांकन किया जाता है।

राज्यसभा सदस्य : राज्यसभा सदस्यों की उम्र 30 वर्ष होनी चाहिए। राज्यसभा सदस्यों की अधिकारावधि छः वर्ष होती है। भारत के उपराष्ट्रपति ही राज्यसभा के सभाध्यक्ष होते हैं।

सांसदों के अधिकार : संसद सभा तथा राज्यसभा सदस्यों को एम.पी (मेंबर ऑफ पार्लिमेंट) कहते हैं । इनको संसद में वाक्स्वातंत्र्य रहता है। इन्होंने संसद में व्यक्त किये हुए अभिप्रायों को किसी भी न्यायालय में प्रश्न नहीं कर सकते ।

विपक्ष नेताओं का पात्र तथा कार्य : प्रशासित सरकार गलतियाँ करने पर उन्हें अवगत कराना। सरकार के नीति नियमों का परामर्श करना । सरकार, मंत्रिमंडल तथा अधिकारियों को सतर्क करना। विरोधपक्ष के नेताओं के लिए गौरवान्वित स्थान है।

संसद के अधिकार तथा कार्य

संसद के कुछ मुख्य अधिकार तथा कार्य इस तरह हैं ।

1. शासन (कानून) रचना का अधिकार : संसद का मुख्य कार्य ही शासन रचना करना है। आवश्यकता के अनुसार संसद शासन के लोप दोष निकालता है, इसका अलावा रद्द कर सकता भी है। मुख्य रूप से केंद्र मंत्रिमंडल (प्रधानमंत्री सहित) पर नियंत्रण कर सकता है। (अगर बर्ताव तथा नीतियाँ असमाधान रहने से बहुमत से मंत्रिमंडल का विसर्जन करने का भी संसद का मुख्य अधिकार है।)

©KTBS Not to be republished

2. आर्थिक अधिकार : आर्थिक विधेयक (बिल) पहले लोकसभा में ही पेश करना चाहिए। संसद की अनुमति के बिना सरकार किसी भी तरह का कर इकट्ठा नहीं कर सकते तथा धन खर्च नहीं कर सकते। अर्थात् देश की आर्थिक व्वयस्था पर संसद का पूर्ण नियंत्रण रहता है।

3. प्रशासनिक अधिकार : संसद में पूछे जानेवाले प्रश्नों को जिम्मेदारी से उत्तर देने का कर्तव्य है। सांसद मंत्रियों की कार्यतत्परता का अवलोकन कर होनेवाली गलतियाँ तथा अधिकार की टिप्पणी कर सकता है।

4. संविधान के लोप दोष सुधारने का अधिकार : सामान्यतया संसद को संविधान के लोपदोष (सुधारने) का अधिकार है।

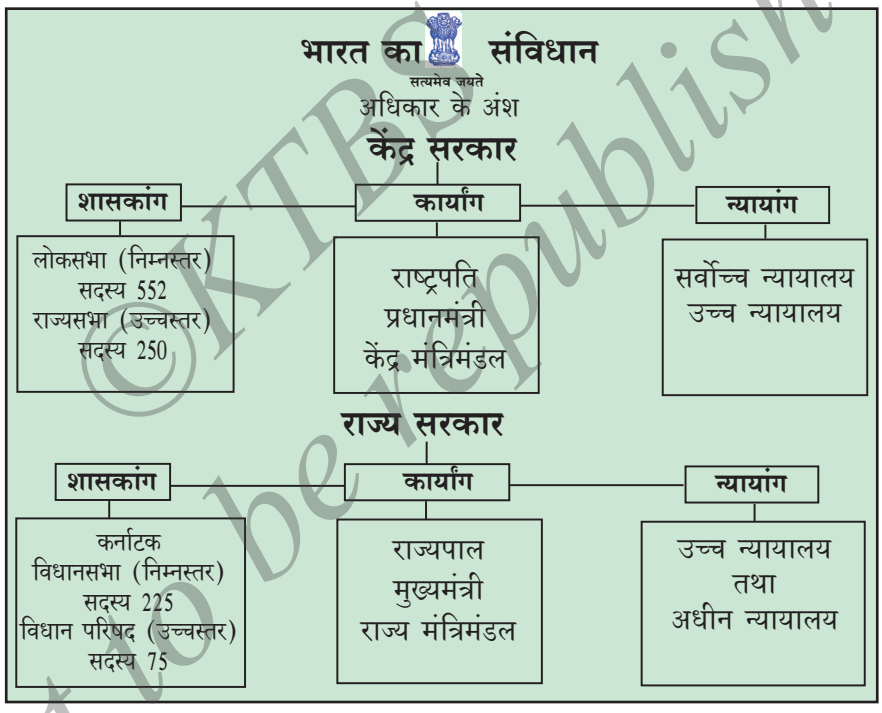

केंद्र कार्यांग : केंद्र कार्यांग, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्रि तथा उनकी मंत्रिमंडल शामिल रहता है।

राष्ट्रपति

भारत गणतंत्र के अत्युन्नत अधिकारी को 'राष्ट्रपति' कहते हैं। इन्हें देश के प्रथम नागरिक कहते हैं। इनका अधिकृत निवास ही 'राष्ट्रपति भवन' है। संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य तथा सभी राज्य विधानसभा के निर्वाचित सदस्य राष्ट्रपति का निर्वाचन करते हैं।

©KTBS Not to be republished

भारत का राष्ट्रपति बनना हो तो उनकी आयु कनिष्ठ 35 वर्ष की होनी चाहिए। तथा लोकसभा के सदस्यों की सभी क्षमताएँ होनी (रहनी) चाहिए। राष्ट्रपति की अधिकारावधि पाँच वर्ष की है।

संसद भवन, नई दिल्ली

राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली

अधिकार : (1) राष्ट्रपति लोकसभा में बहुमत पाये पार्टी के नेता को प्रधानमंत्री के रूप में चुनते हैं। प्रधानमंत्री की सलाहानुसार अन्य मंत्रियों को नियुक्त करते हैं । (2) किसी भी अपूर्ण शासन को कानून बनने राष्ट्रपतिजी का अंकित अत्यावश्यक है। (3) रक्षा विभागों के दंडनायक भी हैं। युद्ध ललकारने का अधिकार भी इन्हीं को है। (4) इन्हें उच्च तथा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति करने का अधिकार है। (5) अपराधियों को क्षमादान करने और दंड कायम करने का अधिकार है ।

उपराष्ट्रपति : केंद्र संसद के दोनों सांसदों को उपराष्ट्रपतिजी का निर्वाचन करते हैं। भारत का उपराष्ट्रपति बनना हो तो उन्हें कम से कम 35 वर्ष की उम्र होनी चाहिए। तथा राष्ट्रपति बनने के पूर्ण योग्यताएँ रहनी चाहिए। उनकी अधिकारावधि

©KTBS Not to be republished

5 वर्ष की है। वे राज्यसभा के अध्यक्ष होते हैं। राष्ट्रपति की गैरमौजूदगी में उनके कार्य निभाते हैं।

प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री का महत्व: संसदीय पद्धति में प्रधानमंत्रिजी का पात्र महत्व है। देश की सुरक्षा बनाये रखने में इनकी जिम्मेदारी महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्रिजी-

1. लोकसभा के नायक हैं।
2. खातों के बटवारे में इन्हें पूर्ण अधिकार है।
3. मंत्रिमंडल के पुनरुत्थान का अधिकार इन्हें है।
4. विविध विभागों के मंत्रियों की नियुक्ति करने के लिए राष्ट्रपतिजी को शिफ़ारिश करते हैं।
5. मंत्रियों को निष्कासित करने के लिए राष्ट्रपतिजी को शिफ़ारिश करते हैं।

जानो.

1. नई दिल्ली का संसद भवन, राष्ट्रपति भवन आदि भव्य इमारतों का निर्माण अंग्रेजों के समय में हुआ था। राष्ट्रपतिभवन में 340 कमरे हैं। यह 1929 में पूर्ण हुआ।

समूह में चर्चा करके उत्तर दो ।

1. केंद्र सरकार तीन अंग कौन-कौन से हैं?
2. लोकसभा सदस्यों की योग्यताएँ कौन-कौन सी हैं?
3. भारत गणतंत्र के उन्नत (उच्च) अधिकारी कौन हैं?

क्रियाकलाप

1. अपने स्कूल में लोकसभा सदन के कलाप के नकल रूप का प्रदर्शन करो ।
2. भारत के प्रधानमंत्रियों की यादि बनाकर स्कूल में प्रदर्शन करो ।

©KTBS Not to be republished

संघीय भारत

29 राज्य तथा 6 केंद्रशासित प्रदेश और कोष्टक में राजधानियों के नाम दिए गए हैं।

राज्य

1. आंध्र प्रदेश (अमरावति)
2. अरुणाचल प्रदेश (इटानगर)
3. असम (दिसपुर)
4. बिहार (पटना)
5. गोवा (पणजी)
6. गुजरात (गांधीनगर)
7. हरियाणा (चंढीगढ़)
8. हिमाचल प्रदेश (शिमला)
9. जम्मू और कश्मीर (श्रीनगर)
10. कर्नाटक (बेंगलूरु)
11. केरल (तिरुवनंतपुरम्)
12. मध्यप्रदेश (भोपाल)
13. महाराष्ट्र (मुंबई)
14. मणिपुर (इम्फाल)
15. मेघालय (शिलांग)
16. मिज़ोराम (एज़वल)
17. नागालैण्ड (कोहिमा)
18. ओड़िसा (भुवनेश्वर)
19. पंजाब (चंढीगढ़)
20. राजस्थान (जयपुर)
21. सिक्किम (गंगटोक)
22. तमिलनाडु (चेन्नै)
23. त्रिपुरा (अगरतला)
24. उत्तरप्रदेश (लखनऊ)
25. पश्चिम बंगाल (कोलकत्ता)
26. छत्तीसगढ (रायपुर)
27. झारखंड (राँची)
28. उत्तरांचल (देहरादून)
29. तेलंगाण (हैदराबाद)

केन्द्रशासित प्रदेश

1. अंडमान तथा निकोबार द्वीप (पोर्ट ब्लेर)
2. चंढीगढ (चंढीगढ़)
3. दादरा तथा नगर हवेली (सिलवासा)
4. दमन तथा दीव (दमन)
5. लक्षद्वीप (कवरत्ति)
6. पुदुचेरी - पुदुचेरी
7. दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी प्रदेश (दिल्ली)

1-12-1992 से 'दिल्ली' को 'राष्ट्रीय राजधानी प्रदेश' कहा गया है। उसे विशेष स्थान-मान दिये जाने पर भी वह केंद्र शासित प्रदेश है।

भारत की राजधानी : नई दिल्ली, देश का भूभाग 32.87,263 वर्ग कि.मी

राष्ट्रगान -जनगणमन, राष्ट्रगीत - वंदे मातरम्, राष्ट्रभाषा - हिन्दी, राष्ट्रीय प्राणी -बाघ, राष्ट्रीय पक्षी - मोर, राष्ट्रीय पुष्प - कमल ।

©KTBS Not to be republished

राज्य सरकार

इस पाठ में राज्य सरकार के अंग शासकांग, कार्यांग तथा न्यायांग का परिचय दिया गया है। साथ में द्विसदन व्यवस्था, उन्नत मकान तथा निम्न मकानों के महत्व का निरूपण किया गया है। विधायकों की क्षमता तथा कार्य; मुख्यमंत्री तथा राज्यपाल की क्षमता तथा अधिकार के बारे में भी यहाँ विवरण दिया गया है।

सामर्थ्य

1 राज्य सरकार का गठन तथा कार्यों को जानना ।

2 राज्य सरकार की कार्यक्षेत्र जानना ।

3 राज्यपाल की क्षमता तथा अधिकार, मुख्यमंत्रि के अधिकार तथा कर्तव्यों को जानना ।

विधानसभा का संयुक्त अधिवेशन

विधानसभा तथा विधानपरिषद मे शासन(कानून)बनाते हैं ।

Not to be Republished ©KTBS

विधानसौध बेंगलूरु - यहाँ से राज्य का प्रशासन चलता है। (कार्यांग)

कर्नाटक का उच्च न्यायालय, बेंगलूरु - यहाँ न्याय निर्णय देते हैं (न्यायांग)

राज्यों में राज्य सरकारें हैं। इनका अधिकार क्षेत्र छोटा है। फिर भी इन्हें अपना ही स्वयं अधिकार या स्वायत्तता है। राज्य मुख्यतया भाषा के आधार पर गठित हुए हैं। कर्नाटक में कन्नड़ राज्य भाषा है।

हमारा संविधान सभी राज्यों में एक रूपेण राज्य प्रशासन बनाया है। सामान्यतया राज्य सरकार केंद्र सरकार का नमूना बना है। (देखो पृष्ठ संख्या 51)

सुवर्ण सौध, बेलगावी

राज्य शासकांग

©KTBS Not to be republished

शासकांग, कार्यांग तथा न्यायांग - ये सरकार के तीन अंग हैं। राज्यपाल तथा विधानमंडल (दोनों सदन) मिलकर राज्य शासकांग होता है। शासकांग राज्य के शासन बनाता है।

विधानसभा (निचला सदन)

रचना (गठन): यह आम चुनावों में निर्वाचित सदस्यों का सदन है। कर्नाटक के विधानसभा में कुल 224 स्थान हैं।

विधानसभा के सदस्य अपने में से एक को (एम.एल.ए) सभाध्यक्ष (स्पीकर) के रूप में चुनते हैं। विधानसभा की अधिकारावधि पाँच वर्ष की है। यह स्थायी सभा नहीं है। विधान सभा सदस्यों की क्षमताएँ

- भारत का नागरिक होना चाहिए।
- कनिष्ठ 25 वर्ष की उम्र होनी चाहिए।
- सरकार में कोई भी लाभदायक ओहदे पर नहीं रहना चाहिए ।
- दिवाला नहीं होना चाहिए।

विधानसभा के अधिकार तथा कार्य

- वस्तुतः विधानसभा ही राज्य का शासकांग है।
- आर्थिक विषय में विधानसभा का निर्णय ही अंतिम होता है।
- प्रमुखतया मंत्रिमंडल का (मुख्यमंत्रि सहित) सरकार पर नियंत्रण है। मंत्रिमंडल के कार्य / नीतियाँ अतृप्त - होने पर अविश्वास पारित कर बहुमत साबित करने से मंत्रिमंडल निष्कासित (रद्द) होता है।
- विधानसभा के सदस्य राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव में भाग लेते हैं।

विधानपरिषद (उन्नत सदन)

रचना : विधानपरिषद के सदस्यों (एम्.एल.सी) की संख्या विधानसभा की कुल संख्या के 1/3 से अधिक नहीं होनी चाहिए। कर्नाटक विधानपरिषद सदस्यों का बल 75 होना अनिवार्य है। कुछ सदस्यों को राज्यपाल के द्वारा नामांकन किया जाता है। विधानसभा के सदस्यों के अलावा स्थानीय संस्था, स्नातक तथा पंजीकृत शिक्षकों को चुना जाता है।

विधानपरिषद् के सदस्यों की अधिकारावधि छः वर्ष की होती है। सदस्यों की उम्र न्यूनतम 30 वर्ष की होनी चाहिए।

©KTBS Not to be republished

राज्य कार्यांग

राज्य कार्यांग राज्यपाल तथा मुख्यमंत्रि तथा उनके मंत्रिमंडल से युक्त है। साम ान्यतया उसकी रचना (गस्त) तथा कार्य केंद्र कार्यांग से मिलता जुलता है। (पृष्ठ संख्या 51 देखो) ।

राज्यपाल

राज्यपाल संवैधानिकता से ही कार्यांग के मुखिया (मुख्यस्त) हैं। कार्यांग के ठीक (मुख्यस्त) मुखिया मुख्यमंत्री हैं। राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्राध्यक्ष करते हैं। राज्यपाल की अधिकारावधि पाँच वर्ष की होती है।

राज्यपाल की क्षमता : ● भारत का नागरिक होना । कम से कम 35 वर्ष की उम्र होना । ● संसद या राज्य शासकांग के सदस्य बने रहना ।

राज्यपाल के अधिकार : ● राज्यपाल मुख्यमंत्री की नियुक्ति कर उनके सलाहानुसार अन्य मंत्रियों को नियुक्त करते हैं। शासनसभा से ऊशलळशशीज्ञश=च्श्रश शासन अमल में लाना हो तो राज्यपाल की अनुमति होनी चाहिए। राज्य में संवैधानिक अस्थिरता होने पर राज्यपाल राष्ट्रपति को रिपोर्ट देकर राज्य सरकार निलंबित कर सकते हैं।

● राष्ट्राध्यक्ष राज्य सरकार का विसर्जन कर, राज्य में राष्ट्राध्यक्ष का शासन जारी अवधि में राज्यपाल ही राज्य का शासन वास्तविकता से चलाते हैं।

राज्य के मुख्यमंत्री तथा मंत्रिमंडल

केंद्र में जिस तरह प्रधानमंत्री सरकार के मुखिया (मुख्यस्थ) होते हैं उसी तरह राज्य में मुख्यमंत्री सरकार के मुखिया (मुख्यस्थ) होते हैं। विधानसभा चुनाव में बहुमत पाये पक्ष (पार्टी) या समूह के नेता को मुख्यमंत्री के रूप में राज्यपाल नियुक्त करते हैं।

मुख्यमंत्री के अधिकार तथा कर्तव्ये

- मुख्यमंत्री के सलाहानुसार राज्यपाल मंत्रियों को नियुक्त करते हैं।
- मुख्यमंत्री को मंत्रियों खाता बटवारा करना तथा बदलाने का अधिकार है।
- मंत्रियों को पदच्युत (निष्कासित) करने का अधिकार मुख्यमंत्री को है।
- केंद्र तथा राज्य के बीच उत्तम संबंध बनाये रखने के संबंध में मुख्यमंत्री प्रमुख पात्र निभाते हैं।

©KTBS Not to be republished

समूह में चर्चा करके उत्तर दो ।

1. प्रजाप्रतिनिधि रहे राज्य शासन सभा कौन सी है?
2. शिक्षक (अध्यापक) प्रतिनिधि किस सदन के सदस्य हैं?
3. अपने विधानसभा क्षेत्र के विधायक कौन हैं?
4. अपने जिले के प्रभार मंत्रि कौन है?
5. मुख्य मंत्री के मुख्य अधिकार तथा कर्तव्य कौन-कौन-सी हैं ?

क्रिया कलाप

1. विधानसभा तथा विधानपरिषद को अपने बड़ों के साथ जाकर देखो या दूरदर्शन में देखो ।
2. कक्षा में स्कूल मंत्रिमंडल की रचना अध्यापक की सहायता से बनाओ ।

न्यायांग

यह पाठ कानून तथा न्यायांग व्यवस्था से संबंधित है। पाठ में सर्वोच्च न्यायाधीश तथा उच्च न्यायाधीश की क्षमता तथा कार्य; तथा अधीन न्यायालय और लोक अदालतों के कार्यों का विवरण दिया गया है।

सामर्थ्य

1 कानून तथा न्यायांग राज्य प्रशासन में निर्वहण के पात्र की प्रशंसा करना ।
2 भारतीय न्यायांग व्यवस्था की प्रशंसा को व्यक्त करना ।
3 लोक अदालतों के बारे में अधिक जानकारी का संग्रह करना ।

कानून के अनुसार न्यायनिर्णय देने की प्रत्येक व्यवस्था ही न्यायांग व्यवस्था है। कानून तथा न्यायांग - ये दोनों राज्य की प्रशासन व्यवस्था में बहुमुख्य पात्र निभाते हैं।

न्यायालय के कार्य : न्यायालय शासकांग द्वारा बनाये नियमों का अर्थविवरण है। वे व्यक्तियों के बीच तथा सरकारों के बीच विवाद का निर्णय देते हैं। नागरिकों का जीव, संपत्ति, मर्यादा तथा अधिकारों की रक्षा करने का बहुमूल्य कार्य न्यायालय करते हैं। न्यायालय शासकांग या कार्यांगों के नियंत्रण अधीन में नहीं है; वे निष्पक्षपातता से स्वतंत्र रूप से कर्तव्य निभाते हैं ।

सर्वोच्च न्यायालय

हमारा संविधान देश की एकता को बनाये रखने की दृष्टि से, सारे देश में अन्वय होने न्यायांग पद्धति को अपनाया है। देश का अत्युत्तम न्यायालय ही सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) है। इसमें मुख्य न्यायाधीश तथा अन्य 25 न्यायाधीश रहते हैं। इनको राष्ट्रपति नियुक्त करते हैं। सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली में है।

©KTBS Not to be republished

सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली

उच्च न्यायालय

राज्य स्तर में अत्युन्नत स्तर रहा न्यायालय ही उच्च न्यायालय है। कर्नाटक का उच्च न्यायालय (हाईकोर्ट) बेंगलूरु महानगर में है। उच्च न्यायालय मुख्य न्यायाधीश तथा अन्य न्यायाधीशों से युक्त है। देश में कुल 24 उच्च न्यायालय हैं ।

कर्नाटक का उच्च न्यायालय, बेंगलूरु

©KTBS Not to be republished

उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की क्षमताएँ

● भारत का नागरिक बने रहना । ● कनिष्ट 10 वर्ष तक भारत के न्यायांग में सेवा प्रदान किये रहना । या ● दस वर्ष तक हाईकोर्ट में वकील बनकर सेवा प्रदान किये रहना ।

विविध स्तर के न्यायालय

सर्वोच्च न्यायालय	- राष्ट्रस्तर पर (नई दिल्ली में)
उच्च न्यायालय	- राज्यस्तर पर
अधीन न्यायालय	- राज्य के जिले, महानगर

समूह में चर्चा करके उत्तर लिखो ।

1. न्यायांग के मुख्य कार्य क्या है?
2. राष्ट्रस्तर का अत्युन्नत न्यायालय कौन सा है?
3. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश बनने के लिए कौन सी क्षमताएँ रहनी चाहिए?

क्रिया कलाप

1. स्कूल में न्यायालय की नकल दृश्य का प्रदर्शन करो ।
2. नजदीक के न्यायालय जाकर वहाँ के वाद-विवादों को सुनो ।

* * * * *

©KTBS Not to be republished

पाठ 8	मानवाधिकार

पाठ का परिचय

इस पाठ में मानवाधिकार का अर्थ विवरण, उनका महत्व तथा विविध मानावाधिकार के बारे में बताया गया है।

सामर्थ्य

1. मानवाधिकार के अर्थसमझना।
2. मानवाधिकार क्यों आवश्यक है? इसके बारे में जानना।
3. अलग-अलग मानवाधिकार के बारे में जानना।
4. बच्चों के अधिकार के बारे में समझना।

©KTBS Not to be republished

मानवाधिकार का अर्थ तथा महत्व

मानव को गौरवान्वित जीवन बिताने तथा अपने व्यक्तित्व को विकास करने में सहायक होनेवाले अवकाश ही मानवाधिकार हैं। सभी व्यक्ति स्वतंत्रता से जीने, समानता का जिन्दगी बिताने, अपना विचार व्यक्त करने तथा गौरवान्वित जीवन बिताने में सहायक होने वाले अवकाशों को मानवाधिकार कहते हैं। सभी व्यक्ति स्वतंत्रता से जीने के लिए योग्य हैं तथा उन्हें किसी विषय पर, किसी कारण वश निर्बंध नहीं कर सकते। मानवाधिकार की परिकल्पना नागरीकता की अभिवृद्धि के साथ जन्म लिया। व्यक्ति को उत्तम जीवन बिताने के लिए अधिकारों की आवश्वयकता है। हर एक को गौरव की जिंदगी मूलभूत अधिकार है। इसके अलावा मानवाधिकार भेदभाव रहित हैं।

दुनिया में प्रजाप्रभुत्व सरकारें अस्तित्व में आने के बाद मानवाधिकारों को ज्यादा महत्व मिला। कई राष्ट्र अपने संविधान में मानवाधिकारों की रक्षा करने के लिए मूलभूत - अधिकार प्रदान किए । इस विकास से प्रजा को मूलभूत अधिकार उपयोग करने का अवकाश मिला। बाद में हुए दो महायुद्धों के कारण सामाजिक, राजकीय तथा अर्थिक कारणों से मानव का शोषण होने लगा। इसलिए सभी राष्ट्र

प्रजा को गौरव पूर्वक देखने के लिए ठीक मानदंड रुपित करना चाहा। इसके फलस्वरुप अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों से रचित मानवाधिकारों को दिसंबर 10, 1948 के दिन विश्वसंस्था का सामान्य सभा अंगीकृत किया।

मानवाधिकार के भेद

विश्वसंस्था से अंगीकृत मानवाधिकारों के हिसाब से व्यक्ति पैदायिशी स्वतंत्र्य, समानता तथा गौरव का पात्र होता है। जनांग, भाषा, धर्म, लिंग, रंग आदी के आधार पर किसी भी तरह का भेदभाव नहीं कर सकते। इसलिए एक दूसरे से भाईचारे की भावना (दृष्टि) से देखना चाहिए ।

किसी भी व्यक्ति को गुलाम नहीं बना सकते। किसी भी व्यक्ति को चित्रहिंसा या अमानवीय रीति के शिक्षा नहीं दे सकते। कोई भी व्यक्ति को इच्छानुसार बंधन, जेलवास या तडीपार शिक्षा नहीं दे सकते।

हर एक को स्वतंत्र अभिप्राय तथा अभिव्यक्ति करने का अधिकार रहता है। हर एक व्यक्ति के पास चिंतन करने का, आत्मसाक्षी तथा धार्मिक स्वातंत्र्य का अधिकार रहता है। हर व्यक्ति को शांतिपूर्ण सभा करने का तथा संगठन करने का स्वतंत्र्य रहता है। लेकिन किसी को भी एक संगठन में शामिल होने के लिए मजबूर नहीं कर सकते । हर एक व्यक्ति को अपने देश के सरकार में प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से भाग लेने का स्वातंत्र्य रहता है।

उद्योग का अधिकार समान काम के लिए समान वेतन पाना, काम का समय, वेतन तथा वेतन के साथ छुट्टी तथा विश्रांति पाने का अधिकार हर एक को है। रोटी, कपडा, मकान, सेहत, रक्षा तथा आवश्यक सामाजिक सेवा पाने का अधिकार हर एक को आवश्यक समाजिक सेवा पाने का अधिकार हर एक को है। इसके अलावा हर एक को उचित तथा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा पाने का अधिकार है।

बच्चों का अधिकार

मानवाधिकारों में बच्चों के अधिकार को भी अवकाश है। हर बच्चे को नैसर्गिक रुप से कुछ अधिकार मिलते हैं। हर एक बच्चे को बचपन में अपने माता-पिता के

©KTBS Not to be republished

साथ रहने का, दैहिक रक्षा, आहार, शिक्षा तथा अच्छा सेहत पाने का सहूलियत पाने का अधिकार है। इसके अलावा जनांग, लिंग, रंग, धर्म तथा विकलांग के आधार पर बिना भेद-भाव के मानवाधिकार बच्चों को मिलते हैं । भारत के संविधान में चौदह वर्ष तक के बच्चों को उचित तथा अनिवार्य शिक्षा पानेका अधिकार है। बच्चे बिना शिक्षा के काम करने से बच्चों के अधिकार का उल्लंघन होता है। बाल कार्मिक पद्धति मानवाधिकार का उल्लंघन है। मजदूरी या कोई भी काम बच्चों से करवाना बालकार्मिक पद्धति है।

बाल कार्मिक कानून - 1986

इन कानून के अनुसार 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को किसी काम पर नहीं रख सकते। इस कानून के विरुद्ध बाल कार्मिकों को नियुक्त करनेवालों को 3 महीने से 1 साल तक कारावास, दंड अतवा दोनों शिक्षा लिम सकता है।

बाल कार्मिक पद्धति को निषेध करनेवाले प्रमुख काम (वृत्ति)

रेलवे से संबंधित काम या कामगारी, आटोमोबैल वर्कशॉप, गेरेज, बुनाई, खनन, विषकारी या स्फोटक निर्वहण घटक, बॉर-होटल, मनोरंजना स्थल, सर्कस, शीशो तैयारी का कारखाना, बीडी, पॉलिश, टैर, कार्पेट्, सिमेंट, रंग, दियासिलाई, पटाखा, साबून, सीसा, पारा, कीटनाशक आदी उत्पादन करने के जगह आदी। इन जगाहों में काम करने के लिए बच्चों को लेना महापराध है।

बालमजदूर

© KTBS not to be republished

मानावाधिकार का संरक्षण

इस तरह मानवाधिकार, बच्चों का अधिकार तथा स्त्रीयों का अधिकार आदि मानव जीवन के लिए अत्यावश्यक हैं । लेकिन मानवाधिकारों का उल्लंघन निरंतर हो रहा है। इसलिए उन्हें संरक्षण करना है। विश्व स्तर में विश्व मानवाधिकार आयोग, राष्ट्र स्तर पर राष्ट्र मानवाधिकार आयोग तथा राज्य स्तर पर राज्य मानावाधिकार आयोग मानावाधिकारों के उल्लंघन रोकने के लिए सूक्त क्रम जारी कर रहे हैं।

इसके साथ सभी को उत्तम जिंदगी बिताने के लिए तथा सुस्थिर परिसर का आवश्यकता है। अच्छी सेहत, मकान, आहार पानी तथा स्वच्छता के साथ समग्र उत्तम परिसर की संरक्षण करना भी मानवाधिकार का संरक्षण ही है। इस तरह विश्वसंस्था 2012 के बाद घोषण किया है। उसे अमल में लाना दुनिया के राष्ट्रों का प्रमुख कर्तव्य है।

चर्चा करके उत्तर दीजिए

1. मानावाधिकार किसे कहते हैं?
2. मानावाधिकार की क्या आवश्यकता है?
3. मानावाधिकार के कितने भेद हैं? नाम बताइए।
4. बच्चों के अधिकार कौन-कौन से हैं?
5. मानावाधिकार की रक्षा के लिए कितने आयोग हैं? नाम बताइए।

कार्य कलाप

1. बच्चों के अधिकार के बारे में चर्चा स्पर्धा कीजिए।
2. मानवाधिकार उल्लंघन का कोई घटना देखा है तो उसके बारे में लिखिए ।

* * * * *

©KTBS Not to be republished

पाठ 9	यूरोप - एशिया का पर्याय द्वीप

पाठ का परिचय

इस खंड में यूरोप खंड का स्थान, विस्तीर्ण (विस्तार) तथा भौगोलिक सन्निवेश, प्राकृतिक तथा वायुगुण विभाग, सस्यवर्ग, व्यवसाय, पशुपालन तथा जनसंख्या का विकास, बटवारा तथा सांद्रता का परिचय दिया गया है।

सामर्थ्य

1 यूरोप का स्थान, गरात्र तथा भौगोलिक सन्निवेशों को जानना ।

2 यूरोप के प्राकृतिक तथा वायुगुण के विभागों को जानना ।

3 सस्यवर्ग पर वायुगुण प्रदेश के प्रभाव का सम करना।

4 यूरोप के औद्योगिक खनिज से निर्धार होने के बारे में जानकारी लेना ।

5 यूरोप की असमान जनसंख्या वितरण, सांद्रता तथा स्थानांतरण को नियंत्रण करने के अंशों के बारे में विवरण ।

प्रस्तावना : संसार की अधिक जनसांद्रता तथा नगरीकरण हुए भूखंडों में यूरोप एक है। इसके अलावा समृद्ध तथा औद्योगिकरण हुआ भूखंड है। विस्तीर्ण में संसार में छठा स्थान पाया है। यह संकीर्ण तथा वैविध्य भौगोलिक सन्निवेश सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजकीय व्यवस्था से पूर्ण है। अनेक बड़े तथा छोटे देश पाया है, उनकी कुल संख्या 56 होती है।

1. स्थान, विस्तीर्ण तथा भौगोलिक सन्निवेश

स्थान : यूरोप 10॑ पश्चिम से 60॑ पूर्व रेखांश तथा 36॑ उत्तर से 72॑ उत्तर अक्षांश में बसा है।

विस्तीर्ण : यूरोप संसार का दूसरा छोटा भूखंड है। उसका कुल विस्तीर्ण 10.4 मिलियन च. कि. मी है। यह भारत के विस्तीर्ण से तीन गुना बड़ा है। यह खंड पृथ्वी के कुल विस्तीर्ण में 7 प्रतिशत पाया है। लेकिन संसार की जनसंख्या में 1/4 भाग पाया है।

©KTBS Not to be republished

भौगोलिक सन्निवेश : यूरोप एशिया खंड का पर्याय द्वीप है। यह खंड तीनों ओर पानी से आवृत है; उत्तर में बेरेंट समुद्र, पश्चिम में अट्लांटिक सागर तथा दक्षिण में मेडिटरेनियन समुद्र आवृत्त है।

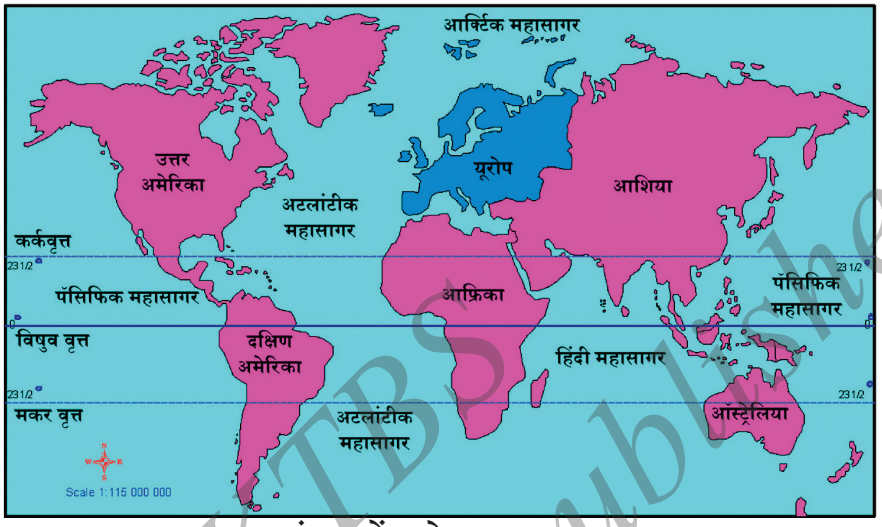

संसार में यूरोप का स्थान

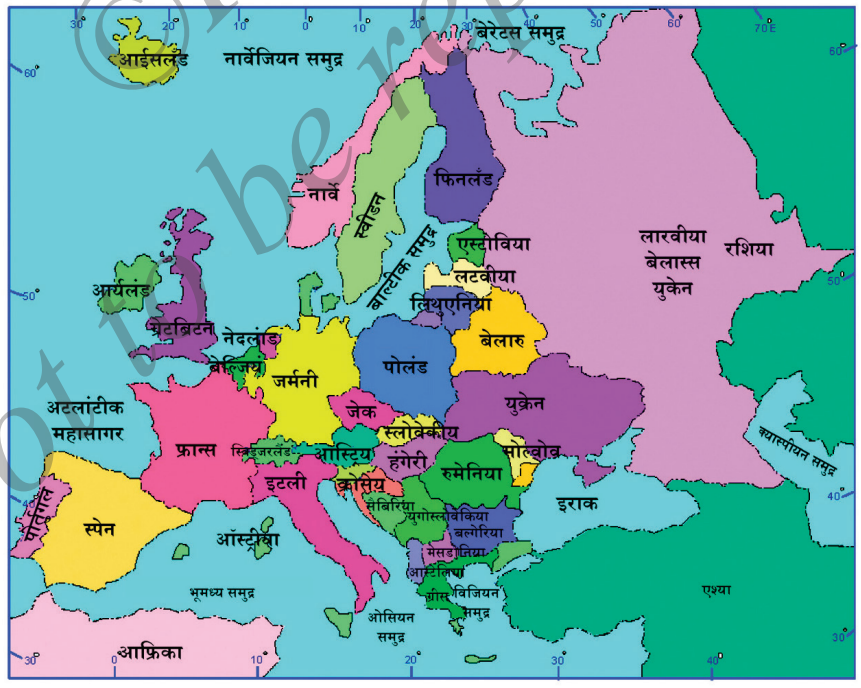

स्थान, विस्तीर्ण तथा भौगोलिक सन्निवेश

©KTBS Not to be republished

यूरोप के पूर्व भाग में एशिया खंड है, वह यूरल्स पर्वत, ककासस पर्वत तथा कॉस्पियन समुद्र यूरोप से अलग होते हैं। दक्षिण भाग में आफ्रिका खंड है।

लेकिन ऊपर कथित भौगोलिक स्वरूप यूरोप तथा एशिया के बीच मजबूत सीमाएँ नहीं है। इसलिए इसे 'यूरेष्य' नामक एक ही नाम से जाना जाता है।

2. प्राकृतिक लक्षण

यूरोप खंड विशिष्ट प्राकृतिक लक्षण से बना है। इस खंड के पश्चिम तथा दक्षिण भाग में हिमावृत शिखर से बने पर्वत, गुहा, कंदर तथा छोटे मैदान हैं। लेकिन इस खंड के पूर्वभाग का अधिकांश भाग स्थिर पीठभूमि से आवृत है। जहाँ वहाँ थोड़ा बदलाव दिखाई देता है।

यूरोप खंड का अत्यंत ऊँची बिंदु ककासस पर्वत सरणि का मौंट एल् ब्रुस शिखर है (5633 मी.)। अत्यंत खाई स्थल कैस्पियन समुद्र है। यह समुद्र स्तर से 28 मी. खाई में है।

एलब्रुस शिखर

निजरूप में एशियन भूराशि में यूरोप एक बड़ा पर्याय द्वीप है। इस खंड में अनेक पर्याय द्वीप है। उदा : स्कांडिनेविया, ऐबेरिया, जटलैंड, बाल्कन पर्याय आदि। इसलिए यूरोप 'पर्याय द्वीपों का पर्याय द्वीप' नाम से जाना गया है।.

यूरोप में 80,500 कि. मी. लंबा भीतरी फैलाव समुद्र तट है। वह एशिया खंड के तट से भी अधिक लंबा है। इस खंड के तट लंबे तक तक द्वीप कल्प है। उनमें से ब्रिटन तथा आयरलैंड बड़े हैं। शेटलैंड, फैरोस, ओर्केनि, सिसिली, सार्डिनिया, कोर्सिक, क्रेट तथा चानेलद्वीप ये अन्य प्रमुख द्वीप है।

प्राकृतिक विभाग

ऊपरी लक्षण के आधार से यूरोप को सामान्यतया 4 विभागों में विभाजित किया गया है।.

1) वायण्य के ऊँचे भाग 2) उत्तर यूरोप के मैदाने

3) केंद्र ऊँचे भाग 4) दक्षिण पर्वत

©KTBS Not to be republished

1. वायण्य के ऊँचे भाग : यह प्राकृतिक विभाग अत्यंत पुरातन पर्वत सरणियुक्त फिनलैंड, स्वीडन, नार्वे से युक्त है, ऐसलैंड तथा ब्रिटन तक भी फैले हैं । ये अवशेष पर्वत हैं। हिम नदी के घटने से कम ऊँचाई पर हैं। वे पुरातन शिलाओं से बने हैं। स्कँडिनेविया में इनकी सामान्य ऊँचाई 2000 मीटर तथा ऐरलैंड और स्कँटलैंड में 600 मी. ही है। गोल्डोपिग्गेन (2469 मी) इस विभाग का अत्यंत ऊँचा शिखर (नार्वे) है। स्काटलैंड का बेनवेनिस (1345 मी) तथा वेल्सन स्नोडोन (1085 मी) आदि शिखर हैं। यह विभाग उत्तर की ओर साधारण उतारु हैं। इसकी ओर अनेक नदियाँ बहती हैं ।

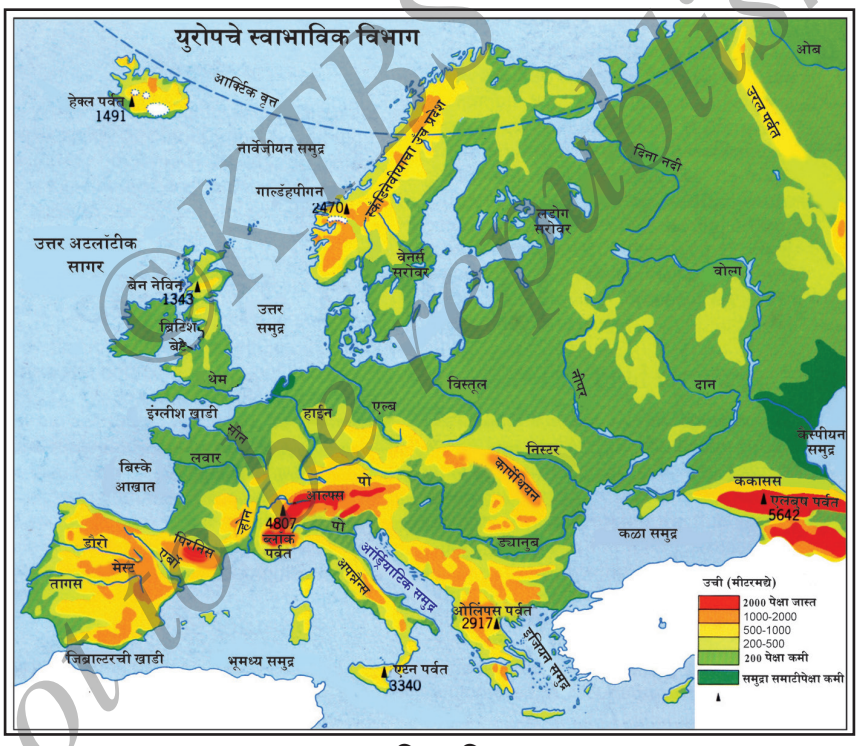

प्राकृतिक विभाग

2. उत्तर यूरोप मैदाने : इसे 'केंद्र खाई भाग' से भी जाना जाता है। यह पूर्व में यूरेल पर्वतों से पश्चिम में अटलांटिक तट तक फैला है। यूरोप का अधिकांश भाग इस भाग में है। इसमें यूरोपियन एशिया, पोलेंड, उत्तर जर्मनी, नेदरलेंड्स (हालेंड), डेन्मार्क, बेल्जियम, उत्तर फ्रान्स तथा इंगलेंड के पूर्व भाग जुड़े हैं।

©KTBS Not to be republished

इस विभाग का सिंधू-गंगा नदी मैदानी प्रदेश की तरह समतल नहीं है। कुछ भागों में ये मैदान साधारण उतारू से बसे हैं। तथा कुछ ओर पर्वत तथा पहाड़ों के कतार से अलग होते हैं। यहाँ संसार में ही प्रसिद्ध उपजाउ कृषि भूमि है।

3. केंद्र के ऊँचे भाग : ये पुरातन शिलाओं से बने हैं। अनेक पुरातन पर्वत, पहाड तथा पीठ भूमियाँ जुड़े हैं। उनकी बराबरी ऊँचाई समुद्र स्तर को 6000 मीटर से अधिक नहीं है।

यह विभाग पश्चिम में ऐरलैंड से पूर्व में रशिया तक फैला है। इसमें स्पेन तथा पोर्चगीस का मेसेट, फ्रान्स का केंद्र मासिक तथा वोस्जेस, जर्मनि का ब्लत्क फारेस्टर तथा जेक और स्लोवेकिया गणतंत्र में रहे कम ऊँचाई से युक्त अनेक सरणियाँ जुड़े हैं।

इस विभाग के कुछ भाग जंगल से आवृत हैं। अधिकांश प्रदेश पत्थर-चट्टानों से भरे हैं। यहाँ की मिट्टी कृषि के लिए उपजाउ नहीं है। लेकिन नदी के कंदर उत्तम कृषि भूमि प्रदान की है।.

4. दक्षिण के पर्वत : इस विभाग को 'अल्पैन पर्वतों का भाग' भी कहा गया है। इसमें कई पर्वत सरणियाँ हैं - सियेर्रमोरेन (स्पेन), फ्रान्स तथा स्पेन के मध्यभाग में सीमा की तरह पिरनीस पर्वत हैं। ये पश्चिम में अट्लांटिक तट से पूर्व में कॅस्पियन समुद्र तक एक दूसरे समानांतर सरणियाँ बनकर फैली हैं। ये हिमालय की तरह मुडे हुए हैं।

ब्लाँक शिखर

इस भाग में आल्प्स पर्वत प्रमुख हैं। यहाँ के ऊँचे शिखर हैं - मौंट ब्लाँक (4807 मी) है। आल्पस पर्वत फ्रान्स के अग्नेय, इटली के उत्तर, स्विड्जरलैंड का अधिकांश भाग, जर्मनी आस्ट्रिया तथा स्लोवेनिया भागों में बँटा है। इटली के अधिकांश भाग में अपनैन पर्वत, क्रोसिया, बोस्निया तथा युगोस्वाविया में डिनारिक आल्प्स, बल्गेरिया के बाल्कन तथा उत्तर स्लोवेनिया में कार्पेथियन पर्वत हैं।

©KTBS Not to be republished

3. वायुगुण प्रदेश तथा स्वाभाविक सस्यवर्ग

यूरोप के वायुगुण प्रदेश के बारे में चर्चा करने से पहले उसके सामान्य वायु-गुण की परिस्थिति जानेंगे। इस खंड का अधिकांश भाग समशीतोष्ण वायुगुण पाया है। इसे 'अच्छा वायुगुण' भी कहा गया है। यह प्रमुख वायुगुण नियंत्रण घटकों की आपसी प्रक्रिया का फल हैं। वे इस तरह के हैं - अक्षांश, उपरी लक्षण, (हवा) वायु (मारुत) तथा स्थान । फिर भी खंडपूर्ण प्रचलित अटलांटिक सागर से बहनेवाली हवाएँ इस खंड के अधिकतया वायुगुण पर अधिक प्रभाव डालते हैं । इसे गल्फ स्ट्रीम उष्णसागर प्रवाह तथा प्रबल पश्चिम हवाएँ प्रमुख कारण हैं ।

सामान्यतया दक्षिण यूरोप का ठंडे अल्पावधि ग्रीष्म से उत्तर में शी-तकाल दीर्घ तथा शीतल रहता है। इसके अलावा पश्चिम यूरोप से पूर्वभाग में शी-तकाल दीर्घ तथा शीत होते हुए, ग्रीष्मकाल अल्पावधि तथा शाखयुक्त रहता है।

वायुगुण प्रदेश

यूरोप को 4 प्रमुख वायुगुण वलय के रूप में विभाजित कर सकते हैं ।

1. वायव्य यूरोप का सागरीय वायुगण प्रदेश : हा प्रदेश नॉर्वेच्या समुद्र किनाऱ्यापासून स्पेनचा उत्तरभाग आणि मध्य यूरोपच्या आतील भागापर्यंत विभागलेला आहे. हितकारक हिवाळा, उष्ण उन्हाळा आणि भरपूर पाऊस, ढगाळ वातावरण असल्यामुळे सूर्याचा प्रकाश दिवसा मंद असतो हिवाळा आणि उन्हाळा या दोन्ही ऋतूमध्ये तापमान साधारणपणे (10^{o} से ते 18^{o} से) इतके असून पावसाचे प्रमाण 75 से.मी. आहे.

©KTBS Not to be republished

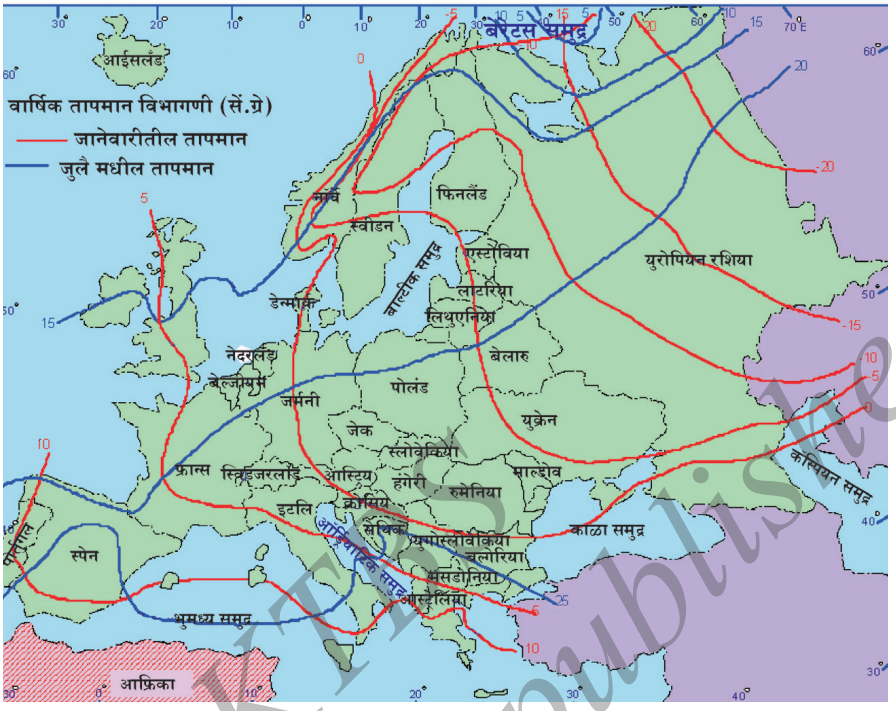

वार्षिक उष्णांश का बंटवारा

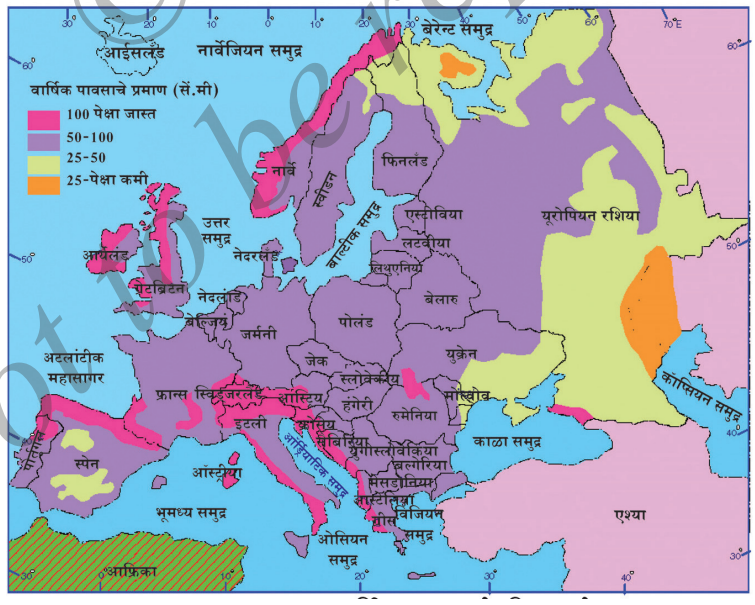

वार्षिक वर्षा का बंटवारा

Not to be republished ©KTBS

2. खंडांतर वायुगुण प्रदेश : यह अधिकांश पोलेंड, स्लोवेकिया, जेक गणराज्य, हंगेरी, रुमेनिया तथा बल्गेरिया में दिखाई देता है। इस वायुगुण के लक्षण हैं - शीतभरित शीतकाल, गरम ग्रीष्मकाल (-12° से तथा 10° से) तथा बराबरी वार्षिक वर्षा 50 से.मी. ग्रीष्म के आरंभ में अत्यधिक परिसरण की तरह वर्षा होती है।

3. मेडिटरेनियन वायुगुण प्रदेश : अधिक उष्णांश, शुष्क तथा धूप से बसा ग्रीष्म तथा थोड़ी सी वर्षा होने का उत्तम शीतकाल इस वायुगुण के प्रमुख गुणलक्षण है। वर्षा के बटवारे में समानता नहीं है। शीतकाल का बराबरी उष्णांश 8° सेल्सियस तथा वह ग्रीष्म में 22° सेल्सियस होता है। बराबरी वार्षिक वर्षा 75 से 100 से.मी है। ऐसे वायुगुण विशेष रूप में मेडिटरेनियन प्रदेश सहित दक्षिण यूरोप में दिखाई देते हैं।

4. पर्वत वायुगुण प्रदेश : ऐसे वायुगुण आल्प्स तथा ककासस पर्वत भागों में दिखाई देता है। यह ऊँचा, सूर्यकिरणों के कोन तथा मारुतों (हवाओं) से नियंत्रित किया जाता है। शीतकाल का उष्णांश - 4° से तथा ग्रीष्मकाल का उष्णांश 16° से बराबरी वर्षा का बंटवारा पर्वतों की हवा के विमुख भाग में 50 से.मी. तथा हवा के अभिमुख भाग में 200 से.मी. अत्यंत उँचे भाग में उष्णांश जमजाने के बिंदु से भी कम रहता है।

स्वाभाविक सस्यवर्ग

यूरोप में अधिक दीर्घकाल से मानव बसा है तथा यह अधिक जनसंख्या (जनसंद्रता) से भरा है। इसलिए स्वाभाविक सस्यवर्गों का संपूर्णतया नाश हुआ है। जनबसदी के प्रतिकूल तथा ऊँचे प्रदेशों में ही दिखाई देते हैं। यूरोप में निम्नलिखित 6 प्रकार के सस्यवर्ग हैं ।

1. तंड्रासस्यवर्ग : शिलावल्क तथा शैवाल से बने हैं। यह आयरलेंड, उत्तर नार्वे, स्वीडन तथा फिनलेंड सहित छोटे प्रदेश में दिखाई देता है। इसी तरह का सस्यवर्ग आल्प्स तथा उत्तर यूरल्स पर्वत के ऊँचे-भूभागों में भी दिखाई देता है।

2. तैगा जंगले : नार्वे, स्वीडन तथा फिनलेंड सहित ध्रुव प्रदेशों में दिखाई देते हैं। ये शंख आकारों के पेड़ों का जंगल भी कहा गया है। यहाँ कुछ ही प्रकार के पेड़ फलते हैं । उदा : स्काट्सपैन, स्प्रूस तथा लार्च । ये तीखे पत्ते पाये है, ये शंख के आकार के हैं।

©KTBS Not to be republished

3. मिश्रजंगल : दक्षिण के केंद्र प्रदेश में दिखाई देते हैं। इनमें पत्ते झडाने तथा शंखधारी पेड़ फलते हैं। प्रमुख पेड़ हैं - ओक्, आश, यल्स, पाप्लर, विल्लो, वीच आदि।

4. मेडिटरेनियन सस्यवग : सामान्यतया मेडिटेरियन समुद्र के तरपट लंबाई में दिखाई देते हैं । यह चौड़े पत्तों का हमेशा हरा रहनेवाला सस्यवर्ग है। क्योंकि शरदऋतु में पेड़ अपने पत्ते नहीं झड़ाता। कार्कओक्, आलिव्, लारेल आदि पेड़ यहाँ उगते हैं ।

5. हरियाली : पत्ते झड़नेवाले जंगल से दक्षिण भाग में दिखाई देती है। उदा - हंगेरी, बल्गेरिया, रुमेनिया तथा यूरोपियन एशिया । विरल पेड़ तथा घांस से भरा स्टेप्पी सस्यवर्ग बना है ।

6. अल्पैन सस्यवग : यूरोप के दक्षिण भाग के ऊँचे पर्वत भागों में बंटा है। उदा - आल्प्स, पिरनिस्, बाल्कन, कार्पेथिन तथा डिनारिक पर्वत ।

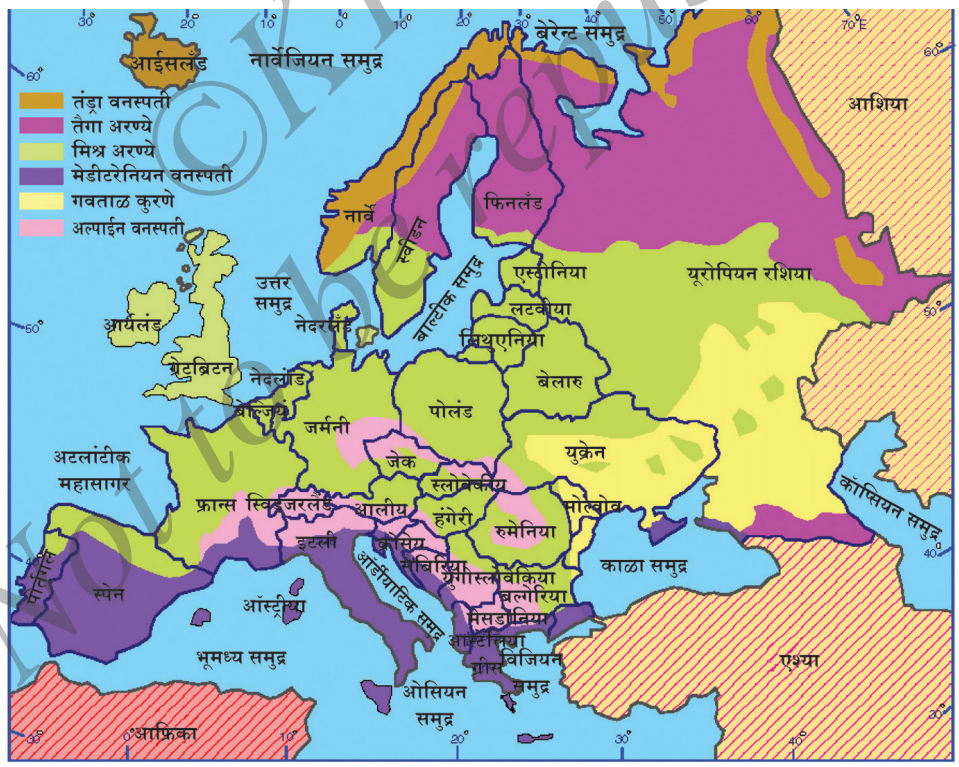

यूरोपियन सस्यवर्ग

©KTBS Not to be republished

4. कृषि, पशुपालन तथा मछलीपालन

कृषि : यूरोप में औद्यगिकरण के उपरांत यह मुख्य वृत्ति बनकर बचा है। यह खंड विशाल समतल, उपजाउ भूमि तथा उत्तम सिंचाई पाने में लाभदायक है। यहाँ का वायुगुण भी कृषि (खेती) के लिए योग्य है।

स्कांडिनेवियन देशों को छोड़कर यूरोप के अधिकांश देश उनके विस्तीर्ण में 50 प्रतिशत से भी अधिक भाग खेती से जुड़े हैं। यूरोप का लगभग भू स्वाम्य का गात्र 10 हेक्टर है।

पश्चिमी यूरोप के देशों में मिश्रकृषि पद्धति जारी है। यह फसलों का व्यवसाय तथा जानवरों का पालन दोनों हैं। यहाँ कृषि भूमि जानवरों के चारा उगाने, कुक्कुटपालन, सुअध्यालन, तथा विविध फल तथा सब्जी उपजाने उपयोग किया जाता है।

मेडिटरियन वायुगुण युक्त दक्षिण यूरोप का व्यवसाय ही अलग है। वह एकदल धान्यफसल, फल सब्जी व्यवसाय तथा जानवर पालन के संयोजन से बना है ।

विशाल बाजार से अवलंबित विशेष नमूने की खेती का विकास हुआ है। अधिक जनसांद्रता से युक्त नगर प्रदेशों के समीप के भागों में वाणिज्य तथा उत्तम संघटित व्यवसाय दिखाई देता है। कुल मिलाकर यूरोप की जनता में 10 प्रतिशत से भी कम भाग व्यवसाय क्षेत्र से जुड़े हैं ।

मक्कई यूरोप का दूसरा प्रमुख एकदल धान्य फसल है। फ्रान्स, इटली, हंगेरी, जर्मन तथा स्पेन प्रमुख मक्कई उत्पादन के देश हैं। रै और एक आहार की फसल है। यह अधिकतया ब्रेड तथा मद्य तैयार करने में उपयोग किया जाता है। पोलैंड, जर्मन, जेक तथा स्लोवेकिया गणतंत्र प्रमुख रै उत्पादन के देश हैं। बार्लि उत्पादन में भी यूरोप प्रमुख है ।आहार धान्य, पशुओं का आहार तथा मद्य तैयार करने में इसका उपयोग किया जाता है। कुछ प्रदेशों में ओट्स उपजाया जाता है। धान अल्प प्रमाण में उपजाया जाता है। यह ग्रीष्म कालीन फसल है। चीनी कंद तथा आलू यूरोप के दो प्रमुख कंद फसलें हैं ।

चीनी कंद चीनी तैयार करने तथा पशु आहार के रूप में उपयोग किया जाता है।

आलू अधिकतया केंद्र तथा पूर्व यूरोप मैदानों में उपजाया जाता है। यूरोप संसार में ही अत्याधिक आलू उत्पादन करता है। अल्सी (flax) यूरोप का प्रमुख तंतु फसल है ।

© KTBS Not to be republished

यूरोप के पहाड़ों के उतारों पर अंगूर, सेप, अंजूर, नारंगी, नींबू, द्वीपद्राक्षी (प्लम्), अनार, चेस्टनट, कई फलों के फसलें दिखाई देते हैं। बल्गेरिया गुलाब के फूल, तरकारी तथा बगीचे की फसलों के लिए प्रसिद्ध है।

करण्यासाठी करतात. पोलंड, जर्मनी, झेक गणराज्य आणि स्लोव्हेकिया गणराज्य प्रमुख राय उत्पादन करणारे देश आहेत. बार्लीचे उत्पादनातही यूरोप प्रमुख आहे. बार्लीचा उपयोग आहार धान्य म्हणून, जनावराना आहार म्हणून आणि मद्य तयार करण्यासाठी करतात. काही ठिकाणी ओट पिकवितात. भात हे उन्हाळी पीक असून ते अत्यंत कमी प्रमाणात पिकविले जाते.

बीट आणि **बटाटे** ही दोन्ही यूरोपमधील प्रमुख पिके आहेत. बीट पासून साखर तयार करतात तसेच जनावराना आहार म्हणून उपयोग करतात.

बटाट्याचे पीक मध्य आणि पूर्व यूरोप मधील मैदानी प्रदेशात जास्त प्रमाणात पिकविले जाते. विश्वामध्ये सर्वात जास्त बटाट्याचे उत्पादन यूरोप मध्ये होते. **जवस** (Flax) हे यूरोपमधील प्रमुख तंतूमय पीक आहे.

यूरोपातील बेटावरील उतार जमीनीवर द्राक्षे, सफरचंद, अंजीर, लिंबू, मणूके **(plum)** डाळींब, चेस्टनट इ. फळांची शेती आढळते. बल्गेरीया हा देश गुलाब फूले, भाजीपाला, आणि बागायती पिकांसाठी प्रसिद्ध आहे.

पशुपालन : यह यूरोप का मिश्र (बेसाय) कृषि पद्धति में अत्युत्तम व्यवस्थित उद्यम है। थंडा बर्फिला वायुगुण, अधिक जनभरित (जनसाद्रता) नगर हैं। सुव्यवस्थित रास्ते तथा रेले

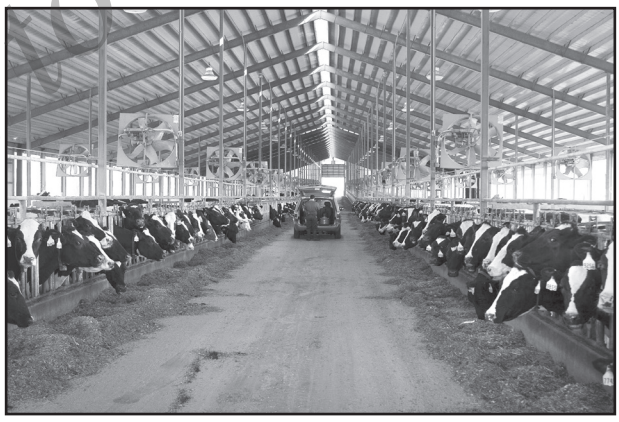

युरोपमधील दूग्धव्यवसायाचे चित्र

© KTBS Not to be republished

परिवहन सुविधा, अत्युत्तम जैविक तंत्रज्ञान का विकास, शैत्यिकरण, वाणिज्यक नवीनतम पशुपालन में यांत्रिकरण तथा विफुल चारा पहुँचाने के लिए यूरोप के पशुपालन विकास के लिए उत्तेजक हैं।

डेन्मार्क, नेदरलैंड्स, स्विडजरलैंड, जर्मनी तथा ब्रिटन में पशुपालन का अधिक विकास हुआ है। लेकिन डेन्मार्क अत्यंत प्रमुख है। यूरोप के देश अपने पशुपालन के वस्तुओं का निर्यात करते हैं। उदा : मक्खन, मधुरभक्ष, संस्करित दूध, चाकोलेट आदि ।

मछलीपालन : इतिहास के दीर्घतक यूरोप मछलीपालन अपने आहार की आर्थिकता का आधार बनाया है । कम गहराई का समुद्र भागों में मछलीपालन चलता है। प्रमुख मछलीपालन वायव्य यूरोप में हैं वे आर्किटिक वृत्त के उत्तर भाग से मेडिटरेनियन समुद्र तक फैले हैं । उत्तर समुद्र अत्यंत तीव्रता का मछलीपालन प्रदेश बना है। उसमें नार्वे, ब्रिटन, डेन्मार्क, स्वीडन तथा जर्मन जुड़े हैं। डागर बैंक तथा ग्रेट फिशरबैंक प्रदेश उत्तर समुद्र के दोनों प्रसिद्ध मछलीपालन के केंद्र बने हैं। नार्वे के लोग मछलीपालन में परिणत हैं।

यूरोप के मछलीपालन का क्षेत्र

©KTBS Not to be republished

सील तथा तिमिंगिल ध्रुव प्रदेशों में पकड़े जाते हैं। नार्वे अत्यधिक मछली उत्पादन तथा निर्यात करने के देश हैं । कृषि भूमि तथा आहार धान्य कमी के कारण यूरोप में मछलीपालन प्रगतिशील हुआ।

5. खनिज तथा प्रमुख औद्योगीकारण

खनिज : यूरोपखंड में अनेक तरह के खनिज तथा शक्ति संपन्मूल प्राप्त होते हैं ।

इस खंड में अधिकतया मॅगनेट लोह का उत्पादन होता है। यूरोप के अधिकांश देशों में मॅगनेट लोह का बंटवारा हुआ है। संसार का 5 प्रतिशत मॅगनेट लोह का निक्षेप इस खंड में प्राप्त है। फ्रान्स, जर्मनी, ब्रिटन तथा स्वीडन प्रमुख उत्पादन के देश हैं।

बल्गेरिया तथा पोलेंड प्रमुख तांब्र उत्पादन के देश हैं। यूरोप में पेट्रोलियम तथा नैसर्गिक अनिल संपत्ति अधिक कम प्रमुख पेट्रोलियम उत्पादन के विभाग हैं - उत्तर समुद्र, फ्रान्स, इटली, नेदरलैंड तथा जर्मनी ।

खनिज

© KTBS Not to be republished

कोयला यूरोप का प्रमुख बिजली का संपन्मूल है। स्कांडिनेविया तथा मेडिटरेनियन देशों के अलावा इस खंडभर में कोयला निक्षेप का बंटवारा हुआ है। उच्चश्रेणी का बिटुमिनस कोयला यूरोपियन एशिया, जर्मन तथा ब्रिटन में बँटा है। कुछ ओर बाक्सैट तथा पोट्यास भी उपलब्ध है।

प्रमुख (औद्योगिक) उद्यम

लोहा तथा इस्पात उद्यम : आधुनिक युग लोहा तथा इस्पात का युग है। यह बड़े पैमाने का उद्यम होते हुए, उपउद्यमों को आवश्यक लोहा तथा इस्पात का उत्पादन करता है। लोहा तथा इस्पात उत्पादन के प्रमुख देश हैं - 1) जर्मन, हूर, सार, वेसर नदी मैदानी प्रदेश तथा बर्लिन प्रदेश । 2) ब्रिटन, ब्लाक कंट्री, शेफील्ट, ईशान्य तटवर्ती तथा वेल्स प्रदेश । 3) फ्रान्स, लूरेन्स, वायव्य तथा पूर्वसीमा प्रदेश, पोलेंड के सैलीसया इटली का पो नदी कंदर तथा लंबार्डि मैदान ।

सूत कपड़ा उद्यम : यूरोपो में भी अनेक कृषि-आधारित उद्यमों का विकास हुआ है। उनमें सूत कपड़ा उद्यम भी एक है। यूरोप भर कपास गिरणियाँ हैं। कच्चा कपास विदेश से निर्यात किया जाता है। ब्रिटन आधुनिक सूत कपड़ा उद्यम का उगमस्थल है। यहाँ का लंकाशैर, चेशैर तथा उर्बिशैर प्रमुख सूत गिरणी केंद्र हैं। जर्मन तथा फ्रान्स अन्य प्रमुख सूत कपड़ा वस्तुएँ उत्पादन देश हैं ।

उत्तम श्रेणी का रेशम, ऊन कपड़ा तथा कृतक नार कपडों को ब्रिटन, फ्रान्स, बेल्जियम तथा इटली प्रसिद्ध थे।

जहाज बांध उद्यम : यह एक बड़े पैमाने पर इंजिनियरिंग तथा विशेष जोड़ उद्यम है। तंत्रज्ञान की प्रगति, उत्तम बंदरगाहों की सुविधा, उद्यम प्रगति आदि इस उद्यम के विकास के लिए प्रोत्साहक हैं। यूरोप में जर्मन का प्रमुख जहाज बाँध का देश स्वीडन्, ब्रिटन तथा फ्रान्स यूरोप के अन्य जहाज बाँधने के देश हैं।

स्वयंचालित वाहन उद्यमे : यह कार, ट्रक, बस, स्कूटर आदि तथा मोटार इंजन की सहायता से चलन के किसी भी अन्य वाहन तैयार करने का उद्यम है। यही एक जोड़ने का उद्यम है। अत्युत्तम तांत्रिक तथा खर्चिला उद्यम है। जर्मन, फ्रान्स, इटली तथा ब्रिटन यूरोप के प्रमुख स्वयंचालित वाहन उद्यम देश हैं।

©KIBS Not to be republished

6. यूरोप के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश

यूरोप का प्रमुख उद्यम तथा औद्योगिक केंद्र एक तरह त्रिकोन रूप में केंद्रीकृत हुए है। यह यूरोप का औद्योगिक का हृदय कहते हैं। यह त्रिकोन उत्तर समुद्र से पोलेंड के मध्यभाग का तथा दक्षिण के इटली की 'पो' नदी कंदर से उत्तर के स्वीडन तक फैला है । यूरोप के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र इस प्रकार हे.

या खालील प्रमाणे युरोपमधील उद्योगधंद्याचे प्रमुख विभाग आहेत.

1. ब्रिटन औद्योगिक क्षेत्र
2. पश्चिम त्रिकोन औद्योगिक क्षेत्र ।
3. पेरिस औद्योगिक क्षेत्र, इसे फ्रान्स का 'औद्योगिक हृदय' कहते हैं।
4. लोरैन, सार औद्योगिक क्षेत्र ।
5. हैन नदी का ऊपरी कंदर का क्षेत्र ।
6. सैलेसिया का ऊपरी कंदर का क्षेत्र ।
7. दक्षिण के स्कँडिनेविया क्षेत्र स्टाक्होम मिला है ।
8. पूर्व जर्मन से ईशान्य जेक स्लोवेकिया क्षेत्र ।
9. उत्तरी इटली के औद्योगिक क्षेत्र में पो नदी का मैदानी प्रदेश ।

7. जनसंख्या

यूरोप के भौगोलिक क्षेत्र की तुलना करने पर उसकी जनसंख्या अधिक ही है। यूरोपियन रशिया के अलावा संसार का 11 प्रतिशत भाग पाया है। लेकिन संसार के पाँचवे एक भाग की जनसंख्या पाया है। उसकी कुल जनसंख्या 738. 2 मिलियन (2010) है। इसमें नगर की जनसंख्या अधिकांश है ।

बँटवारा : यूरोप में जनसंख्या का बंटवारा समानता से नहीं हुआ है। जर्मन, ब्रिटन, इटली तथा फ्रान्स यूरोप के जनभरित देश हैं। वायव्य यूरोप में जनसांद्रता कम है। आल्प्स, ककासस, अर्धशुष्क प्रदेश आग्नेय यूरोप के भाग में भी जनसांद्रता विरल है ।

©KTBS Not to be republished

यूरोप के अधिक जनसांद्रता के देश है - बेल्जियम्, लक्षम्बर्ग, नेदरलैंड्स आदि। इसे औद्योगिकरण, परिवहन सुविधा, नैसर्गिक संपन्मूल तथा तंत्रज्ञान की प्रगति ही कारणीभूत है।

विकास : यूरोप के अधिकांश देश कम तथा उतारु जनसंख्या विकास के लक्षणों से पूरित है। जनसंख्या का विकास एक स्थान से अन्य स्थान में बदलता है।

स्थानांतरण : बीते हुए 200 वर्षों में यूरोपियन अन्य देशों को स्थानांतरित हुए हैं। तथा अनेक कारणों से अन्य देशों के लोग यूरोप की ओर स्थानांतरित होकर नहीं बसे हैं ।

द्वितीय जागतीक (युद्ध के बाद) लोग विविध खंड तथा देशों से ब्रिटन की ओर आंतरिक स्थानांतरित हुए हैं। उनमें अधिकतया इटली के हैं ।

जनसांद्रता

©KTBS Not to be republished

द्वितीय जागतीक युद्ध के पहले ही जर्मन के लोग अन्य देशों में स्थानांतरित हुए हैं। पोलेंड, रूमेनिया, हंगेरी, जेक, स्लोवेकिया तथा युगोस्लोविया में जर्मन अल्पसंख्यक के रूप में दिखाई देते हैं।

जनसांद्रता : यूरोप में जनसांद्रता वैविद्यमय है। अत्यधिक विकसित हुए नेदरलैंड में प्रति चदर कि.मी 950 लोग बसे हो तो ऐसलैंड में वही प्रति चदर कि.मी पर केवल 3 लोग बसे हैं। उत्तर यूरोप का खाई प्रदेश अत्याधिक जनसांद्रता पाया है ।

यूरोप के अत्यधिक जनसांद्रता के प्रदेश है - ग्रेटर लंडन, नेदरलेंड्स, हैन नदी मैदानी प्रदेश, उत्तर इटली तथा स्पेन के तटवर्ती प्रदेश ।

विरल जनसांद्रता के प्रदेश हैं - मध्य फ्रान्स, पर्वतमय प्रदेश, बाल्खन क्षेत्र तथा स्काटलैंड के उन्नत भाग ।

नये शब्द

आल्पैन, आल्प्स, स्वयंचालित, जूट, धुंध, मुदडे पर्वत, सागरीय वायुगुण, मासिक, मेसेट, स्थानांतरण, पर्यायद्वीप, तैगा, कपड़ा उद्यम।

जानो.

1. स्कांडिनेविया : उत्तर यूरोप का भाग होते हुए नार्वे, स्वीडन तथा फिनलैंड से आवृत है ।
2. ब्रिटन : या ग्रेट ब्रिटन, यूरोप का अत्यंत बड़ा द्वीप होते हुए इंग्लैंटुड, स्काटलैंड तथा नेल्स से आवृत्त है। उत्तर आयरलैंड (ऐरलैंड) भी मिलाकर यह संयुक्त राज्य (यु.के) बना है ।
3. लगभग 500 वर्ष से भी अधिक समय यूरोप को संसार के हृदय भाग के नाम से जाना जाता था।
4. ब्लाक फारस्ट नामक जंगल नहीं। वह एक पर्वत प्रदेश है। यह दक्षिण जर्मन में है। इसका आंतरिक भाग घने जंगल से अंधकार से बसे से यह नाम आया है ।

©KTBS Not to be republished

उत्तर दो.

1. यूरोप के भौगोलिक स्थान बताओ ।
2. 'यूरोप को एशिया का पर्याय द्वीप' कहते हैं । क्यों ?
3. यूरोप के प्राकृतिक विभाग बताओ ।
4. यूरोप के प्रमुख पर्वत तथा शिखर बताओ ।
5. यूरोप के प्रमुख वायुगुण प्रदेश कौन-कौन से हैं ?
6. यूरोप के प्रमुख स्वाभाविक सस्यवर्ग के प्रकार बताओ ।
7. यूरोप के प्रसिद्ध (प्रमुख) देशों के नाम बताओ ।
8. यूरोप के प्रमुख आहार फसलें कौन-कौन से हैं ?
9. यूरोप के प्रमुख मछलीपालन क्षेत्र बताओ ।
10. यूरोप के प्रमुख खनिज कौन-कौन से हैं ?

क्रियाकलाप

1. नक्शे में यूरोप के मुख्य प्राकृतिक विभाग पहचानो ।
2. अपने अध्यापक की सहायता से यूरोप के प्रमुख पर्वत तथा शिखर पहचानो ।
3. अपने निवासस्थान के आसपास देखो तथा वहाँ के भूस्वरूप, सस्यवर्ग तथा फसलों की यादि तैयार करो ।
4. यूरोप के नक्शे में राष्ट्रों के राजधानी पहचानो, पर्यटन केंद्र तथा औद्योगिक प्रदेशों को पहचानो ।

* * * * *

©KTBS Not to be republished

पाठ 10	अफ्रिका - केंद्रिय भूखंड

पाठा का परिचय

इस पाठ में आप अफ्रिका के भौगोलिक स्थान, विस्तार तथा भौगोलिक स्थिति, प्राकृतिक लक्षण, नदी व्यवस्था, वायुगुण तथा स्वाभिक सस्यवर्ग, प्राणिसंपदा, कृषि, उद्योग, कीमती खनिज, जनसंख्या-अभिवृद्धि, वितरण तथा जनसांद्रता के बारे में जानेंगे ।

सामर्थ्य :

1. अफ्रिका खंड के स्थान, विस्तार, भौगोलिक स्थिति तथा प्राकृतिक लक्षणों को जानना।
2. अफ्रिका की नदी व्यवस्था, वायुगुण तथा उसके प्रदेश, स्वाभिक सस्यवर्ग तथा प्राणिसंपदा के बारे में जानना ।
3. कृषि, उद्योग तथा कीमती खदानों के बारे में जानना ।
4. अफ्रिका की जनसंख्या, अभिवृद्धि, वितरण तथा जनसांद्रता के बारे में जानना ।

भूमिका : अफ्रिका खंड एशिया के पश्चात विश्व का द्वितीय अति बड़ा खंड है । यह जनसंख्या में दूसरे स्थान पर है । हाल के वर्षों तक अफ्रिका खंड को अंधकार का खंड कहा जाता था । इसका कारण यहाँ के लोगों का काला नहीं है । बल्कि उसकी प्रस्थभूमि समुद्री किनारे तक विस्तृत होना तथा उत्तर में सहारा मरुभूमि का होना है । वह अन्य जगत से काफी दीर्घ काल तक शोध न होने से बचा था । अफ्रिका में 52 देश हैं ।

1. स्थान, विस्तीर्ण तथा भौगोलिक स्थिति

स्थान : अफ्रिका खंड 37° उत्तर तथा 35° दक्षिण अक्षांश तथा 17° पश्चिम तथा 50° पूर्व रेखांश के बीच बसा है । अफ्रिका के पश्चिम भाग में प्रधान रेखांश उत्तर-दक्षिण होकर जाता है । विशेषता यह है कि इस खंड में कर्क वृत्त तथा मकर वृत्त दोनों ही होकर गई हैं । भूमध्य रेखा लगभग इस खंड के मध्य भाग से होकर जाती है । इसलिए इसे 'केन्द्रीय खंड' कहा जाता है ।

विस्तीर्ण : अफ्रिका का कुल विस्तीर्ण 30.4 मिलियन चौ.कि.मी. है । यह दक्षिणोत्तर के रूप में 8000 कि.मी. लम्बा तथा पूर्व-पश्चिम के रूप में 7400 कि.मी. चौड़ा है । आल्-फिरम्) (टुनिसिया) अफ्रिका का उत्तरी छोर है, तो अगुल्हास (दक्षिण अफ्रिका) भूशिर दक्षिण छोर है ।

©KTBS Not to be republished

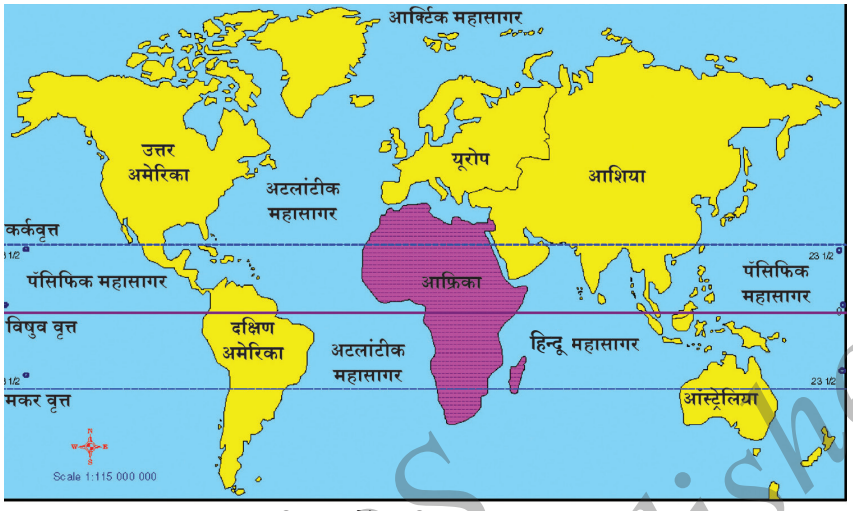

विश्व में अफ्रिका का स्थान

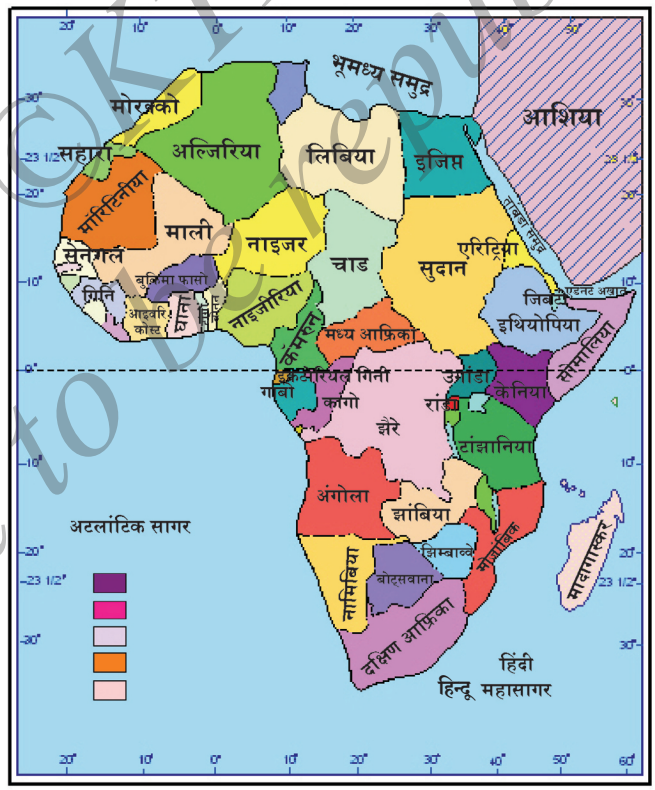

अफ्रिका खंड का स्थान तथा भौगोलिक स्थिति

©KTBS Not to be republished

भौगोलिक स्थिति : अफ्रिका का अधिकांश भू भाग एक-न-एक समुद्र अथवा महासागर से घिरा हुआ है । उत्तर में मेडिटेरियन समुद्र, पश्चिम में अटलांटिक सागर, पूर्व में लाल समुद्र तथा हिन्द सागर घिरा हुआ है । पहले इस खंड का इशान्स भाग सिना पर्याय द्वीप से एशिया के साथ जुड़ा हुआ था, अब वह सूयेज नगर से अलग हो गया है । जिब्राल्टर जलसंधि से यूरोप खंड तथा लाल समुद्र से अरेबिया पर्याय द्वीप अफ्रिका से अलग होकर, अफ्रिका खंड से समुद्री किनारा 30,500 कि.मी. लम्बा है ।

2. प्राकृतिक लक्षण

अफ्रिका खंड का प्राकृतिक लक्षण उसकी आंतरिक रचना का प्रतिबिंब है । सम्पूर्ण खंड को ही विशाल प्रस्थ भूमि के रूप में माना गया है । वह प्राचीन स्कटिक शिलाओं से रचित हुआ है । वह लघु समुद्री-किनारे से अंत में प्रस्थभूमि के रूप में खड़ा है । इस कारण इस खंड के आंतरिक प्रदेश में प्रवेश करना कठिन है । प्रस्थभूमि आग्नेय भाग में ऊँची तथा इशान्य भाग में ढ़लाऊ बनी हुई है ।

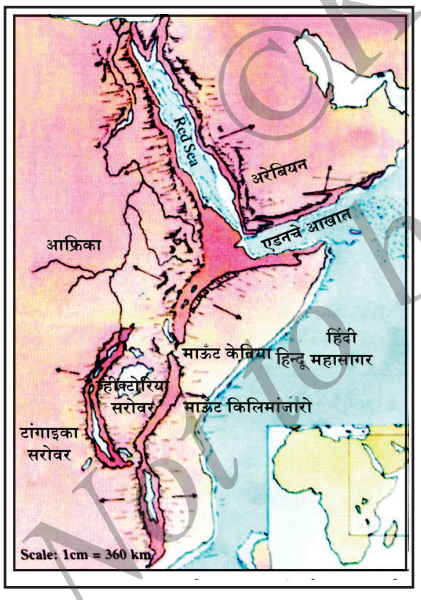

महाफटी नहर

अफ्रिका खंड को उसके विस्तीर्ण से तुलना करने पर वह अन्य खंडों से कम ऊँचे पर्वत तथा गड्ढे वाले मैदानों के प्राप्त हुआ है ।

अफ्रिका का समुद्री किनारा लगभग सीधा है । वह कुछ ही बड़े गड्ढे मुक्त मैदान, स्वाभाविक बंदरगाहों मुक्त हैं । वहाँ कोई खाडि (इरू) तथा आंतरिक फैलाव नहीं है। अलावा इसके समुद्री किनारे का भीतरी भाग गहराई से कटा हुआ है ।

महाफटी नहर : दो सामान्य स्तरभंग अथवा दो गड्ढों वाला भूभाग धंस जाने से निर्माण होने वाली सपाट तल वाली नहर को 'फटी नहर' कहते हैं । अफ्रिका की महाफटी नहर काफी लम्बी (6900 कि.मी. है । इस कारण इसे महाफटी नहर कहते हैं ।.

© KTBS not to be republished

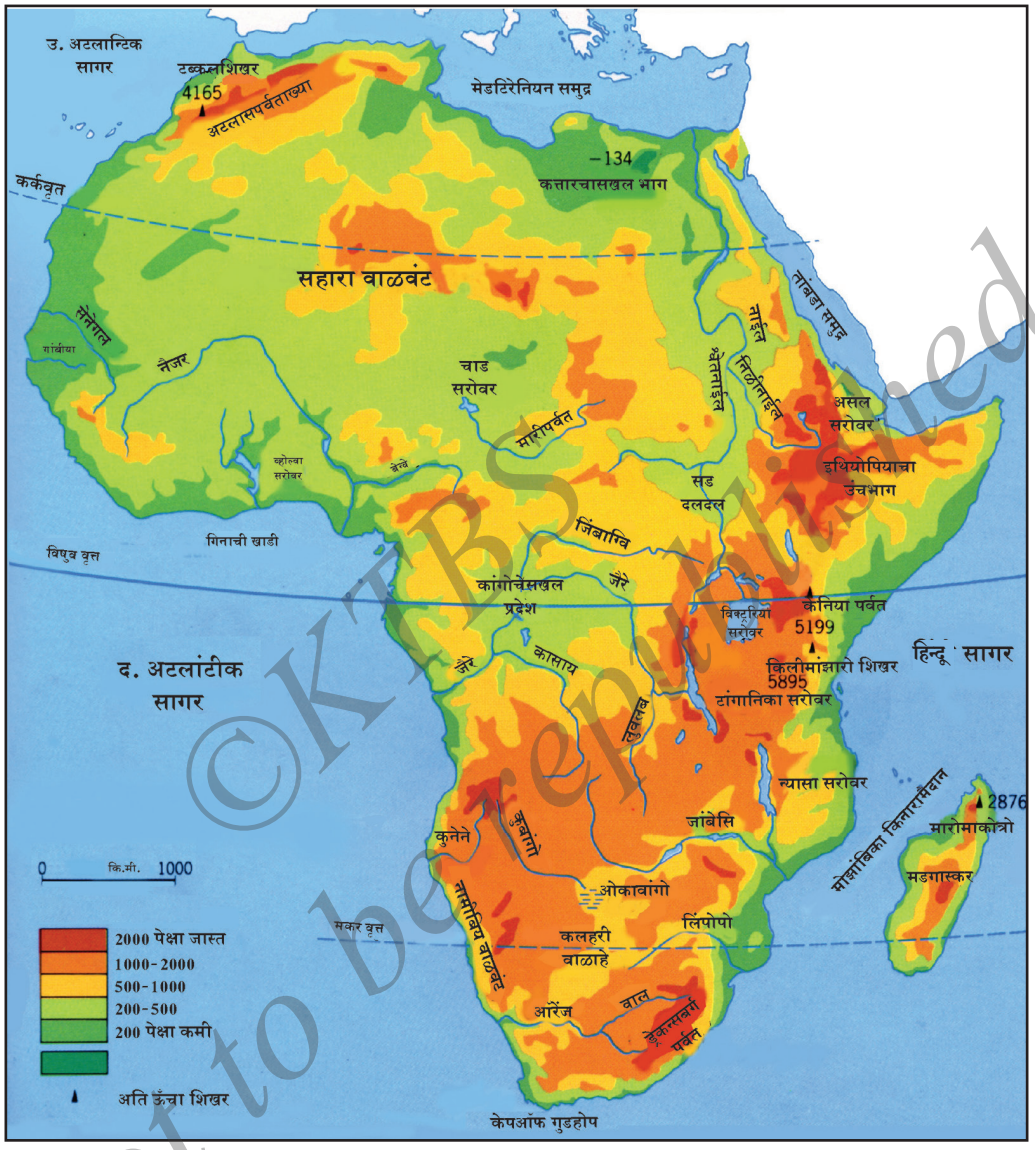

प्रकृतिक लक्षण

अंग्रेजी के अक्षर Y आकार में अति बड़ी फटी नहर अफ्रिका खंड को स्पष्टत: प्रकृतिक लक्षण है । यह दक्षिण के मोजांबिक से प्रारंभ होकर मालवी, टांजानिया, कीन्या तथा इथियोपिया से द्वारा होते हुए लाल समुद्र तक फैली है । वहाँ से आक्युबा खाड़ी, मृत समुद्र तथा गालिली समुद्र से होते हुए जोर्डान के सिरिया खाई में समाप्त होती है ।

©KTBS Not to be republished

अफ्रिका के गड्ढेवाले प्रदेश : अफ्रिका में पाँच गड्ढेवाले (निचले) प्रदेश हैं । उनका विवरण लिखितानुसार है ।

1. सुड़ान गड्ढेवाला प्रदेश सफेद तथा नीली नैल नदियाँ बहने वाला प्रदेश । विश्व में ही अति विस्तार वाली इस भूमि को 'सड्' (डींवव) कहते हैं ।

2. चाड् गड्ढेवाला प्रदेश चाड् सरोवर से आवृत्त है । यह भी सड् की तरह है, इसे सहारा मरुभूमि से आवृत्त है ।

3. जोफ (ऊर्क्षीष) गड्ढेवाला प्रदेश सहारा मरुभूमि के पश्चिम भाग से मुक्त है तथा मारिटानिस माली सीमा के सुदूर विस्तृत है । यहाँ से नैजर नदी बहती है ।

4. कांगो (जैरे) गड्ढेवाला प्रदेश एक रचनात्मक भूस्वरूप होने के साथ वह प्रस्थभूमि से घिरा हुआ है । यहाँ से कांगो तथा उसकी उपनदियाँ बहती हैं । यह एक वन प्रदेश है ।

5. कलहरी गड्ढेवाला प्रदेश अधिकतर मरुभूमि तथा स्टेप्पी घास वाला भाग है । यह प्रस्थभूमि से घिरा हुआ है ।

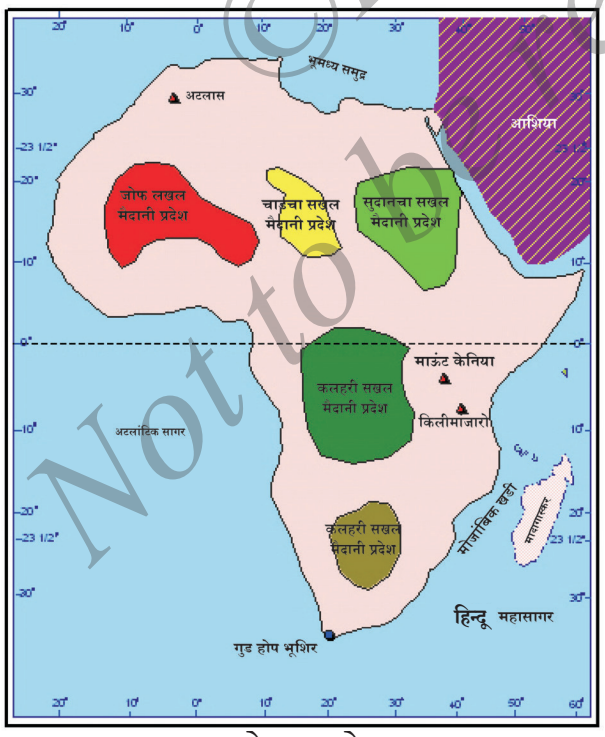

गड्ढे का प्रदेश

सरोवर : अफ्रिका खंड ने आर्थिक सामार्थ्य को बढ़ाने वाले अनेक सरोवरों को प्राप्त किया है । उनमें आठ मुख्य हैं । पूर्व आफ्रिका में अति बड़े तथा हगरे सरोवर हैं । वे सभी साधारण फटी कंदराह से सम्बन्ध रखते हैं । फटी कंदराह से पश्चिम में अल्बर्ट, एड्वर्ड, किकु, टागानिक तथा न्यास सरोवर है । अलावा इसके फटी कंदरा के दोनों श्रेणीयों के मध्य स्थित विक्टोरिया सरोवर अफ्रिका का अति बड़ा सरोवर है । वह करीब 69,481 चौ. कि.मी. बिस्तृत है । यहाँ से नैल नदी का उगम होता है ।

©KTBS Not to be republished

पर्वत : अफ्रिका खंड में अधिक पर्वत नहीं हैं । अफ्रिका के समतल मैदान को तोड़ने में यहाँ कुछ छोटी-छोटी पहाडियाँ हैं । उनमें अट्लास, ड्रेकन्सबर्ग पर्वत थथा किलि-मांजरो पर्वत प्रमुख हैं ।

अटलास श्रेणी : ये हमारे भआरत के हिमालय पर्वत की तरह ही टेढ़े-मेढ़े पर्वत हैं । ये दक्षिण यूरोप के पर्वतों के आगे के पर्वत हैं । मौंट टाब्काल् ऊँची चोटी है । अट्लास श्रेणियाँ अल्जीरिया, मोराको तथा टुनिसिया में फैले हैं ।

ड्रेकन्स् बर्ग पर्वत : अफ्रिका के आग्नेस समुद्री किनारे में फैले हैं । ये नाममात्र के पर्वत हैं । पृष्टभूमि के सीधे छोर हैं ।

किलिमांजरो पर्वत : ये वर्वत श्रेणियों अफ्रिका के पूर्वभाग में है । इसमे अफ्रिका की अत्यन्त उन्नत शिखर है । उसकी ऊँचाई 5,895 मीटर है । यह समभाजक वृत्त के नजदीक होते हुए भी इसका शिखर सदा हिम अच्छादित रहता है । इसका कारण है, उसकी ऊँचाई।

किलिमांजरो पर्वत

उपर्युक्त के अलावा आहागार, टिलेस्टी, रुवेंजोरी, केप श्रेणी तथा पूर्व अफ्रिका श्रेणियाँ आदि अफ्रिका के अन्य पर्वत हैं ।

अफ्रिका के अत्यंत ऊँचा शिखर किलिमंजरो तथा अत्यंत निचला प्रदेश असल् (जिबोटी) सरोवर है ।

सूयेज भूकंठ : दो विशाल भूभागों को जोड़ने और दो जलराशियों को अलग करने वाला लघु भूभाग की 'भूकंठ' है । सूयेज भूकंठ सुविख्यात है ।

सुयेज भूकंठ मेडिटेरियन समुद्र तथा लाल समुद्र के बीचवाला लघु भूभाग है । वह अफ्रिका तथा एशिया खंडों को जोड़ने वाला है । प्रस्तुत अफ्रिका खंड के देशों में एक ईजिप्त देश में यू भूकंठ भाग मिला हुआ है । तथा अफ्रिका के ईशान्स भाग में है । उसे सूयेज नहर निर्माण करने के लिए खोदा गया है । यह नहर असाधारण

©KTBS Not to be republished

मानव निर्मित था वह मेडिटेरियन समुद्र व लाल समुद्र का सम्पर्क करती है । यह विश्व में अधिक जहाज संचार का प्रमुख सागर मार्ग है और यूरोप तथा एशिया को कम अन्तर से सम्पर्क करता है ।

सुएज भूकंठ

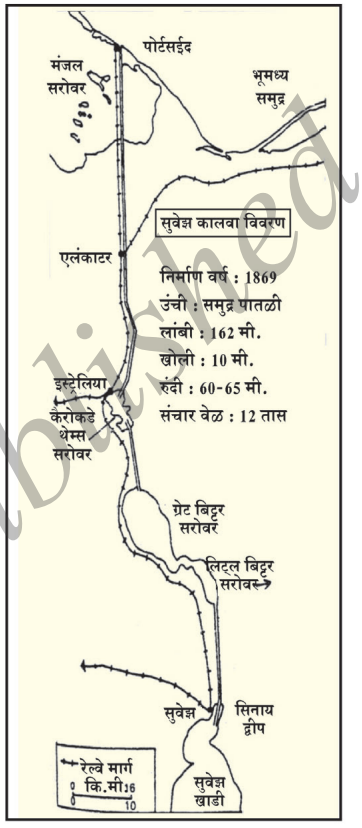

सुएज नहर

3. जल संसाधन

अफ्रिका की नदीयाँ :

अफ्रिका की नदियाँ अपनी ही कुछ विशेषताएँयुक्त हैं । अधिंाश नदियाँ ने अपनी सहत पर गहरी कंदराहों का निर्माण किया है । जलपात, त्वरित-प्रवाह (Rapids) किये हैं । ऋतुमान की वर्षा के वितरण से अल्पकालीन बहती है । नौकामान हेतु योग्य नहीं हैं । सर्वकालिक नदियाँ कम हैं । यहाँ भीतरी प्रदेश की नदियाँ ही अधिक हैं।

©KTBS Not to be republished

अफ्रिका खंड ने चार प्रमुख नियाँ को प्राप्त किया है । वे हैं - नैल, कांगो (जैरे), नैजर तथा जाम्बेजी । अफ्रिका की अन्य नदियाँ है - सेनेगल, आरेंज तथा लिंपोपो ।

नैल नदी : नैल नदी संसार की अत्यन्त लबीं नही है । यह 6,650 की.मी लम्बी बहती है । विक्टोरिया सरोवर में नैल नदी के रूप में उगम होकर सहरा मरुभूमि की ओर उत्तराभिमुख होते बहकर मेडिटरेनियम समुद्र में संगम होती है। नैल नदी का मैदानी प्रदेश अत्यंत उपजाऊ है। हजारों लोगों के जीवन के लिए सहायक बनकर, लोग उसका पानी सिंचाई के लिए उपयोग कर जीवन बिता रहे हैं। अल्-गजल नामक बायेंतट की उपनदी तथा सूबत्, नीलीनैल तथा अट्टार नामक दायेंतट की उपनदियाँ हैं ।

नीली नैल नदी थाना सरोवर में (इथोपिया) उगम होती है तथा कार्टूम में सफ़ेद नदी से (जुड़ती) मिलती है। नैल नदी संसार में प्रसिद्ध मुखज भूमिका निर्माण किया है। इस नदी को निर्माण किये हुए बाँधों में आस्वान बांध बड़ा है ।

कांगो नदी : कांगो या जैरे नदी आफ्रिका की दूसरी लंबी नदी है। आफ्रिका के लोग इस नदी को अनेक नामों से जानते हैं। इसके उगम स्थान में इस नदी को लुआपुला नाम से तथा बचे सभी स्थानों में लुआलाब कहा जाता है।

कांगो नदी समभाजक वृत्त के समीप उगम होकर पहले उत्तर में, बाद में नैरुत्य में 4640 कि.मी. दूर बहते अटलांटिक सागर से जुड़ती है। यह आफ्रिका के मध्यभाग के समभाजक वृत्त के अरण्यों के बीच बहती है प्रसिद्ध लिविंग्सटन जलपात का निर्माण करता है । लेकिन नदी मुखज भूमि नहीं पायी है।

©KTBS Not to be republished

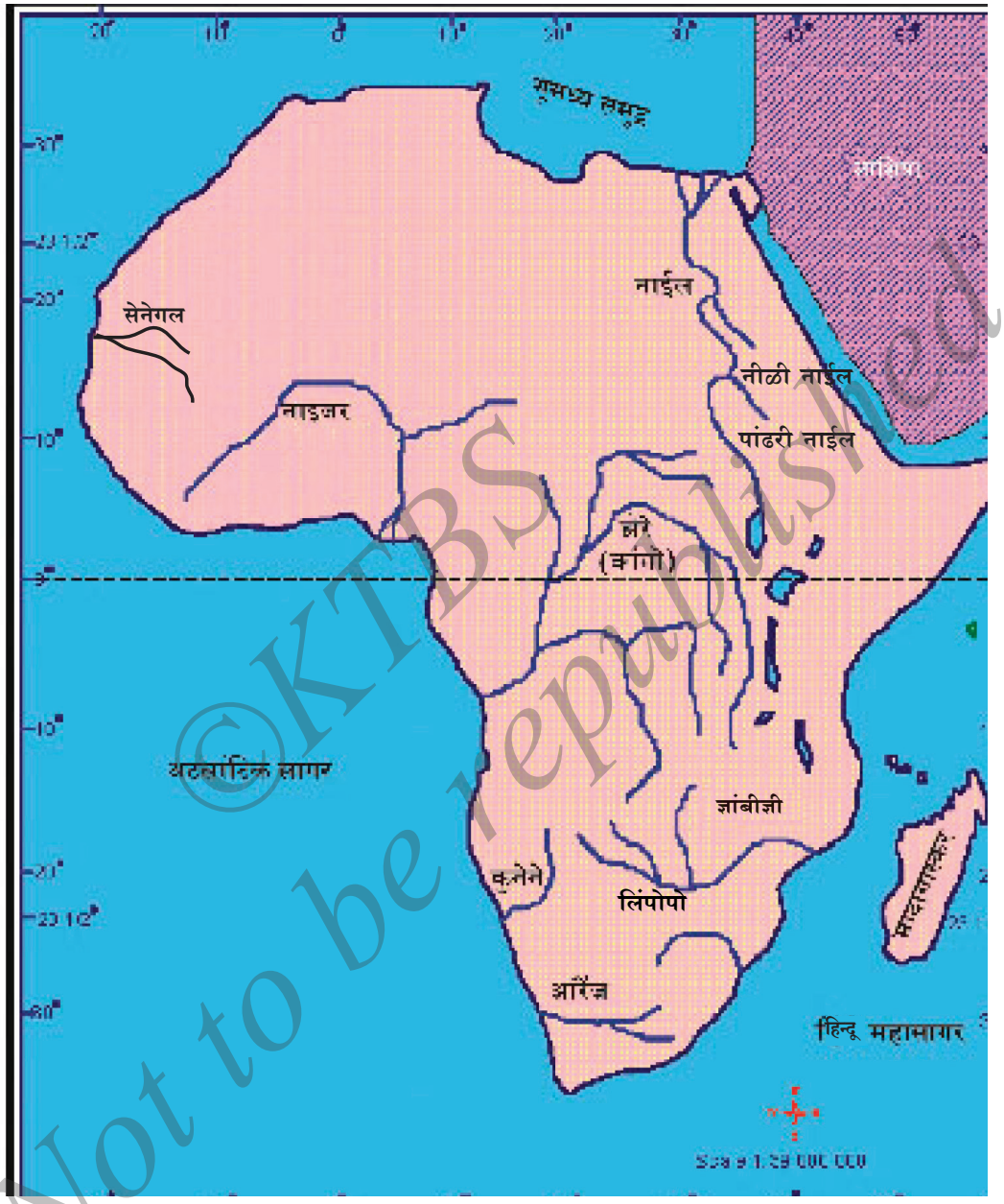

अफ्रिका की नदियाँ

नैजर नदी : यह आफ्रिका की तीसरी लंबी नदी है। यह नदी पश्चिम तटवर्ती के ऊँचे भाग में गम होती है। यह भी अटलांटिक महासागर से जुड़ती है। यह वर्षभर भरकर बहनेवाली नदी नहीं है। इस नदी की लंबाई 400 कि.मी. है।

©KTBS Not to be republished

जांबेजी नदी : यह आफ्रिका की चौथी प्रमुख नदी है। यह आफ्रिका के दक्षिण भाग की महत्वपूर्ण नदी है। यह केंद्र आफ्रिका में उगम होकर अस्नेय की ओर बहती है । हिन्द् महासागर से मिलती है । यह अपने पात्र के लंबाई में अधिक त्वरित प्रवाह तथाट जलपातों का निर्माण की है। उनमें अत्यंत विशिष्ट है विक्टोरिया जलपात। यह नदी अनेक गहरे कंदकों के जरिए बहती है। उनमें 'करीबकंदर' प्रसिद्ध है। इस नदी की लंबाई 3500 कि.मी है।

विक्टोरिया जलपात

सेनेगल नदी : यह गिनिया घौटा जाल्लौन प्रस्थभूमि में उगम होती है। बाद में वायव्य की ओर लगभग 1640 कि.मी. बहकर, अंत में अट्लांटिक सागर से मिलती है। मारिरानिया तथा सेनेगल प्रात्यों के बीच सीमा बनकर बहती है ।

4. वायुगुण, स्वाभाविक सस्यवर्ग तथा प्राणि संपत्ति

वायुगुण : अत्यंत लंबी तथा चौड़ी आफ्रिका खंड को उत्तरार्ध गोल तथा दक्षिणार्धगोल में विस्तृत हुई है ।

इस तरह इसे केंद्रस्थान भूखंड से जाना जाता है। इस भूखंड के मध्यभाग में समभाजक वृत्त होकर जाने से सूर्य की किरणें लंब होकर प्रसरित होते हैं। इसलिए इस खंड में उष्णवलय का वायुगुण है। साथ ही और भी अनेक अंश आफ्रिका के वायुगुण पर प्रभाव डालते हैं ।

उदा : ऊँचे पर्वत यहाँ रहने से सागर के प्रवाह, पूर्व-पश्चिम में अधिक विस्तार तथा सन्निवेश हैं। सहारा के पश्चिम के तट में लंबाई तक बहनेवाला (केनरी प्रवाह) तथा कलहरि के पश्चिम तटवर्ती में मिलकर बहनेवाला शीतसागर (बंगल्व-प्रवाह) प्रवाह तटवर्ती की खाई प्रदेशों में मिले हुए भागों का उष्णांश कम करते हैं। ये दोनों शीत प्रवाह रहने से अधिक शीतलता नहीं ला सकते। लेकिन अग्नेय तटवर्ती से मिलकर (जुड़कर) बहनेवाला मोसांबिक उष्णसागर का प्रवाह अधिक शीतकाल लाने से बारीश बरसता है।

©KTBS Not to be republished

ऊँचे पर्वत न रहने से तथा वायुगण के अन्य विभाजकों की कमी यहाँ उष्णवलय के वायु से मुक्त चलन के लिए अवकाश करता है। इसलिए वायुगुण में परिवर्तन धीरे से चलता है।

आफ्रिका के वायुगुणपर वर्षा का बँटवारा महत्वपूर्ण पात्र है। समभाजक वृत्ते के समीप वर्षा अधिक होती है। इस प्रदेश में वार्षिक अंदाज वर्षा 200 से. मी. होती है तथा समभाजक वृत्त से जाने पर कम होती है। सहारा, कलहरी तथा नमेबिया प्रदेशों में वर्षा केवल 15 से.मी होती है। फिर भी क्यामरून, आफ्रिका का अत्यंत शीत प्रदेश होने से 1016 से.मी वार्षिक अंदाज वर्षा पाता है।

वायुगुण के परिस्थिति के आधार पर आफ्रिका खंड को निम्नलिखित 8 क्षेत्रों में विभाजन किया गया है ।

1. समभाजक वृत्त का शीत प्रदेश
2. सवन्न नमूना प्रदेश
3. उष्णवलय की मरुभूमि प्रदेश
4. मेडिटेरियन प्रदेश
5. समशीतोष्ण घांसित्व प्रदेश
6. ऊँचे प्रदेश
7. अर्ध्र उप-उष्णवलय
8. शुष्क शीतकाल उपउष्णवलय

1. समभाजक वृत्त के आर्द्र प्रदेश : यह समाजक वृत्त के दोनों तरफ फैले गड्ढ़े के प्रदेश तथा कांगो मैदान से गिनी प्रदेश तक विस्तृत है । यहाँ का वायुगुण वर्ष भर अतिशाख तथा वर्षायुक्त रहता है । यहाँ हमेशा दुपहर को वर्षा होती है । वह परिसरण रीति की वर्षा होती है । अतिशाख और आर्द्र परिस्थि का यह वायुगुण हितकारी नहीं होता । ह

2. समन्वय नमूना वायुगुण : यह सोमालिया, इथियोपिया, सुडान, चाड तथा नैजर प्रांत्य के भाग से आवृत्त है। इस नमूने का वायुगुण अधिकतया सुडान में दिखाई देता है । इस तरह इसे 'सुडान नमूना वायुगुण' भी कहा जाता है। यहाँ उष्णांश अधिक रहता है। वह खाई प्रदेश से भी पूर्वभाग के ऊँचे प्रदेश में कम, ग्रीष्म में अधिक वर्षा से होती है।

©KTBS Not to be republished

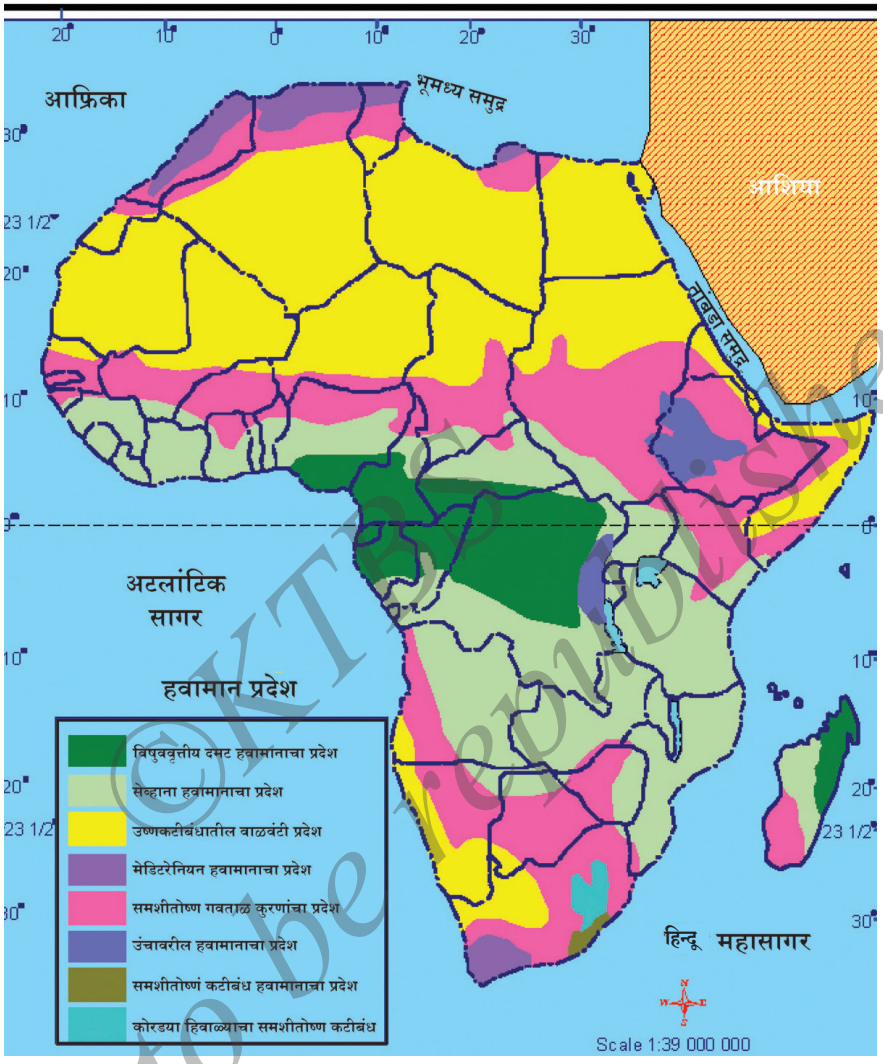

वायुगुण के प्रदेश

3. उष्णवलय के मरुभूमि प्रदेश : आफ्रिका खंड के उत्तर भाग तथा दक्षिण भागों में मरुभूमि है। इस प्रदेश में ग्रीष्म अति उष्ण हो तो शीतकाल ठंडा रहता है। ग्रीष्म तथा शीतकाल से भी दिन तथा रात्री के उष्णांश में अधिक व्यत्यांस रहता है। बारीश बहुत कम होती है। बादलों की रचना ... है।

4. मेडिटरयिन वायुगुण प्रदेश : आफ्रिका खंड के उत्तरीय तटवर्ती प्रदेश तथा दक्षिण के किनारे भागों में ऐसे वायुगुण दिखाई देते हैं। इस प्रदेश में मोराको, उत्तर अल्जेरिया तथा केप प्रांत जुड़े हुए हैं। अति उष्ण तथा शुष्क ग्रीष्म तथा शीत और

©KTB Not to be republished

वर्षा होने शीतकाल इस वायुगुण के मुख्यलक्षण है। यही एक शीतकाल में वर्षा पाने का वायुगुण प्रदेश है।

5. समशीतोष्ण घांसिला प्रदेश : इसे उन्नत वेल्ड प्रदेश भी कहा गया है। डय् भाषा में वेल्ड (तशश्रर्वीी) अर्थ 'क्षेत्र' होता है। यह वायुगण प्रदेश दक्षिण आफ्रिका के आंतरिक प्रदेश में दिखाई देता है। यह समुद्र तट से दूर रहता है। इससे शीतकाल तथा ग्रीष्मकाल के उष्णांश के प्रमाण में अधिक अंतर रहता है। ग्रीष्म में तापमान अधिक तथा शीतकाल ठंडा रहता है। इन दोनों में वर्षा का प्रमाण कम होता है।

6. ऊँचे वायुगुण प्रदेश : यह इथोपिया का ऊँचाई भाग तथा पूर्व आफ्रिका का भाग भी मिला है। समुद्र सतह से भी अधिक ऊँचा इस प्रदेश में शीतल वायुगुण रहता है। वर्षा का बँटवारा कम (विरल) तथा वह ग्रीष्म में ही होती है।

7. आर्द्र-उपउष्णवलय वायुगण प्रदेश : यह प्रदेश ड्रेकन्सबर्ग पर्वत भाग तथा मडगास्कर द्वीप से युक्त पूर्व तटवर्ती तक फैला है। यहाँ के वायुगुण में ग्रीष्म अधिक उष्ण तथा वर्षा से भी तता शीतकाल ठंडा तथा शुष्कता से बसा है।

8. शुष्क शीतकाल का उप-उष्णवलय: यह आफ्रिका का आग्नेय भाग से युक्त है। अति शाख तथा वर्षा होने के ग्रीष्म तथा सौम्य और शुष्क शीतकाल इस वायुगुण के लक्षण हैं। समभाजक वृत्त प्रदेश का शीत वायुगुण वलय की तरह वर्षा का बँटवारा यहाँ तक दिखाई देता है। लेकिन ऊँचे तथा घने बर्फ से उष्णांश के बंटवारे में परिवर्तन होता है ।

स्वाभाविक सस्यवर्ग :

आफ्रिका के स्वाभाविक सस्यवर्ग में विविधता है। क्योंकि सस्यवर्ग तथा प्राणिवर्ग पर वायुगुण, मिट्टी, उपरीलक्षण तथा मानव के प्रदेशों के परस्पर पूरक प्रभाव-सीधा दिखाई देता है। इस खंड के अधिकांश भागों में सस्यवर्ग का स्वरूप मानव कृत्य से बदल गया है । ज्यादातर अरण्य तथा घांसिले विविध उद्देश्य के लिए करा हुआ है तथा जलाया गया है । इस तरह आफ्रिका खंड के प्रस्तुत सस्यवर्ग में सबकुछ 'स्वाभाविक नहीं'।

©KTBS Not to be republished

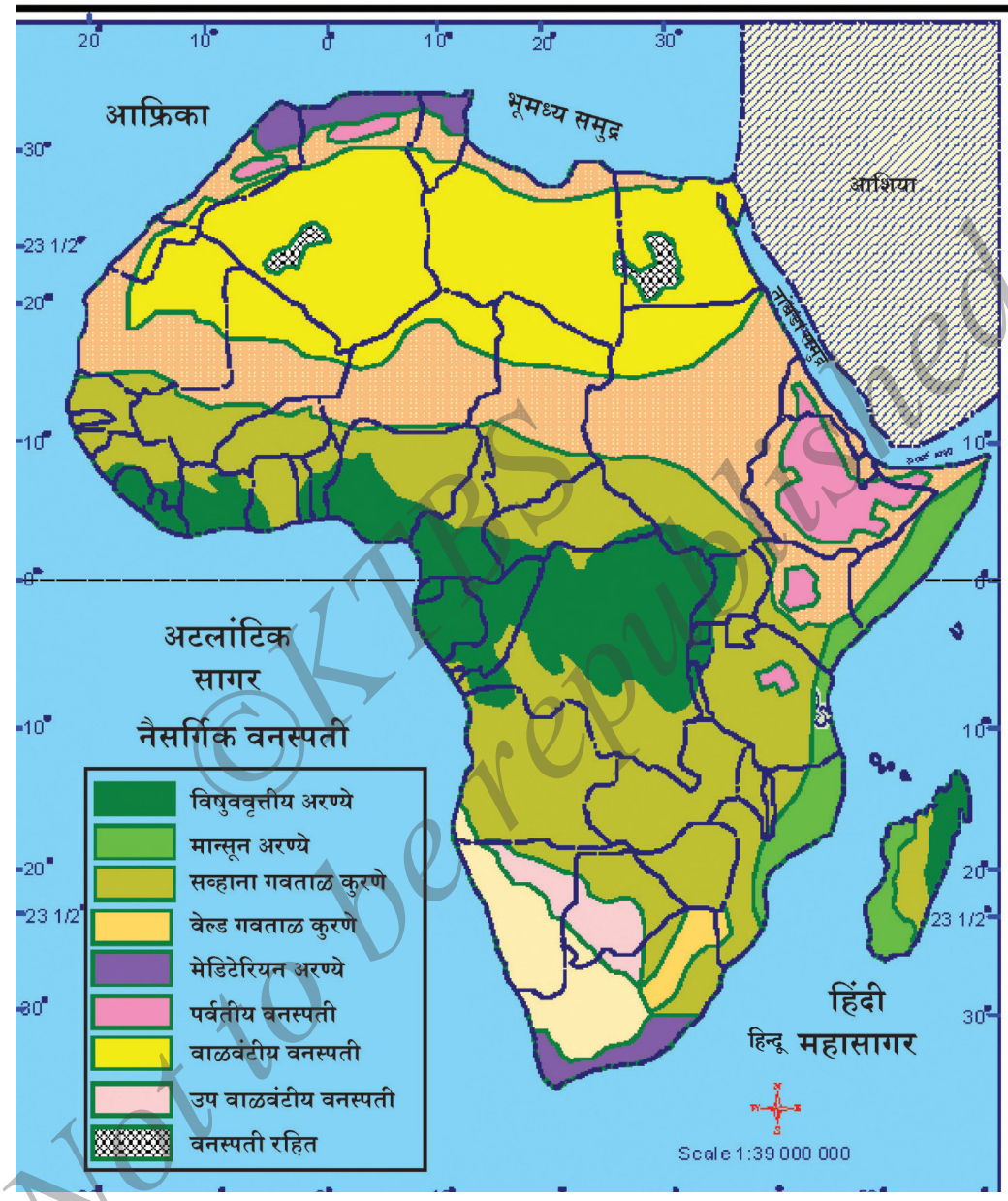

स्वाभाविक सस्यवर्ग

समभाजक वृत्त का अति उष्ण तथा अर्ध्रभरित वायुगुण वहाँ घना जंगल बढने जैसा किया गया है। पेड़ ऊँचे फलते हैं। समभाजक वृत्त के हमेशा हरे रहे जंगल अरण्यों (जंगलों) के लक्षण है - वे चौड़े पत्ते पाये हैं तथा अधुसस्य (अधिसस्य) गुण पाये हैं ।

©KTRS Not to be republished

विशेषलक्षण युक्त प्रभेद के पेड़ यहाँ अधिक मात्रा में हैं। फिर भी उष्णवलय के कीमती मजबूत पेड़ खर, बीटी, एबोनी, सिंकोन, सागवान, ताल, कालापेड आदि फलते हैं । 'मंग्रोव सस्य भी समुद्र के गहराई समुद्र के जुताई योग्य प्रदेश में फलते हैं ।

हमेशा हरे रहे समभाजक वृत्त के जंगलों से उत्तर तथा दक्षिण भागों में जाली तथा बेअब्याब (इरेलरल) पेड़ों से आवृत्त सवन्ना जंगल हैं। वर्षा कम होने के प्रदेश में सवन्ना जंगल काँटों की झाड़ी तथा हरियाली को रास्ता बनाते हैं।

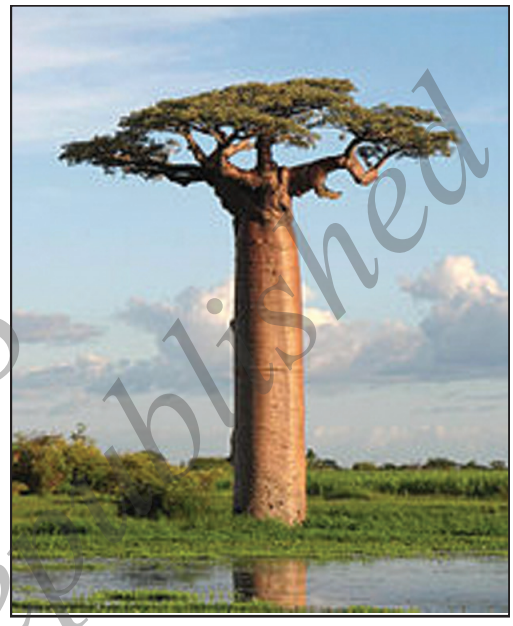

बेअब्याब पेड़

कांटों की झाड़ियों तथा पैन, जुनिपर, कार्क, सिडार, फिग् तथा आलिव पेड मेडिटरेनियन वायुगुण रहे प्रदेश में दिखाई देते हैं ।

प्रस्थभूमियों के ऊँचे भागों में पर्वत सस्यवर्ग तथा सहर और कलहरी भागों में मरुभूमि सस्यवर्ग है।

दक्षिण आफ्रिका का कर्रू भाग में प्रसिद्ध कुकुचल सस्यवर्ग नैलनदी मैदान में 'सड्' नामक विशेष सस्यवर्ग है।.

प्राणिसंपत्ति

आफ्रिका के प्राणि संपत्ति में बहुत ही विविधता है। यहाँ के वायुगुण की परिस्थिति, ऊपरी लक्षण, जंगल, मिट्टी के प्रकार तथा एशिया और यूरोप खंडों के संपर्क इस तरह की प्राणि विविधता के कारण हैं। वर्षा, जंगल प्रदेश अधिक प्राणियों का वासस्थल हैं। चिंपाजी, अनेक तरह के बंदर, गोरिल्ला, जंगली भैंसे, हिरन तथा खूर रहे प्राणि यहाँ दिखाई देते हैं।

मगरमच्छ तथा गेंडा नदियाँ तथा जलावृत्त जुताई योग्य प्रदेशों में दिखाई देंगे तो आकर्षक विविध रंगीन पक्षी यहाँ सामान्यतया दिखाई देते हैं। उदा -उष्ट्रपक्षी, गरुडपक्षी, खद्योग आदि।.

©KTBS Not to be republished

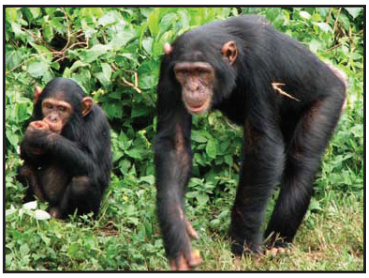
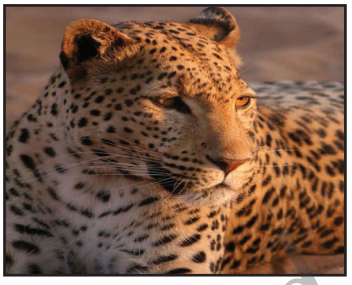

प्रमुख वन्यजीव

जीब्रा, जंगली बिल्ली, जिराफ़, गेंडामृग, हाथी, इंपाल, चीता तथा आफ्रिका सिंह उष्णवलय के घांसिला तथा सवन्ना प्रदेशों में दिखाई देते हैं।

मरुभूमि प्रदेश में बिच्छू, ऊँट, चिपकली, मरुभूमि सियार अनेक तरह के कीट दिखाई देते हैं। इसके साथ ही हिरन जाति से संबंधित सुंदर प्राणि गधा, घोड़ा तथा बारासिंगा (अववर्शी) दिखाई देते हैं।

Not to be republished

इंपाल व अड्डाक्ष

ऊँट अधिक महत्वपूर्ण तथा सबसे परिचित मरुभूमि का प्राणि है। यह कुछ समय मरुभूमि के जहाज कहलाते हैं ।

उष्ट्रपक्षि

यह आफ्रिका का मूल निवासी होते हुए कलहरी मरुभूमि तथा आफ्रिका के दक्षिण मैदान में दिखाई देता है। यह संसार में ही जीवित रहा सबसे बड़ा पक्षी है। संसार में ही सबसे बड़े गात्र का अंडा देता है। यह उड़ नहीं पाता। लेकिन अत्यंत तेजी से दौड़नेवाला पक्षी है तथा अपने पैरों को दो अंगुलियाँ हुआ संसार का एकैक पक्षी है ।

उष्ट्रपक्षी

5. व्यवसाय तथा उद्यम

आफ्रिका के अधिकांश देशों में व्यवसाय (कृषि) अधिक महत्वपूर्ण लोगों की आर्थिक क्रियाकलाप है। लगभग 75 प्रतिशत से भी अधिक लोग व्यवसाय में जड़े रहते हैं।

समभाजक वृत्त के प्रदेश के बजाय आफ्रिका के अधिकांश देशों में कृषि ही

©KTBS Not to be republished

जीवनाधार व्यवसाय है। आधुनिक आवक रासायनिक खाद तथा कीटनाशकों का उपयोग बहुत कम करते हैं। अनेक ओर कृषि मानव परिश्रम से चलता है। हर हेक्टेर फसल भी एकदम कम निकलती है।

अधिकतया व्यवसाय प्रदेश में आहार धान्य फसलें महत्वपूर्ण स्थान पाये हैं। मकई, धान, मीटा आलू तथा कंदमूल, मूँगफली, बटाना तथा आटे की फसलें प्रथम फसलों का नमूना है। समभाजक वृत्त के वलय का वायुगुण युक्त प्रदेश में हाथ बगीचा व्यवसाय प्रमुख है । बुरुंडी प्रदेश निर्यात के लिये कॉफी फसल को, कोको फसल कोटे-डी-ओरे तथा धान में भी तथा बटाने जैसे दालदाना ग्यांबिया देश में उपजाया जाता है। आफ्रिका में उपजानेवाले अन्य फसलें हैं - ईख, केला, चाय, तालतेल फसल तथा नींबू जलि के फल। ये सब बड़े इस्टेटों में तथा सिंचाई के व्यवसायों में उपजाया जाता है।

सेनेगल, मारिटानिया, माली, नैजर, चाड, उत्तर सूडान, इथियोपिया तथा सोमालिया देश (डरहशश्र) अधिकतया सूखे के शिकार बनते हैं तथा वहाँ के लोग भूख से तड़पते हैं ।

आफ्रिका विविध जाति के फलों के लिए प्रसिद्ध है। मेडिटेरियन प्रदेश में नींबू की नस्ल के फल आलीव, नींबू, नारंगी अंगूर सामान्य हैं। पूर्व आफ्रिका में काजु उपजते हैं। जांजिबार द्वीप तथा टांजनिया लवंग फसल के लिए प्रसिद्धी पाये हैं ।

• यहाँ मकई अधिक महत्व पायी है। थोड़े से प्रदेश में धान तथा ईख की फसलें उपजाते हैं। वाणिज्य फसलें काफ़ी, साल, मूँगफली को मध्यपूर्व तथा आफ्रिका के अन्य भागों में उपजाते हैं। काफी इथोपिया में हजारों वर्षो से उपजाते आये हैं। ईजिप्ट देश सूत (कपास) फसल के लिए सिद्ध है।

• यूरोपियन बसे हुए कीन्या, दक्षिण आफ्रिका तथा जिंबाब्बे में गौपालन मुख्य उद्योग है। संसार के 15 प्रतिशत गौ आफ्रिका में ही हैं।

• व्यवसाय में पिछड़ने के कारण : आफ्रिका में व्यवसाय पिछड़ने के लिए - पुरानी कृषि पद्धति, जीवनोपाय व्यवसाय की पद्धति, पुराने कृषि उपकरणों का उपयोग, अनक्षरता, जनजाति पद्धति, पूंजी तथा विदेशी पूँजी के निवेश में कमी आदि कारण हैं।

©KTBS Not to be republished

• उद्यमों का धीरे से विकास के कारण : आफ्रिका के अनेक देश पानी, जंगल तथा खनिज संपत्ति में अमीर हैं। यह नैसर्गिक संपत्ति समान रूप से बंटवारा नहीं हुआ है। यहाँ के अधिकांश देशों की आर्थिकता व्यवसाय पर अवलंबित गुणलक्षण पाया हैं ।

• पिछली सदी के मध्यकाल तक आफ्रिका की नैसर्गिक संपत्ति यूरोपियन से लूट का शिकार बनती रही। यहाँ वहाँ की औद्योगिकता धीमे चलने का कारणीभूत रही। इससे औद्योगिकरण के लिए आवश्यक मूलभूत सुविधाओं की कमी, कम पूँजी, तंत्रज्ञान की कमी, अनुभवी कर्मचारियों की कमी, कम खरीदने की शक्ति तथा राजकीय दुविधाएँ आफ्रिका देशों में औद्योगिक विकास में बाधाओं के कारण हैं ।

• बीते हुए कुछ दशकों में औद्योगिकरण के अधीन आनेवाले देश हैं - जिंबाब्बे, नैजेरिया, इजिप्ट, अल्जीरिया तथा दक्षिण आफ्रिका। स्वतंत्रता के बाद अधिकांश आफ्रिका के देश छोटे औद्योगिक विकास में उत्साह बताये हैं। कपड़ा उद्यम, औषध तथा आहार संस्करण और पानीय उद्यम अमल में आ रहे हैं ।

• बृहत उद्यम लोहा तथा इस्पात, रबर, सिमेंट तथा पेट्रोरासायनिक दक्षिण आफ्रिका में केंद्रीकृत हो रहे हैं। अल्जेरिया, टुनिसिया, ईजिप्ट तथा जिंबाब्बे देशों में लोहा तथा इस्पात के उद्यम बंटे हैं। आफ्रिका के अन्य प्रमुख उद्यम हैं - विद्युतयंत्र, परिवहन उपकरण, ट्राक्टर निर्माण तथा युद्ध उपयोगी विमान का जोड़ना ।

6. कीमती खनिज

हीरा तथा सोना : आफ्रिका खंड में अधिक मात्रा में खनिज संपत्ति पाया है। लेकिन कीमती खनिज हीरा, सोना तथा प्लाटिनम् का अधिक उत्पादन करते हैं ।

हीरा (वज्र) : संसार के कुल हीरों के निक्षेप में 80 प्रतिशत भाग आफ्रिका एक में ही दिखाई देते हैं । जैरे तथा दक्षिण आफ्रिका अत्यधिक वज्र उत्पादन के देश हैं। वज्र को कंकर वज्र तथा औद्योगिक वज्र की तरह विभाजन किया गया है। अन्य प्रदेश हैं किंबर्ली, प्रिटोरिया औद्योगिक वज्र मुख्यतया घिसनेवाला कागज तथा काँच काटने के उपकरण बनाने में उपयोग किया जाता है।

©KSBS Not to be republished

सोना : संसार का आधाभाग सोने के निक्षेप दक्षिण आफ्रिका में ही दिखाई देते हैं। सोना बंटवारे के मुख्यस्थान हैं, विट्वाटर्सरैंड (ट्रान्सवाल) तथा आरेंज फ्री स्टेट राज्य हैं।

इस खंड के कुल सोने के उत्पादन 50 प्रतिशत से भी अधिक भाग दक्षिण आफ्रिका, जिंबाब्बे तता कांगो गणतंत्र से पहुँचाया जाता है ।

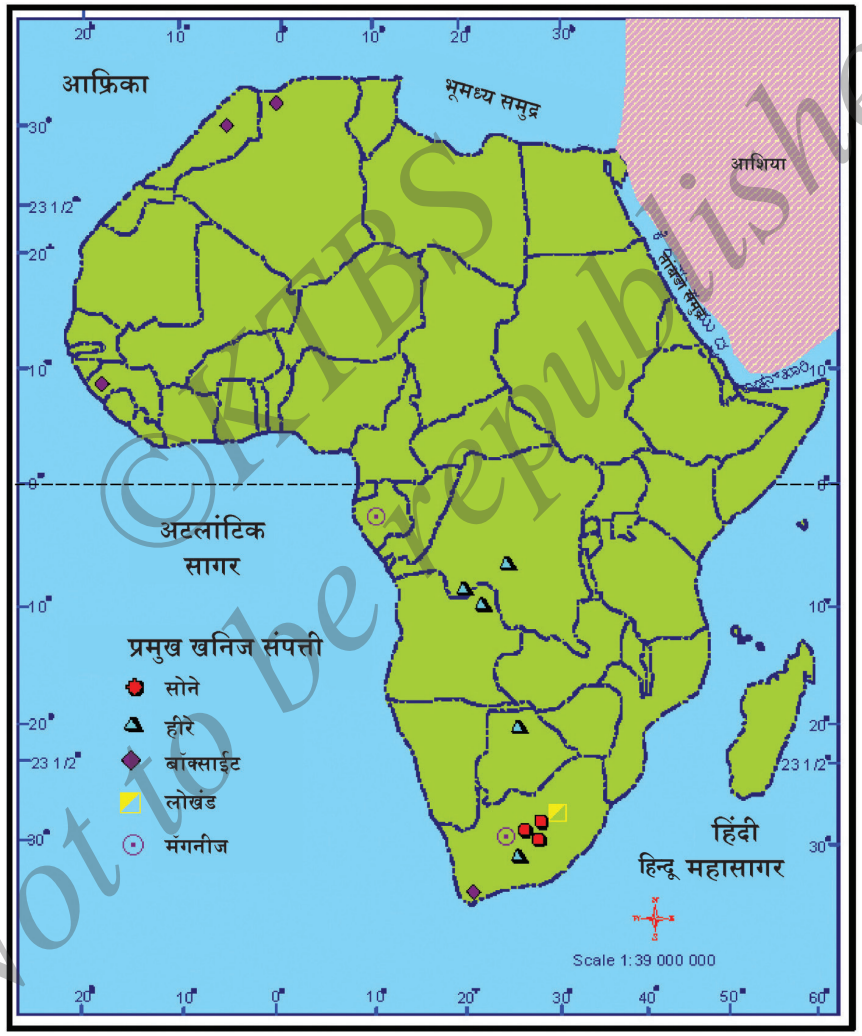

प्रमुख खनिजे

©KTBS Not to be republished

7. जनसंख्या का विकास, बंटवारा तथा सांद्रता

संसार में सर्वप्रथम मानव दिखाई दिया तथा उपकरणों का उपयोग करना आफ्रिका में सीखा है यह माना गया है। मानवशास्त्रज्ञ तथा वैज्ञानिकों विचारों से होमोसेपियन आफ्रिका का कीन्या तथा इथियोपिया में पूर्व सरोवर के पास दिखाई देने का माना जाता है।

मुख्यतया नीग्रो तथा उनके मूल निवासियों के झुंडों से बने हैं। अब आफ्रिका विविध वंश तथा मतधर्मों को पाया है। इस खंड में विविध लोग, भाषा तथा संस्कृतियों का मिलन हुआ है।

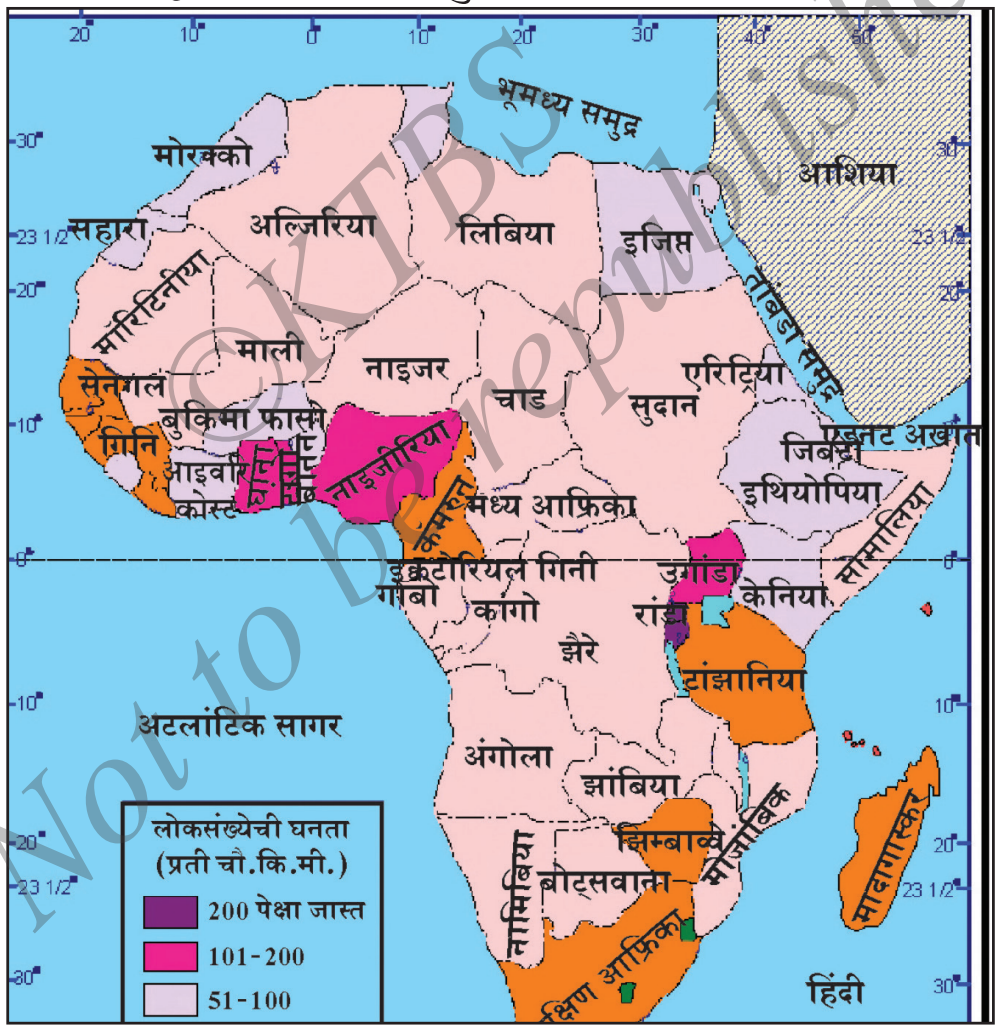

जनसंख्या का बंटवारा

©KTBS Not to be republished

कुछ देश जैसे सोमालिया, इथियोपिया, चाड्, नैजीरिया, माली में जीवितावधि बहुत कम है अर्थात् केवल 50 वर्ष का ।

विशेष विषय यह है कि असमानता से जनसंख्या का बंटवारा । अत्यधिक जनसंख्या आफ्रिका के गिनिय तटवर्ति प्रदेश, नैल नदी का खाई प्रदेश, पूर्व आफ्रिका का उत्तर प्रदेश और मडगास्कर तथा उत्तर के तटवर्ती दक्षिण आफ्रिका, जिंबाब्बे तथा जैरे नगर और खान प्रदेश में भरी है।

कम जनसांद्रता मरुभूमि, पर्वत प्रदेश तथा समभाजक वृत्त के अभयारण्य भागों में दिखाई देता है। लिबिया का सहारा तथा अल्जीरिया में कम जनसांद्रत है। यहाँ की जनसांद्रता हर च. कि. मी. के लिए 15 जन है।

आफ्रिका के लोगों को चार भागों में विभाजन कर सकते हैं

1) पिग्मी, बुशमेन तथा मसाई ये सहारा मरुभूमि के दक्षिण भग में निवास करते हैं ।

2) अरब, उत्तर आफ्रिका में निवास करते हैं।

3) इंडियन : दक्षिण तथा पूर्व आफ्रिक में निवास करते हैं।

4) यूरोपियन, दक्षिण आफ्रिका में तथा अन्य उपजाऊ नदी मैदानों में निवास करते हैं।.

नये शब्द

पर्याय द्वीप, खाड़ी, मरुभूमि, फटी कंदर, सरोवर, जीवितावधि, जनसांद्रता, प्रधान रेखांश, भूखंड, कर्मवृत्त, मकरवृत्त, सवन्ना ।

©KTBS Not to be republished

जानो

- नैल नदी का लंबाई का भाग सहारा मरुभूमि में बहती है फिर भी वह कभी भी नहीं सूखती। इसे नैल नदी के जलानयन प्रदेश में अधिक वर्षा होने का ही प्रमुख कारण है ।
- सहारा मरुभूमि आफ्रिका के उत्तर भाग से आवृत्त संसार में ही सबसे बड़ी मरुभूमि है।
- लिबिया के अजिजिया में संसार में सबसे अधिक उष्णांश 50 सेल्सियस दाखिल होता है।
- बारासिंगा नामक प्राणि 3 लंबे मुदडे हुए सिंगों का हिरन है। यह पानी नहीं पीता बदले में आवश्यक पानी वह खाने के घांस तथा सस्यों से पाता है।
- आफ्रिका में बेअब्याब नाम का पेड़ है। यह बोतल के आकार का होते हुए इसका कांड पानी का संग्रह कर लेने उभरा होता है। यह 1000 से 12000 लीटर पानी संग्रहकर लेता है। पानी की आवश्यकता के संचारी कुछ समय इस पेड़ के पानी का उपयोग कर लेते हैं ।
- संसार का 24 प्रतिशत भाग काफी का उत्पादन आफ्रिका से होता है।
- संसार का 50 प्रतिशत भाग से अधिक आफ्रिका मात्र कोको का उत्पादन करता है।
- पिग्मी संसार में ही सबसे अधिक नाटे लोग हैं। वे कांगो कंदर में निवास करते हैं।
- आफ्रिका खंड के लोग अधिक उपजाऊ शक्ति पाये हैं। लेकिन उनकी निरीक्षा उम्र कम है।
- आफ्रिका खंड में 800 से अधिक भाषाएँ वोलनेवाले हैं ।
- आफ्रिका में ग्रामीण जनसंख्या अधिक होते हुए कम नगरीकरण का खंड है ।
- कलहरि मरुभूमि दक्षिण आफ्रिका में है। यहाँ बुमे लोग वास करते हैं ।

©KTBS Not to be republished

समूह में चर्चा करके उत्तर दो ।

1. आफ्रिका को अंधकार का खंड क्यों कहा जा रहा है?
2. आफ्रिका को केंद्रीय भूखंड कहते हैं । क्यों ?
3. भूकंठ किसे कहते हैं? आफ्रिका का भूकंठ कौन सा है?
4. आफ्रिका का खाई प्रदेश का नाम बताओ ।
5. आफ्रिका का अत्यंत ऊँचा पर्वत शिबिर कौन सा है?
6. आफ्रिका खंड के विविध सस्यवर्ग बताओ ।
7. आफ्रिका की अत्यंत लंबी नदी कौन सी है?
8. आफ्रिका के प्रमुख आहार फसलें कौन सी है?
9. वज्र निक्षेप दिखाई देनेवाले आफ्रिका के देश कौन से हैं?

क्रियाकलाप :

1. आफ्रिका खंड के फटी कंदर में आनेवाले प्रमुख सरोवरों को मानचित्र में पहचानो ।
2. आफ्रिका की प्रमुख नदियाँ तथा पर्वतों को पहचानो ।
3. कर्नाटक में बेअब्याब् (बोतल के आकार का) वृक्ष के चित्र का संग्रह करो ।
4. आफ्रिका का बारासिंगा तथा हमारे भारतीय हिरन से तुलना कर लिखो ।

* * * * *

©KTBS Not to be republished